इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में
श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को
मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

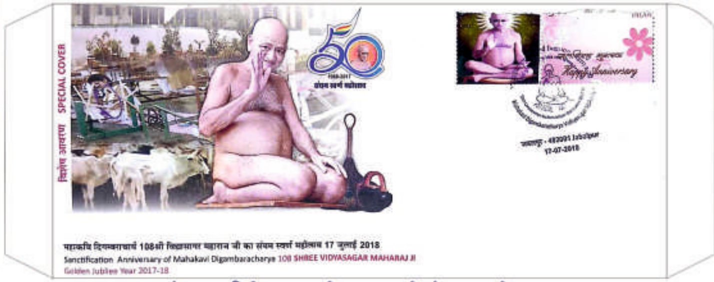


संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

| दि. | वार | तिथि | नक्षत्र |
|---|---|---|---|
| | | **नवम्बर 2024** | |
| 16 | शनिवार | प्रतिपदा | कृत्तिका |
| 17 | रविवार | द्वितीया | रोहिणी |
| 18 | सोमवार | तृतीया | मृगशिरा |
| 19 | मंगलवार | चतुर्थी | आर्द्रा |
| 20 | बुधवार | पंचमी | पुनर्वसु |
| 21 | गुरुवार | षष्ठी | पुष्य |
| 22 | शुक्रवार | सप्तमी | आश्लेषा |
| 23 | शनिवार | अष्टमी | मघा |
| 24 | रविवार | नवमी | पूर्वाफाल्गुनी |
| 25 | सोमवार | दशमी | उत्तराफाल्गुनी |
| 26 | मंगलवार | एकादशी | हस्त |
| 27 | बुधवार | द्वादशी | चित्रा दिन-रात |
| 28 | गुरुवार | त्रयोदशी | चित्रा |
| 29 | शुक्रवार | त्रयोदशी | स्वाती |
| 30 | शनिवार | चतुर्दशी | विशाखा |
| | | **दिसम्बर 2024** | |
| 1 | रविवार | अमावस | अनुराधा |
| 2 | सोमवार | प्रतिपदा | ज्येष्ठा |
| 3 | मंगलवार | द्वितीया | मूल |
| 4 | बुधवार | तृतीया | पूर्वाषाढ |
| 5 | गुरुवार | चतुर्थी | उत्तराषाढ |
| 6 | शुक्रवार | पंचमी | श्रवण |
| 7 | शनिवार | षष्ठी | धनिष्ठा |
| 8 | रविवार | सप्तमी | शतभिषा |
| 9 | सोमवार | अष्टमी | पूर्वाभाद्रपद |
| 10 | मंगलवार | नवमी | उत्तराभाद्रपद |
| 11 | बुधवार | दशमी | रेवती |
| 12 | गुरुवार | एकादशी | अश्विनी |
| 13 | शुक्रवार | द्वादशी | भरणी कृत्तिका |
| 14 | शनिवार | त्रयोदशी-चतुर्दशी | रोहिणी |
| 15 | रविवार | पूर्णिमा | मृगशिरा |

## तीर्थंकर कल्याणक

25 नवम्बर: भगवान महावीर स्वामी जप कल्याणक
02 दिसम्बर: भगवान पुष्पदंत जन्म तप कल्याणक
10 दिसम्बर: भगवान अरनाथ तप कल्याणक
11 दिसम्बर: भगवान मल्लिनाथ जन्म तप कल्याणक
11 दिसम्बर: भगवान नमिनाथ ज्ञान कल्याणक
14 दिसम्बर: भगवान अरनाथ जन्म कल्याणक
15 दिसम्बर: भगवान संभवनाथ तप कल्याणक

## माह के प्रमुख व्रत

17 नवम्बर: रोहिणी व्रत
26 नवम्बर: मुक्तावली व्रत
04 दिसम्बर: मुक्तावली व्रत
14 दिसम्बर: रोहिणी व्रत

## सर्वार्थ सिद्धि

16 नवम्बर : 19/28 बजे से 30/31 बजे तक ।
18 नवम्बर : 06/32 बजे से 15/49 बजे तक ।
21 नवम्बर : 06/34 बजे से 15/35 बजे तक ।
24 नवम्बर : 22/16 बजे से 30/37 बजे तक ।
06 दिसम्बर: 06/44 बजे से 17/18 बजे तक ।
10 दिसम्बर: 06/47 बजे से 13/30 बजे तक ।
12 दिसम्बर: 06/48 बजे से 09/52 बजे तक ।
14 दिसम्बर: 06/50 बजे से 27/54 बजे तक ।

## शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः नवम्बर-17,18,21,25,27 दिसम्बर-11,12
मशीनरीप्रारंभ:नवम्बर-20,21,27 दिसम्बर-2,11,12
वाहन खरीदनेः नवम्बर-18,20,21,29 दिसम्बर-7,11,12

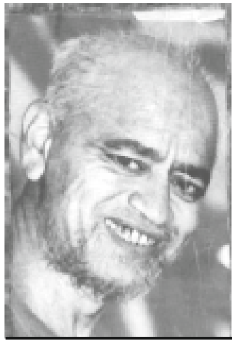

# संस्कार सागर


• वर्ष : 25 • अंक : 307 • नवम्बर 2024
• वीर नि.संवत 2550-51 • विक्रम सं. 2080 • शक सं. 1945


## लेख


• हेय आखिर कौन 08
• ध्यान योग की आवश्यकता 13
• गोमेद व अम्बिका की स्वतंत्र युग प्रतिमाएँ 18
• अंग प्रदर्शन अभिशाप क्यों 20
• श्रमण साधना में सहयोगी वनस्पतियाँ एवं औषधीय गुण 22
• मानव तस्करी दुनिया की सबसे बड़ी समस्या 27
• गोत्र विचार 29
• बहु उपयोगी पीपल का वृक्ष 46
• चाणक्यवार्ता का पठनीय अनूठा विशेषांक 49
• **वरिष्ठ नागरिकः** लोकप्रिय बने 57
• कैल्केरिया फ्लुओटिका तन मन स्वस्थ रखे हर दम 59


## बाल कहानी


• भंडा फोड साजिश का 62


## कविता


• हारे का सहारा 12
• धर्म ध्यान अपनाओ 16
• बिल्ली की व्यथा 21
• चन्द्रप्रभ स्तवन 26
• दीपावली का पर्व विशेष 56


## कहानी


• नई साड़ी 51


## नियमित स्तंभ


**पाती पाठकों की** : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 17
चलो देखें यात्रा : 35 • आगम दर्शन :36 • माथा पच्ची : 37 • पुराण प्रेरणा : 38
• कैरियर गाइड : 39 • दुनिया भर की बातें : 40 • इसे भी जानिये: 44
•दिशा बोध : 45• हमारे गौरव : 55 • वरिष्ठ नागरिक : 57 • हास्य तरंग-पाककला : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64


## प्रतियोगिताएं


: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य

**एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज**

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-9425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर -9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढ़ूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ,इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का

**बाकी सदस्यता शुल्क**

जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

**सदस्यता शुल्क**

| | | |
|---|---|---|
| -आजीवन | : 2100/- | (15 वर्ष) |
| -संरक्षक | : 5001/- | (सदैव) |
| -परम सम्मानीय | : 11000/- | (सदैव) |
| -परम संरक्षक | : 15001/- | (सदैव) |

**अपने शहर के**

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया -**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक -**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

•आईसीआईसीआय बैंक
**श्री दिगम्बर जैन युवक संघ**
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

**कार्यालय -संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर -10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।





## पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, रूस और यूक्रेन के युद्ध पर विराम लगाने के लिये भारत ने अपनी भूमिका तय करने का निश्चय किया। रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुये कहा, यदि भारत यूक्रेन और रुस के बीच में मध्यस्थता करता है तो हम भारत के प्रस्ताव से सहमत हैं। इस आशय का समाचार जब मैंने अखबार में पढ़ा तब मुझे लगा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी में भारत की ख्याति बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी हैं भारत के महत्त्व को विश्व के बड़े-बड़े देश स्वीकार कर रहे हैं अब भारत किसी का पिछलाग्गु नहीं रहा है। और भारत के पीछे विश्व के अनेक देश चलने को तैयार हो गये हैं अतः हम कह सकते हैं कि भारत की शान और तिरंगे की आन अब विश्वव्यापी बन चुके हैं अतः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कोटिशः धन्यवाद के पात्र हैं।

**पं. विनोद कुमार रजवास, इंदौर**

• सम्पादक महोदय, संस्कार प्रवाह स्तंभ के अंतर्गत अग्रलेख पढ़ा **अहिंसा का अनादर क्यों** लेख की तीन विषय वस्तु अत्यंत गम्भीर और चिंतनीय हैं अहिंसा को शांति का अग्रदूत माना जा सकता है विश्वशांति की स्थापना में अहिंसा की भूमिका अत्यंत महत्त्व पूर्ण है। बापू की अहिंसा और महावीर की अहिंसा में थोड़ा अंतर अवश्य है। सत्ता पाने और सत्ता को बचाने के लिये सदैव युद्ध होते रहे हैं। युद्ध और हिंसा का संबंध चोली दामन का है। अब युद्ध टालने और हिंसा का बहिष्कार करना हर पक्ष के लिये जरुरी है लेख अत्यंत मार्मिक और चिंतनीय सुबोध शैली में होने से सामान्य जन के लिये ग्रहणीय है।

**इंजी. अभिषेक जैन, इंदौर**

• सम्पादक महोदय, विगत माह भारत के पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने **एक देश एक चुनाव** की रिर्पोट सरकार की केबिनेट को प्रस्तुत कर दी है। केन्द्र सरकार की केबिनेट ने भी उसे मंजूरी दे दी अब देखना यह है कि विपक्ष एक देश और एक चुनाव को इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे को सकारात्मक लेता है या नकारात्मक जबकि एक देश और एक चुनाव होने से भारत का बहुत सारे धन का अपव्यय होने से बचेगा तथा सुरक्षा बलों उनकी ड्यूटी में बहुत बडी राहत मिलेगी और जनता का भी बार-बार चुनाव से होने वाली परेशानियों से बचना संभव हो पायेगा किन्तु विपक्ष जनता की परेशानियों और देश को हानि से बचाने के लिये एक अच्छी भूमिका निभा सकता है लेकिन विपक्ष के द्वारा विरोध के लिये निषेध करना राष्ट्र के लिये हानिकारक होगा।

**मनोज जैन, साबरमति अहमदाबाद**

• सम्पादक महोदय, विगत अंक में **कल्लू चाय वाला** में अपने पुत्र से पिता परेशान हो जाता है कल्लु चाय वाला अपने पुत्र के मोह में उसे हर सुविधा देता है किन्तु पुत्र की मांगे निरन्तर अपने पैर फैलाती जाती हैं। कल्लु ने अपने पुत्र की बिगड़ती आदतों को कभी भी नियंत्रित करने की कोशिश नहीं की हर पिता अपने पुत्र को सबकुछ दे सकता है परन्तु संस्कार नहीं जबकि आवश्यकता संस्कार की है पैसे की नहीं यही मानदंड यदि समझा जाये तो माता-पिता के द्वारा दिया गया संस्कार एक बहुत बड़ी सम्पत्ति साबित होगा अतः प्रस्तुत कहानी से यह सीख लेना चाहिये कि हम अपनी औलाद को संस्कार देने की प्राथमिकता तय करें और अपनी औलाद को पतन के रास्ते से वापस लौटा लें। कहानी मार्मिक सरल और सुबोध भाषा में लिखी गई है। कहानी पठनीय और हर वर्ग के लिये चिन्तनीय है।

**कमल चौधरी, राहतगढ़**

# भक्ति तरंग

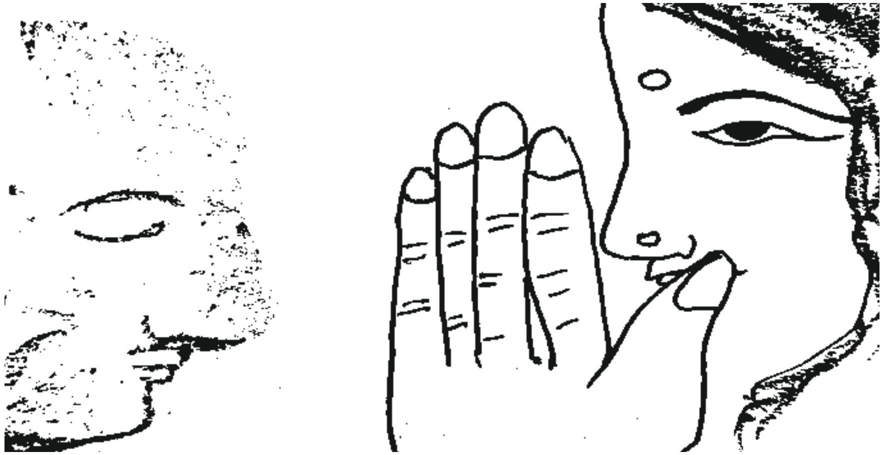

**प्रभु गुन गाय रे, यह औसर फेर न पाय रे ।। टेक ।।**
**मानुष भव जोग दुहेला, दुर्लभ सतसंगति मेला ।**
**सब बात भली बन आई, अरहन्त भजौ रे भाई ।।2।। प्रभु।।**
**पहले चित-चीर सँभारो, कामादिक मैल उतारो ।**
**फिर प्रीति फिटकरी दीजे, तब सुमरण रंग रंगीजे ।।2।। प्रभु।।**
**धन जोर भरा जो कुंबा, परवार बढ़ै क्या हुवा ।**
**हाथी चढ़ि क्या कर लीया, प्रभु नाम बिना धिक जीया।।3।। प्रभु।।**
**यह शिक्षा है व्यवहारी, निहचै की साधनहारी ।**
**भूधर पैड़ी पग धरिये, तब चढ़ने को चित करीये ।।4।। प्रभु ।।**

हे मनुष्य ! प्रभु के गुण गाओ। मनुष्य भव का यह जो अवसर मिला है यह फिर नहीं मिलेगा। इस मनुष्य भव का मिलना बड़ा दुर्लभ योग है और इसमें सत्संगति का मेल होना तो और भी दुर्लभ है। तुम्हें मनुष्य भव मिला, उत्तम संयोग व सत्संगति मिली, ये सब बातें अच्छी बन गई। अब तुम अरहंत के गुणों का चिंतवन करो, अरहंत का भजन करो।

हे भाई। सबसे पहले अपने चित्तरूपी कपड़े को संभारो, वश में करो, उस पर कामादिक विषयों के जो रंग चढ़ रहे हैं, विषयों की रूचि हो रही है, उसे दूर करो फिर श्रद्धा-भक्तिरूपी फिटकरी से समस्त मैल हटाकर (चित्तरूपी कपड़े को ) स्वच्छ कर अरहंत के गुण स्मरण के रंग से रंग दो, भिगो दो।

यदि धन से कुआँ भर गया, परिवार की वृद्धि हो गई तो उससे क्या प्राप्ति हुई ? प्रतिष्ठा मिली, हाथी पर चढ़ लिया तो क्या कर लिया ? प्रभु का स्मरण नहीं किया, उनका गुण-चिंतवन नहीं किया तो जीवन ही धिक्कार है, हेय है।

यह व्यवहारिक उपदेश है परन्तु निश्चय धर्म की साधना में सहायक है। भूधरदास कहते हैं कि निश्चय धर्म की ओर चढ़ने को जी करे तो इस पैड़ी पर पग धरिए अर्थात् इस व्यवहार का प्रभु गुणगान का पालन कीजिये।





संस्कार प्रवाह

# न धर्मो धार्मिकै विना

धर्म वस्तु का स्वभाव है दशलक्षण में धर्म स्वरूप निहित है। रत्नत्रय से संयुक्त धर्म सच्ची सुख और शांति का आधार बनता है। रत्नत्रय सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यज्ञ चारित्र की एकता का स्वरूप है इस रत्नत्रय को पाने के लिये हर साधक जीवन की अंतिम श्वास तक प्रयास करता है रत्नत्रय जहाँ मुनि का मार्ग है वहीं धर्म का आधार है रत्नत्रय को पाये बिना कोई भी धर्म की क्रिया सफल नहीं होती धर्म का सम्बन्ध आत्मा की अंतर परणति से होता है जिसके पास रत्नत्रय का अभाव होता है वह उच्च कुल का होने के बाद भी पूजनीयता की श्रेणी में नहीं आता है किन्तु शरीर की अशुचिता भी रत्नत्रय के प्रभाव से पवित्रता में बदल जाती है अतः हम यह कह सकते हैं कि रत्नत्रय अपावन शरीर को भी पावन रूप देने में सक्षम होता है।

रत्नत्रयधारी को जो जाति और पंथ के आधार पर संकीर्ण दृष्टि से देखते हैं वे धर्म को अपमानित अवश्य करते हैं क्योंकि धर्म धर्मी में ही होता है न तो धर्म मंदिर की दीवारों में है ओर न ही शास्त्रों के पृष्ठों पर धर्म तो चैतन्य परणति है अतः हम यह कह सकते हैं कि शरीर से जाति और पंथ का सम्बन्ध होता है किन्तु धर्म का सम्बंध आत्मा से होता है जिसने धर्म को प्राथमिकता दी है वे जाति और पंथ से ऊपर उठकर धर्म तीर्थ की रक्षा करने के लिये स्वप्रेरणा से आगे आते हैं।

समाज संगठन का आधार हमें धर्म को बनाना होगा और अपनी पहचान जैन के रूप में प्रस्तुत करना होगी ताकि आगामी जनगणना में जैनत्व की जन शक्ति हम प्रस्तुत कर सकें जाति, पंथ और गोत्र की पहचान को एक तरफ रखते हुये जैन धर्म की पहचान को अपनी पहचान बना सकें ताकि जैन धर्म एक प्राचीन धर्म होने के बाद भी जन संख्या के आधार पर अपनी पहचान न खो पाये अतः सभी जैन धर्म के मानने वालों को धर्म की सर्वोत्कृष्ठता दिखना चाहिये।

# पुण्य हेय है या पुण्य का फल हेय ?
# हेय आखिर कौन ?

**❊ ब्र. किरण जैन, वर्णी भवन मौराजी सागर ❊**

जीव की परणति तीन भांति वरणी, एक पुण्य एक पाप एक राग हरणी।

संसार रूपी रंग मंच पर प्रत्येक प्राणी अनादि काल से पाप-पुण्य के अभिनय करता चला आ रहा है, कभी पुण्य का अर्जन कर पुण्य के फल का भोग करता है और कभी पाप करके पाप के फल का भोग करता है ये पुण्य-पाप ही जीव को तीन लोक की यात्रा कराने में समर्थ होते हैं इन दोनों का कर्त्ता जीव स्वयं ही है, यह जीव जैसे ही शुभाशुभ कर्मों का बंध करता है ठीक उसी प्रकार फल भी प्राप्त होता है ये पुण्य-पाप रूप परिणाम संसार भ्रमण के बीज हैं।

तत्त्वार्थ सूत्र में आचार्य उमास्वामी ने 6 अध्याय में कहा है **शुभपुण्यस्याशुभः पापस्य** शुभ परिणाम है और अशुभ परिणाम पाप है। पंचास्तिकाय में आचार्य कुन्द कुन्द देव लिखते हैं कि दान पूजा आदि षट् आवश्यक रूप जीव के परिणाम भाव पुण्य हैं जीव दया आदि के परिणाम भी भाव पुण्य हैं और भाव पुण्य के निमित्त से होने वाले साता वेदनीय आदि शुभ प्रकृति रूप पुद्गल परमाणुओं का पिण्ड द्रव्य पुण्य है।

श्री नियमसार जी में आचार्य कुन्द कुन्द देव ने गाथा नं. 149-150 में लिखा है

**गाथा-** **आवासएण जुत्तो, समणो सो होदि अंतरंगप्पा।**
**आवासय परिहीणो, समणो सो होदि वहिरप्पा।।149।।**

**अर्थ-** आवश्यक से सहित श्रमण वह अन्तर आत्मा है और जो आवश्यक से रहित श्रमण है वह बहिरात्मा है आवश्यक क्रिया के अभाव में तपोधन बहिरात्मा है।

**गाथा-** **अंतर वाहिर जप्पे, जो वट्टइ सो हवेऽ वहिरप्पा।**
**जप्पेसु जो रा वट्टइ, सो उच्चइ अंतरंगप्पा।।150।।**

**अर्थ-** जो अंतरंग वहिरंग जल्प में वर्तता है वह बहिरात्मा होता है और जो जल्प समूह में नहीं रहता है वह अंतर आत्मा है।

**विशेषार्थ-** यह बाह्य और अंतर जल्प का निराकरण है जो जिन लिंग धारी तपोधनाभास मुनि पुण्य कर्म की आकांक्षा से स्वाध्याय, प्रत्याख्यान, स्तवन आदि रूप बाह्य जल्प को करते हैं अशन, शयन, गमन स्थान आदि क्रियाओं में सत्कार आदि लाभ के लोभी होते हुये अंतर जल्प में मन को लगाते हैं वे बहिरात्मा जीव हैं इनसें अतिरिक्त जो मुनि स्वात्मध्यान में परायण होते हुये परिपूर्ण रूप से अंतर्मुख हुये प्रशस्त और अप्रशस्त सब विकल्प जालों में कदाचित् भी नहीं वर्तते हैं इस हेतु से वे परम तपोधन साक्षात् अंतरात्मा होते हैं इसलिये पुण्य का फल हेय है ऐसा वे समझते हैं।

आचार्य उमास्वामी महाराज ने तत्त्वार्थ सूत्र के आठवे अध्याय के 25वें सूत्र में लिखा है **सद्वेद्य शुभायुर्नाम गोत्रणि पुण्यम्।**





साता वेदनीय, शुभ आयु, शुभ नाम, शुभ गोत्र, ये पुण्य प्रकृति हैं यही द्रव्य पुण्य कहलाता है, शुभ भावों द्वारा होने वाली क्रियाओं से जो पुण्य होता है वह जीव को आपत्तियों से बचाता है, पुण्य से ही तीर्थंकर, चक्रवर्ती, नारायण आदि की पदवियों को प्राप्त करता है तीर्थंकर प्रकृति नाम कर्म की पुण्य प्रकृति है तीर्थंकर अपनी दिव्य देशना से असंख्यात जीवों का कल्याण करते हैं, स्वर्गों में इन्द्रिादि पद ऋद्धि आदि विभूति का प्रदाता भी पुण्य का फल है।

पुण्य क्रिया के व शुभ परिणामों के बल पर ही अनादि मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्व का खण्डन करने में समर्थ होता है यदि पुण्य क्रिया व शुभ परिणाम न किये जाये तो अनादि मिथ्यादृष्टि जीव कभी भी सम्यक्त्व को प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि सम्यक्त्व सन्मुख होने वाला जीव करण लब्धि की प्राप्ति रूप योग्यता को और उससे पूर्व होने वाली प्रायोग्य लब्धि में जहां प्रति समय असंख्यात गुणी अशुभ कर्मों की हानि व शुभ कर्मों की वृद्धि के बल पर ही कर्मों की उत्कृष्ट स्थिति को नाश कर अन्तः कोड़ा कोड़ी सागर की स्थिति को कर देता है। जब तक जीव प्रायोग्य लब्धि के द्वारा उत्कृष्ट कर्म स्थिति का छेदन नहीं करता तब तक यह जीव करण लब्धि की योग्यता को प्राप्त नहीं कर सकता, जिस सम्यक्त्व के द्वारा संसार की अनन्त स्थिति कट कर अधिक से अधिक अर्घ पुद्गल परावर्तन मात्र शेष रह जाती है।

सम्यक्त्व श्रुतज्ञान व्रतादि रूप परिणाम तथा मन्द कषाय रूप गुणों से परिणत आत्मा पुण्य जीव है, जो सच्चे देव के प्रति दृढ़ श्रद्धानी होता है सच्चे आप्त 18 दोषों से रहित होते हैं वे जिनवर तीर्थंकर अर्हन्त परम देव कहलाते हैं। भाव पाहुड में आचार्य कुन्द कुन्द देव कहते हैं गाथा-

**जिणवर चरणंवुरुहं णमंति जे परमभत्ति राएण।**
**ते जम्म वेल्लि मूलं, खणंति वर भाव सत्थेण।। 151।।**

अर्थ- जो उत्कृष्ट भक्ति सम्बन्धी राग से जिनेन्द्र देव के चरण कमलों को नमस्कार करते हैं वे उत्तम भाव रूपी शस्त्र के द्वारा संसाररूपी लता के समूह को उखाड़ देते हैं, संसार रूपी लता का मूल मिथ्यात्व रूप मोह है उसे जो विशिष्ट भावना रूपी कुदाली के द्वारा खोदते हैं वे सम्यग्दृष्टि हैं, जिनेन्द्र देव के दर्शन पूजन से तो निधत्ति निकाचित जैसे कर्म भी नष्ट हो जाते हैं ऐसा पुण्य परम्परा से मुक्ति का कारण क्यों नहीं होगा, इसलिये पुण्य की परिभाषा करते हुये **आचार्य पूज्यपाद स्वामी सर्वार्थसिद्धि में लिखते हैं- पुनात्यात्मानं पूयते-पवित्री क्रियते नेनेति वा पुण्यम्** जो आत्मा को पवित्र करता है या जिससे आत्मा पवित्र होता है उसे पुण्य कहते हैं, पुण्यात्मा का हर जगह आदर सत्कार होता है।

पुण्य का आस्रव जीव को प्रशस्त राग में होता है अनुकम्पा युक्त परिणाम, जीव दया के परिणाम, मन वचन काय की शुद्धि से, दर्शन ज्ञान रूप उपयोग से, तीर्थ क्षेत्रों की वन्दना से, धर्मात्मा पुरुषों के दर्शन से, संसार के भय से, चारों प्रकार के दान करने से जो पुण्य होता है वह शुभ नाम कर्म का आस्रव कराने वाला होता है यह प्रशस्त राग पुण्यानुबंधी पुण्य का कारण है,

इतना ही नहीं, व्रत तप आदि से अर्हन्तादि पंच परमेष्ठियों की भक्ति से, पवित्र आचरण से तथा संसार के समस्त व्यापारों से रहित, श्रुतज्ञान का आलम्बन करने वाले संयमी मुनि राज शुभोपयोग से शुभ कर्म का बंध करते हैं यह सब समीचीन दृष्टि वाले जीवों के लिये परम्परा से मुक्ति का कारण है।

पुण्य-पाप में समानता दिखाते हुये आचार्य भगवन् कहते हैं जिसके भावों में मोह, राग द्वेष है, उसके अशुभ कर्म का बंध होता है और जिसके मोह राग द्वेष मन्द है उसके शुभ कर्म का बंध होता है क्यों कि कर्मों का बंध परिणामों पर आधारित है और जैसा बंध होता है वैसा फल मिलता है, यद्यपि शुभ अशुभ कर्म को बांधने वाला पुद्गल मयी कर्म बंध मार्ग के ही आश्रित है अतः उनके आस्रव में अभेद होने से दोनों एक हैं जैसे लोहे की बेड़ी भी जीव को बांधती है और सोने की बेड़ी भी जीव को बांधती है इसी प्रकार अपने द्वारा किये गये शुभ व अशुभ कर्म जीव को बांधते हैं दोनों ही संसार के कारण हैं, फिर भी अशुभ बंध तो संसार में भ्रमाने वाला है इससे कभी संसार का अंत नहीं होगा, परंतु शुभ प्रवृत्ति करना व्यवहार चारित्र कहा है। **आचार्य नेमिचन्द्र स्वामी द्रव्य संग्रह में कहते हैं।-**

**गाथा- असुहादो विणिवित्ति, सुहे पवित्तीय जाण चारित्तं।**
**वद समिदि गुत्ति रूवंच ववहारणया दु जिण भणियं॥**

अशुभ क्रियाओं से निवृत्ति व शुभ क्रिया रूप प्रवृत्ति जो कि व्रत समिति गुप्ति स्वरूप है यही व्यवहार चारित्र है ऐसा जिनेन्द्र भगवान ने कहा है यही व्यवहार चारित्र निश्चय चारित्र को प्राप्त कराने वाला है, अतः व्रत समिति आदि शुभ परिणामों से किया गया पुण्य बंध परम्परा से मुक्ति का कारण कहा गया है जो कि एक दिन संसार का अंत कराने में समर्थ कारण है। **पुण्यफला अरहंता** तीर्थंकर प्रकृति भी पुण्य रूप प्रकृति ही है जिसके बंध होने के पश्चात् जीव कभी भी तीसरे भव का उल्लंघन नहीं करता है अतः पुण्य का व्यवहार साधन योग्य है फिर भी ज्ञानी आत्मायें पुण्यार्जन करते हुये पुण्य के परिपाक में रंजायमान नहीं होती अर्थात् उस पुण्योदय में जो सुख प्राप्त होता है उसे हेय समझती है, यह तो क्षणिक सुख है, इन्द्रिय सुख है इसमें आसक्त नहीं होना है।

छहढ़ाला में पं. दौलतराम जी ने कहा है-

**पुण्य-पाप फल मांहि, हरख बिलखौ मत भाई।**
**यह पुद्गल पर्याय, उपजि विनसें थिर नांई॥**

अर्थ- पुण्य और पाप के फल में है भव्यात्माओ हर्ष और विषाद मत करो यह तो पुद्गल की पर्याय है उत्पन्न होकर नष्ट हो जाती है, स्थिर नहीं है इसलिये अपने हृदय में दृढ़ता से समस्त विकल्प जालों को छोड़कर अपनी आत्मा का ध्यान करो।

समस्त संसारी जीवों के पुण्य-पाप का उदय देखा जाता है अज्ञानी जीव पुण्य के उदय में प्रसन्न होता है और पाप के उदय में दुखी होता है, ये सुख-दुख दोनों कर्म कृत पर्याये हैं कर्म पर्याय में अनुराग न करके अपने शुद्ध ज्ञायक स्वभाव में निमग्न हो जाओ, इसी तरह धर्म करते





हुये कभी जन-धन की हानि हो जाये तो शांत परिणामों से सहकर साम्य भाव रूप बने रहना ही सम्यग्दृष्टि की विशेषता है जिसे वह पुरुषार्थ से जीतता है।

पुण्य और पाप की कथंचित् समानता जानकर भी पाप के समान पुण्य को नहीं छोड़ा जाता, पाप प्रवृत्ति बुद्धि पूर्वक छोड़ी जाती है, लेकिन पुण्य अबुद्धि पूर्वक छूटता है शुभ से भी ऊपर उठता हुआ जहां निश्चल एकाग्रता होती है वहां शुभ प्रवृत्ति रूप उपयोग रूक जाता है यही प्रक्रिया बढ़ते हुये शुद्धोपयोग तक पहुंचा देती है, अशुभ पाप रूप आचरण से कभी किसी को न मोक्ष हुआ है न भविष्य में होगा।

पुण्य भाव से जहाँ पुण्य कर्म का बंध होता है वहाँ संवर निर्जरा भी होती है, पुण्य जीव को परमात्मा का कारण बताया गया है, यदि शुभ भावों से की गई पूजन इन्द्रिय विषयों की अभिलाषा से रहित है तो उस पूजा रूप शुभ भाव का फल तीन लोक के देवों से पूजित अरहंत पद है। (रयणसार गाथा 14)

आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी कहते हैं तथा अमृतचन्द्राचार्य ने प्रवचनसार में, अष्टपाहुड व मूलाचार आदि ग्रंथों में भक्तिरूप शुभापयोग से व विनय रूप शुभापयोग से परम्परा से मोक्ष की प्राप्ति बतलाई है जिससे मोक्ष पद प्राप्त होता है ऐसा शुभोपयोग रूप पुण्य सर्वथा हेय नहीं हो सकता, वह कथंचित उपादेय भी है इसलिये कुन्द कुन्द आचार्य ने इसको पालन करने का उपदेश दिया है।

जिस प्रकार बत्ती दीपक की उपासना करके दीपक स्वरूप परिणम जाती है उसी प्रकार निर्मल शुद्ध ज्ञान ज्योति की उपासना करके योगी भी सिद्ध पद को प्राप्त कर लेता है।

**पुण्य और पाप में महान अंतर है (जै.सि.को.)**

जब व्रतादि सहित भी मिथ्यादृष्टि संसार में भ्रमण करता है, तब व्रतादि से रहित होकर दीर्घ संसारी क्यों न होगा। पाप का उदय आने पर पास का द्रव्य भी नष्ट हो जाता है और पुण्य का उदय आने पर बिना प्रयत्न के ही संपत्ति प्राप्त हो जाती है यह जीव लक्ष्मी तो चाहता है किन्तु धर्म से प्रीति नहीं करता, क्या बिना बीज के धान्य की उत्पत्ति देखी जाती है। जैसे अनेक प्रकार की भूमियों में पड़े हुये बीज धान्य काल में विपरीत तथा फलित होते हैं। सर्वज्ञ भगवान ने शुभोपयोग का फल पुण्य संचय पूर्वक मोक्ष प्राप्ति कहा गया है। पुण्य दो प्रकार का है 1. सम्यग्दृष्टि का 2. मिथ्यादृष्टि का।

1. सम्यग्दृष्टि का पुण्य= पुण्यानुबंधी होता है और मिथ्यादृश्टि का पापानुबंधी
2. सम्यग्दृष्टि का पुण्य तीर्थंकर प्रकृति आदि के बन्ध का कारण होने से विशिष्ट प्रकार का है।
3. मिथ्यादृष्टि का पुण्य निदान सहित व भोग मूल होने के कारण आगे जाकर कुगतियों का कारण होता है अतः अत्यंत अनिष्ट है।
4. मिथ्यादृष्टि भोग मूलक धर्म की श्रद्धा करता है मोक्ष मूलक धर्म को जानता ही नहीं है।

**भोग मूलक पुण्य ही निषिद्ध है योग मूलक नहीं।**

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थों में केवल मोक्ष पुरुषार्थ ही समीचीन सुख से युक्त होकर सदा स्थिर रहने वाला है शेष तीन पुरुषार्थ का साधक होता है वह हमें अभीष्ट है, किन्तु जो धर्म केवल भोगादिक का ही कारण होता है, उसे विद्वज्जन पाप ही समझते हैं।

यद्यपि व्यवहार धर्म पुण्य प्रधान होता है परन्तु यदि निश्चय धर्म की ओर झुका हुआ हो तो परम्परा से निर्जरा व मोक्ष का कारण होता है भेदाभेद रत्नत्रय की आराधना से रहित तथा भोगों की आकांक्षा रूप निदान बंध से सहित होने के कारण ही जीवों के द्वारा पूर्व में उपार्जित किया गया वह पुण्य मद व अहंकार उत्पन्न करता है बुद्धि को भ्रष्ट करता है किन्तु सम्यक्त्वादि गुणों से सहित पुण्य मद अहंकार आदि विकल्पों के त्याग पूर्वक मोक्ष को प्राप्त कराता है अतः अशुभ की अपेक्षा शुभ श्रेष्ठ है। ऐसा सिद्धांत कथन है।

अतः कथंचित पुण्य की हेय उपादेयता को जानकर पाप क्रिया को छोड़ते हुये शुभ आचरण रूप प्रवृत्ति करें। वर्तमान में इस भरत क्षेत्र में शुद्धोपयोग का अभाव है इसलिये ज्ञानी जन शुद्धोपयोग रूप पूंजी के अभाव में हिंसा आदि पाप प्रवृत्ति न करके धर्म ध्यान रूपी शुभोपयोग की सेवा ही श्रेयस्कार है, उससे जो पुण्यास्रव होगा उस पुण्य के फल में आसक्त न हो यही इस आलेख का सार है।

---

**कविता**

# दीपावली प्रभात सुहाई

**संस्कार फीचर्स**

जिसने वीतराग पद पाया, निज चेतन का अनुभव पाया
छोड़ परिग्रह आतम ध्याया, कर्म रिपू को मार गिराया
पद निर्वाण अबाधित पाया, प्रभु महावीर वही कहलाया
त्रिशलानंदन का अभिनंदन, तीन लोक प्रभु करना वंदन
काटे प्रभु ने तव सब बंधन, नग्न दिगम्बर तपो-साधना
महावीर की ध्यान साधना, मुक्तिपथ की कठिन साधना
अमरतत्व की सहज साधना ज्ञानध्यान तप में रत होकर
कर्म मलिनता पूरी धोकर, आत्म दीप बन ज्ञानी होकर
आत्म दीप बन ज्ञानी होकर, खायी नहीं कर्म की ठोकर
केवल ज्ञानी शिवपथ दानी, पायौ शिवमय निर्जरधानी
पावापुर से मुक्ति पाई, नर सुर ने मिल भक्ति गाई
महावीर की महिमा गाई, दीपावली प्रभात सुहाई

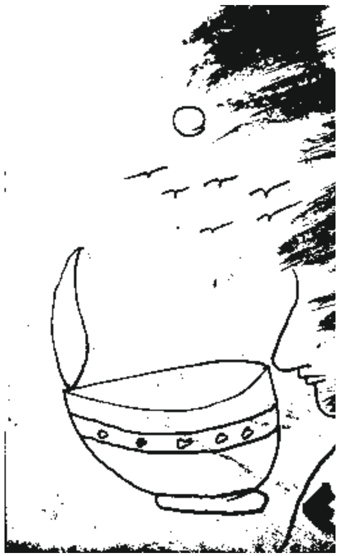





# ध्यान योग की आवश्यकता

**✻ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✻**

ध्यान का सामान्य अर्थ है- किसी एक विषय में एकाग्र होना। अच्छे-बुरे में से किसी न किसी विषय में मन क्रियाशील बना रहता है, इसी क्रियाशीलता का नाम ध्यान है। अंतर केवल इतना है कि सद्विचारों का ध्यान सकारात्मक होता है और असद् विचार सदैव नकारात्मक होते हैं। नकारात्मकता डिप्रेशन और आत्महत्या में सहभागी होती है। आचार्य उमास्वामी ने ध्यान को परिभाषित करते हुये लिखाः-

**उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिंतानिरोधो ध्यानमांतर्मुहूर्तात्।**

उत्तम संहनन अर्थात् सहनशील व्यक्ति एक विषय में अंतरमुहूर्त (48 मिनिट) को एकाग्र होकर चिंता का निरोध करता है, उसे ध्यान कहते हैं। जो व्यक्ति के लिये सबसे कठिन कार्य है। बिना एकाग्र हुये, आप किसी भी कार्य को सही ढंग से, पूर्णता और उत्कृष्टता से नही कर सकते। आप विषय की गहराई को कभी नहीं पा सकते। मन सदा चंचल अस्थिर और भ्रमणशील रहता है। अतृप्ति का भाव उसे शांत नहीं होने देता। मन चाहता है शुद्ध ज्ञान और आनंद जो उसका मूल स्वभाव है। जब उसकी यह भूख शांत हो जाती है तो मन की चंचलता भी शांत हो जाती है। मन आत्मा को चाहता है। आत्मा ही मन का आनंद है, मित्र है। ध्यान को अंतर्मुखी करने का साधन है। जो मन को नही जानता, वह मन की गति चंचलता और उससे उत्पन्न अशांति को कैसे जान सकता है, उसको समझने के लिये दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। बाह्य जगत के कार्यकलाप इन्द्रियों द्वारा मन तक पहुचते है, इसी कारण मन बाह्यजगत की गतिविधियों से मुक्त नहीं हो पाता। क्रियायों-प्रतिक्रियायों का सघन जाल बनता चला जाता है आवश्यकता है इस जाल को बनने से रोकने की। इसके लिये कुछ निकालकर ध्यान करने की आवश्यकता है। आप शांत होकर किसी भी एक आसन में बैठ जायें। धीरे-धीरे लम्बी श्वांस को ले और धीरे-धीरे श्वांस छोड़े। फिर आप नासाग्र होकर किसी एक मंत्र से ध्यान करें, इस समय किसी भी इन्द्रिय को क्रियाशील न होने दें। मन से सभी नियंत्रित रहें। इस प्रकार इन्द्रियों की चपलता जब शांत होने लगे तब चित्त को किसी एक मंत्र में केन्द्रित करें।

ये मंत्र अपने-अपने आराध्य देव के नाम से हो सकते। ॐ मंत्र का ध्यान दीर्घ श्वांस के साथ करते रहने से अंदर व्याप्त दूषित भावना धीरे-धीरे परिवर्तित होकर सकारात्मक होने लगती है। ऐसा प्रतिदिन प्रातः सायं संध्याकालों में करने से दिन रात का शेष समय मंगलमय व्यतीत होकर सुख शांति का संचार होने लगता है। ध्यान पूर्वक मानसिक अवसाद से आपकी नकारात्मकता जो आत्महत्या को प्रेरित कर रही थी, अब ध्यान से आपकी सोच सकारात्मक होने लगेगी। जिससे आप डिप्रेशन मुक्त होंगे। ध्यान करने की अनेक मुद्राओं का उल्लेख शास्त्रों में मिलता है। ध्यान से अंतः करण पवित्र होता है। अंतः करण की पवित्रता से श्रद्धा सम्यक होती

है, जो अहं को कमजोर कर समत्व में लीन कराने में सहभागी है। यही समता क्रोध, मान, माया और लोभ की प्रवृत्तियों का दमन कर सुख शांति प्रदान करती है।

मन के साथ जिन ध्वनियों का घर्षण होने से दिव्य ज्योति प्रगट होती हैं। उन ध्वनियों के समुदाय को मंत्र कहते हैं। मनोविज्ञान का सिद्धांत है कि मनुष्य की अवचेतना में बहुत सी आध्यात्मिक शक्तियां भरी रहती हैं, इन्हीं शक्तियों को मंत्र द्वारा प्रयोग में लाया जाता है। मंत्र की ध्वनियों के घर्षण से आध्यात्मिक शक्तियों को उत्तेजित किया जाता है। मंत्र शक्ति के प्रयोग की सफलता के लिये स्वच्छ मन के साथ बाह्य आचार-विचार खान-पान की शुद्धता एवं मंत्र के प्रति निष्ठावान होना आवश्यक है। मंत्र निम्न बीजाक्षरों से ही निर्मित होते हैं -

**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः झ्वीं हं सः क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं फट् वषट् संवौषट्** आदि बीजाक्षर होते हैं। सभी में प्रधान ॐ बीज है यह आत्मवाचक एवं मूलभूत है। इसको तेजोबीज, कामबीज और भाव बीज कहा गया है।

यह समस्त मंत्रों का सार है। इसे सभी मंत्रों के प्रारंभ में बोला जाता है। इसी प्रकार **ह्रीं** कल्याणवाचक, **श्रीं** कीर्तिवाचक, **क्लीं** लक्ष्मी वाचक, **क्ष्वीं** योगवाचक, **प्रों, प्रीं** स्तम्भन एवं **हं** विद्वेष रोष वाचक है। इन मंत्रों के जपने से मन में छाई अशांति घृणा विद्वेष ग्लानि आदि समस्त मनोविकारों से मन परिवर्तित होकर शुभ और विशुद्ध भावों से सकारात्मक होकर दुखों से मुक्ति दिलाता है। जैसे आपका मन ऋण, बीमारी, विरोधी आदि के भय से व्यथित था, मंत्राराधना से मन शुद्ध होने लगता है। जैसे जलस्नान से शरीर का मैल, पसीना और ताप दूर होता है। ठीक वैसे ही अंतस में मंत्र जाप से, मन के मैल क्रोध, मद लोभ, मायाचारी आदि समस्त विकार धुलकर साफ होते हैं। इन्हीं मनोविकारों से ही हमारी दशा दुखद और अशांत हो रही थी, जो आत्महत्या जैसे जघन्य कृत्य की जननी थी।

**स्नान से तन, दान से धन, और ध्यान से मन, शुद्ध होता है।**

मंत्र जाप में मंत्र की शुद्धि, काल शुद्धि, आसन शुद्धि, भोजन शुद्धि के साथ अपने ही गृह के पवित्र ईशान कोण में पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख होकर अपने आराध्य भगवान के चित्र के समक्ष घी का दीप जलाकर, मंगल कलश स्थापन पूर्वक करे तो सर्वोत्तम होगा। यदि सब कुछ संभव नही है तो पवित्र मन और पवित्र शरीर के साथ करने से भी विपरीत मानसिकता, अनुकूलता में अवश्य परिवर्तित होगी। जिससे शेष जीवन, सुखद एवं शांतिपूर्ण व्यतीत होगा।

**ध्यान दो प्रकार का होता है:-** 1. अशुभ ध्यान 2. शुभ ध्यान। प्रथम अशुभ ध्यान में तो दुनिया के अधिकांश उलझे हैं, जिसके कारण ही व्यक्ति अवसादी हो जाता है। किसी की निंदा, दूसरे का बुरा सोचना जिनसे हमारी प्रगहित बाधित होना प्रतीत हो रही है, उसे दूर करने का विचार करना, हिंसादि पाप कार्यों से अपने कार्य सिद्धि का विचार करना आदि अनेकानेक ऐसे विचार हैं जो निरंतर व्यक्ति के मन में चलते ही रहते हैं जिन्हें बुरे विचार कहते हैं, यही ध्यान अशुभ ध्यान है। जो मानसिक अवसाद का मूल कारण है।





दूसरा ध्यान शुभ ध्यान है, जो अवसाद से बचाकर ऊँचाईयों पर पहुचाने वाला है। मन चूकि बहुत चंचल है अतः उसे नियंत्रित करने एवं शुभ ध्यान में लगाये रखने को सर्वप्रथम **ॐ** की ध्वनि दिन में तीन बार प्रातः मध्यान्ह और सांयकाल एकांत में बैठकर करें **ॐ** बीजाक्षर का नाद 9 बार जरूर करें। ध्वनि के उच्चारण में कंठ, तालु, होंठ, नासिका आदि इन्द्रियों एवं उपांगों का अवलंबन लें, वही ध्वनि के उन क्षणों में, अपनी अंर्तदृष्टि नाभिस्थान पर होना चाहिये। उस समय अनुभव में नाभिसथान से उठते हुये आध्यात्मिक तेजपुंज की एक लकीर ऊपर उठती हुई, धीरे धीरे **ॐ** के साथ मस्तक के रन्ध्र ब्रम्ह भाग तक जायेगी, यही आध्यात्मिक ऊर्जा आत्मिक शक्ति प्रदान करती है। **ॐ** की दिव्यनाद यदि दिन में तीन बार की जाये तो माइग्रेन, साइनस, ब्लडप्रेशर आदि अनेक बीमारियों का इलाज बिना दवाई लिये हो जाता है। इसके ऐसे कई उदाहरण भी हैं। अब आप विचार करें कि मेरी आत्मा अनंत ज्ञानमय है। मेरी आत्मा में परम आनंद का स्रोत बह रहा है। मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ मैं पूर्ण सुखी हूँ मेरी तरह दुनिया के सभी प्राणी सुखी रहना चाहते हैं, मैंने आज तक न जाने कितनों को सताया है, अब किसी को नहीं सताऊंगा। इन्हीं मंगल भावनाओं से **ॐ** नाद की अंतर में ध्वनि जारी रखें जो मानसिक विकारों को जलाकर सद्भावनाओं से ओतप्रोत करेगी। इस प्रक्रिया में आप ही कर्ता हैं। आप ही कर्म हैं आप ही क्रिया हैं मात्र मंत्र से ही यह संभव होगा।

आज अधिकांश जन तनाव में हैं। किसी को भविष्य का तनाव है तो किसी को जो बीत गया, उसका तनाव है। इंसान इस तनाव प्रबंधन के तरीके ढूंढ रहा है। कोई इससे संबंधित क्रैश कोर्स कर रहा है, तो कुछ लोग किताबें पढ़ रहे हैं। कोई शांति की तलाश में संतों के पास जा रहा है तो कोई छुट्टी मनाकर शांति ढूंढ रहा है, तो कोई ध्यान लगा रहा है। कोई धन लगा रहा है शांति से विचार कीजिये कि इस तनाव का कारण कौन है जो मन की स्वाभाविक शांति छीन रहा है। जब हम छोटे थे तब न कोई तनाव था न ही अशांति। भूख लगने पर थोड़ा सा हल्ला किया भोजन मिल गया, फिर खेलने में मस्त रहते थे। पर जैसे जैसे हम बड़े होते हैं, अशांत होने लगते हैं स्वयं से और दूसरों से ज्यादा उम्मीद रखने लगते हैं। हमारे गुरुजी कहां करते थे कि जब आपके पास एक टू व्हीलर थी तो आपको छोटी कार खरीदने की चाहत हुई, फिर आपने एक सुंदर कार भी खरीद ली। अब आप इस चिंता में रहने लगे कि गाड़ी पर कोई स्क्रैच न आ जाये। आपको इसके लिये एक सुरक्षित पार्किंग का प्रबंध करना पड़ा। फिर आपके दोस्त ने आपसे बेहतर गाड़ी खरीद ली अब आप और अशांत हो गये। जब संतान नही थी तो संतान चाहिये थी। संतान पैदा हो गयी तो सुंदर होनी चाहिये। फिर वह पढ़ाई में आगे हो, पढ़ाई में आगे हैं तो खेल में पीछे क्यों, जो भी पास हैं, उसका आनंद नहीं, जो नहीं है हर पल वो होना चाहिये। स्वयं अशांति स्थापित करने के बाद शांति की तलाश करते हैं। हम विभिन्न प्रकार के रत्नों को धारण करते हैं, ताबीज बनवाते हैं। कुंडली व हस्तरेखायें दिखाकर सुख की खोज करते हैं। तंत्र विद्या

से भी सुख शांति के उपाय खोजते हैं। उचित परिणाम न मिलने से मनोरोग विशेषज्ञ से सलाह लेते हैं। फिर भी शांति, नजर न आने पर दूसरों पर दोषारोपण कर अपनी नैसर्गिक शांति को डिस्चार्ज करते रहते हैं। कहने का तात्पर्य है कि जिसने अशांति स्थापित की हैं, वही इसे नष्ट करने की ताकत रखता है। जो समस्या का कारण बनता हैं वही समाधान भी करता हैं। जिन अनावश्यक चाहतों से बैचेनी हुई है, उनकी आसक्ति ही इस अशांति की कारक है, जिसे आप स्वयं नष्ट करने में सक्षम हैं।

एक कापी पैन लीजिये और लिखना शुरु कीजिये कि मेरे पास ऐसा क्या है जो अन्य लोगों के पास नहीं हैं। आपके पास आंखें है, आप देख सकते हैं बहुत से लोग देख नहीं सकते, आप चल सकते हैं, आप सुन सकते हैं और आप अपने हाथों से अपना कार्य कर सकते हैं। आप मानसिक रूप से स्वस्थ्य हैं आप में भले बुरे की सोच है। घर, गाड़ी, परिवार, शिक्षा, संतान दोस्त जैसी तमाम चीजों की सूची तैयार कीजिये जो आपके पास हैं। यह देखकर आप स्वयं सोचेगे कि मेरे पास ऐसी अनेकों चीजें है जो अन्य के पास नही हैं। जब भी मन में असंतोष आये अपनी लिस्ट पढ़ लीजियेगा ऐसे लोगों पर नजर डाल लीजिये, जिनके पास ये नहीं हैं। अब खुश रहना शुरु कीजिये। आज से छोटी-छोटी उपलब्धियों पर प्रसन्नता मनाना शुरु कीजिये। यदि आपने इसका आनंद नहीं लिया तो आप सब कुछ पाने के बाद भी खोखले रहेगें। परम पूज्य **108 मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज निरंतर इसी प्रकार की भावनात्मक सोच पर आधारित भावना-योग से अनेकों को तनाव मुक्त कर चुके हैं।**

---

**कविता**

## धर्म ध्यान अपनाओ

**❋ संस्कार फीचर्स ❋**

धन मिलता पुण्य फल खिलता
पुण्य वीता, धन रीता, फिर निधन बन
पापोदय में, पापी रोता,
साथी खोता, साथ छोड़ते
रिश्ते तोड़ते, रहे अकेला , सहे अकेला
स्व कृत्य, पुण्य पाप का फल
जीव भोगे अकेला,
धर्म अनूठा, साथ निभाये
जग में कोई साथ न जाये
पुण्य बढ़ाओ, पाप घटाओ
जियरा धर्मध्यान अपनाओ।

**संयम स्वास्थ्य योग**

# कब्ज के घरेलु इलाज

**कब्ज के कारण**

1. खान पान की गडबडियाँ 2. शौच रोकने की आदत 3. शारीरिक श्रम का अभाव 4. मानसिक तनाव 5. विश्राम की कमी 6. आँतों की दुर्बलता 7. टट्टी जाने में शीघ्रता 8. पानी की कमी 9. स्थान की अस्वछता 10. मादक द्रव्यों का सेवन 11. एलोपैथिक दवाईयों का दुष्प्रभाव

कब्ज दूर करने के उपाय

**1. हरड-** रोज सोते समय गरम पानी में एक चम्मच

**2. तेल-** प्रातः और रात को सोते समय पेट पर सरसो तेल की मालिस

**3. गाजर-** 250 ग्राम कच्ची गाजर अच्छी तरह चबा-चबाकर भूखे पेट खायें।

**4. नींबू-** नींबू का रस गरम पानी के साथ रात्री लेने से दस्त खुलकर आता है।

**5. पालक-** कच्चे पालक का रस प्रातः पीते रहने से कब्ज कुछ दिनों में ठीक हो जाती है।

**6. सौंफ-** सोते समय आधा चम्मच पिसी हुई सौंफ की फक्की गर्म पानी से ले कब्ज नहीं रहती।

**कब्ज-** कब्ज का अर्थ है- समय पर मल त्याग न होना, मल त्याग कम होना, मल में गांठे निकलना, लगातार पेट साफ ना होना।

इससे शरीर में आलस्य उत्पन्न होता है, मुंह से दुर्गंध आना, बुखार होना, सिर दर्द, और लगातार कब्ज से बवासीर होना भी शामिल है।

उपरोक्त उपायों से इससे बचा जा सकता है।

# गोमेद व अम्बिका की स्वतंत्र युग प्रतिमाएँ

✻ डॉ. महेन्द्रकुमार जैन, मनुज, इंदौर ✻

गोमेद यक्ष व अम्बिका यक्षी की युगल द्विभंगासन में खड़ी प्रतिमाएँ बहुत कम देखने को मिलती हैं। कुण्डलपुर (दमोह) की गोमेद यक्ष व अम्बिका की खड़ी युगल प्रतिमा को रुक्मणी-श्रीकृष्ण की प्रतिमा घोषित कर स्थापित किया गया है, जबकि उनके शीर्ष पर तीर्थंकर प्रतिमा स्पष्ट देखी जा सकती है। गन्धर्वपुरी में गोमेद यक्ष व अम्बिका यक्षी की युगल द्विभंगासन में खड़ी कई प्रतिमाएँ हैं, किन्तु सैकड़ों वर्षों तक खुले में पड़े रहने के कारण अधिकांश का पाषाण क्षरित हो जाने के से उनकी नक्काशी की सूक्ष्मता नष्ट हो गई है। प्राप्त उपलब्ध प्रतिमाओं में से कुछ प्रतिमाओं का परिचय इस प्रकार है-

**गोमेद-अम्बिका प्रतिमा प्रथम-** गोमेद यक्ष व अम्बिका बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथ के यक्ष-यक्षी हैं। किन्तु इनकी यह युगल सपरिकर स्वतंत्र प्रतिमा है। दोनों एक ही पादपीठ पर समानता से द्विभंगासन में खड़े हैं। पादपीठ में छः अश्वारोही मनुष्य उत्कीर्णित हैं। दोनों के मध्य में पादपीठ पर स्तम्भ या आम्रवृक्ष के तना से टिककर एक भक्त-युगल बैठा है। ये यक्ष की ओर अभिमुख होकर बैठे हैं, सम्भवतः अंजलिबद्ध हैं। यक्षी अपना बायां हाथ बाम पार्श्व में खड़े हुये छोटे बालक के शिर पर रखे हैं , दाहिने हाथ में कुछ लिये हुये है जो भग्न हैं। यक्ष के दायें पार्श्व में एक बालक खड़ा है, यक्ष के दोनों हाथों के अग्रभाग भग्न हैं। यक्ष-यक्षी पूर्ण देवोचित आभरणों से भूषित हैं। यक्षी के केशों का जूड़ा बंधा है पर यक्ष के शीश पर त्रिस्तरीय मुकुट है। यक्षी का प्रभामण्डल वृत्ताकार है जबकि यक्ष का प्रभावल उपरि लम्बित अण्डाकार है। यक्ष-यक्षी दोनों मुकुट, मुक्तावली अरूबन्ध, स्तनसूत्र, केयूर, वलय, मेखलाबंध आदि देवोचित आभरणों से भूषित हैं। दोनों के स्कंध और शिर के मध्य कोई प्रतीक या आयुध उत्कीर्णित हैं, क्षरित हो जाने से स्पष्ट नहीं है, अन्यत्र उस स्थान पर यक्ष के बायें हाथ में धारण किये हुये सनाल पद्म दर्शाया गया है। वितान में मध्य में एक लघु जिन पद्मासनस्थ हैं और दोनों किनारों पर ऊपर नीचे के क्रम में दो-दो लघुजिन उत्कीर्णित हैं, ये भी पद्मासनस्थ हैं। इस तरह वितान में पाँच लघुजिन उत्कीर्णित हैं।

**गोमेद-अम्बिका प्रतिमा द्वितीय-** इस प्रतिमा में गोमेद- अम्बिका प्रतिमा भी प्रथम प्रतिमा की तरह है। इनके शिर सहित वितान भाग भग्न और अनुपलब्ध हैं। पुरातत्व विभाग की पंजी में इसे अन्य प्रतिमा के नाम से पंजीवद्ध किया गया है, जैन प्रतिमाओं की सूची में इसका उल्लेख नहीं है। इसके पादपीठ में सात अश्वारोही उत्कीर्णित किये गये हैं। मध्योत्कीर्णित स्तम्भ के मूल में दो आराधिकायें अंजलिबद्ध बैठीं हैं, ये दोनों भी यक्ष की ओर अभिमुख होकर भक्तिरत हैं। यक्ष-यक्षी के निकट वाले हाथों में बीजपूरक फल है। अंबिका यक्षी के बायें पार्श्व में बालक खड़ा है, उसके शिर पर देवी की हथेली है, शेष भाग टेहुनी तक भग्न है। यक्ष के दक्षिण





पार्श्व में खड़े बड़े बच्चे का हाथ अपने दाहिने हाथ से थामे हुये है। इस बड़े बच्चे का भी पाषाण क्षरित हो जाने से इसमें स्पष्टता नहीं है। इसके कुछ वक्ष उभार से प्रतीत होता है कि यह स्त्रीपात्र है। अलंकरण आदि सभी प्रथम यक्ष-यक्षी प्रतिमा के समान हैं।

**गोमोद-अम्बिका प्रतिमा तृतीय-** गंधर्वपुरी के राजकीय संग्रहालय के सर्वेक्षण के समय हमने अधिकांश पुरावशेषों के चित्र लिये थे, उस टीम में मेरे अतिरिक्त वास्तुविद् देवेन्द्र सिंघई, एम.के. जैन ज्योतिविद् पंकज जैन और श्रीमती नीलू जैन थे। हमने दो पुरावशेषों के टुकड़ों के चित्र मिलाये तो यह तृतीय गोमेद-अम्बिका प्रतिमा प्रतीत हुई। इसका भी वितान भाग नहीं है, जिससे शिर और उससे ऊपर की संरचना अज्ञात है। इसके पादपीठ में भी सप्त अश्वारोही हैं। दोनों के पार्श्वों में बालकों के अवशिष्ट भाग को देखा जा सकता। बाम कर में धारण किये हुये मातुलिंग स्पष्ट है। दोनों भग्न भाग जोड़कर इसका अधिकतर भाग द्वितीय प्रतिमा के समान है।

**तीर्थंकर-यक्षी प्रतिमा चतुर्थ-** इस तीर्थंकर-यक्षी प्रतिमा का परिकर और घुटनों से नीचे का अधोभाग भग्न और अप्राप्त है। इनके चरणों के पास एक आराधिका बैठी हुई अवशिष्ट है। केश-सज्जा प्रथम प्रतिमा की यक्षी के समान है, प्रभावल भी वर्गाकार है। शिर के ऊपरी भाग में एक ही आसन पर समान स्तर पर तीन लघु जिन पद्मासनस्थ हैं।

**गोमुख यक्ष एकल प्रतिमा-** प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ के शासन देवता गोमुख यक्ष की यह प्रतिमा सम्प्रति केन्द्रीय संग्रहालय गूजरीमहल ग्वालियर में सुरक्षित है। डॉ. नरेश पाठक ने इसका परिचय दिया है कि गंर्धपुरी (गंधावल) से प्राप्त गोमुख यक्ष का मुख पशु आकार (गोवक्त्रक) और शरीर मानव का है। (सं.क्र.230)। सव्य ललितासन में बैठे हुये शासनदेव की दायी नीचे की भुजा भगन है। दायीं ऊपर की भुजा में गदा, बायीं ऊपर की भुजा में परशु व नीचे की भुजा में बीजपूरक है। यक्ष आकर्षक करण्ड मुकुट, मुक्तावती उरूबन्ध, केयूर, वलय, मेखला से सुसज्जित है। कलात्मक अभिव्यक्ति 11वीं शती ईस्वी की परमार युगीन शिल्पकला के अनुरूप है। काले वलुए पाषाण पर निर्मित प्रतिमा का उत्सेध 45 से.मी. और चौड़ाई 30 से.मी है।

**विश्लेषण-** 1. गंधर्वपुरी में प्राप्त यक्षी के एकल स्वतंत्र प्रतिमा अथवा यक्ष-यक्षी की युगल स्तंत्र प्रतिमाओं के शिरोभाग वितान में पाँच लघु जिन तीर्थंकर उत्कीर्णित किये जाने की परम्परा अनूठी है। यहाँ विश्लेषित प्रथम प्रतिमा के वितान में भी पाँच पद्मासनस्थ लघुजिन उत्कीर्णित हैं, अन्यत्र ऐसी प्रतिमाओं के शीर्श पर एक ही लघु जिन के उत्कीर्णन हुये हैं। 2. द्विभंगासन में खड़े यक्ष-यक्षी की युगल प्रतिमाएँ बहुत अल्प प्राप्त होती हैं, किन्तु गंधर्वपुरी में ऐसी कम से कम तीन प्रतिमाएँ एक साथ प्राप्त होना अपने आप में महत्वपूर्ण है। 3. चतुर्थ यक्षी प्रतिमा के शिरोभाग में तीन लघुजिन का उत्कीर्णन भी वैशिष्ठ्य युक्त है, शीश पर लघुजिन से स्पष्ट है कि यह किन्ही तीर्थंकर की यक्षी प्रतिमा है।

# अंग प्रदर्शन अभिशाप क्यों

**✲ डॉ. अरविन्द प्रेमचंद जैन, भोपाल ✲**

वैसे खान-पान पूजा-पाठ कपड़ा पहनना ये सब व्यक्ति की व्यक्तिगत रूचियाँ है निजता हैं इसमें किसी को कोई विवाद, तर्क, समझाईश देने या करने की जरुरत नहीं हैं, पर जब मर्यादाओं, सीमाओं का उल्लंधन होता है तब उन पर प्रतिबंध लगाने की जरूरत पड़ती है।

आज खान पान पहनावा पर बहुत अधिक चर्चा के साथ विवाद हो रहा हैं जैसे खान पान में आज कल पश्चिमी खान पान ने हमारे देश की पारम्परिक खान पान में ऐसी भारी लगाई हैं। इस समय होटल और हॉस्पिटल का व्यापार बहुत फलफूल रहा हैं क्योंकि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

आक्रमिक बाजारीकरण के कारण विज्ञापनों के हमें मानसिक गुलाम के साथ पंगु बना दिया हैं कि उससे बाहर नहीं निकल पा रहे हैं, यह बहुत बड़ी और दूरगामी सोची समझी राजनीति रणनीति है। आज महंगाई का बहाना लेकर परिवार के प्रत्येक सदस्य को कमाई करने वाला बना दिया है। मशीनी उपकरण की उपलब्धता जैसे फ्रिज, वाशिंग मशीन, मिक्सी, चक्की, टीवी, मोबाईल आदि से और शारीरिक और मानसिक गुलाम बनाकर समय का कृत्रिम अभाव बनाकर अन्य क्रिया कलापों में उलझाकर रखना जैसे इंटरनेट ने अधिकांश लोगों की एकाकी बना दिया, इससे हमें सब क्षेत्रों का ज्ञान बहुत जल्दी और सुगमता से उपलब्ध होने से हम सब काल्पनिक और आभासी दुनिया में जी रहे हैं, इससे बचे तो व्यसन और अपराध की दुनिया में चले गये।

आज हमारे घरों में खान पान की सामग्री भी बने आने से हम रासायनिक और मिलावटी खाद्य खाने से हम अनेक बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं और खाने के साथ दवाइयों का उपयोग बराबरी से होने के कारण आमदनी का बहुत बड़ा हिस्सा होटल और हॉस्पिटल में जा रहा है, उससे बची राशि हमारे परिधानों और वस्त्रों में हो रहा हैं। आज नवयुवक और नौकरी करने वाले घर, कार के साथ अन्य घरेलु सामान कर्ज या लोन से लेने से उनका बचा धन उसको चुकाने में जाने से वे बचत नही कर पा रहे हैं जिससे वे अधिक तनाव और अवसाद में रह रहे हैं।

हम आधुनिक बनते जा रहे हैं और बन चुके हैं पर हम उसे व्यवहारिक धरातल में नही उतार पा रहे हैं आज कल महिलाओं के पहनावे पर बहुत अधिक विवाद के साथ तर्क वितर्क हो रहे हैं । अंग प्रदर्शन के साथ छोटे-छोटे कपड़े पहनने पर उनका अपना तर्क हैं और होना भी चाहिये पर वे स्वयं इस प्रकार के पहने हुये अन्य महिलाओं और अपनी पुत्री, बहिन, बहु को देखकर प्रसन्न और खुशी महसूस करती हैं क्या ? ऐसे वेशभूषा में वे अपनी मां, बाप, भाई, चाचा, दादा के सामने सुखद अनुभूति करती हैं या नही ? तब अन्य पुरुषों से क्या अपेक्षा करना इसका स्वयं निर्णल लें, क्योंकि बलात्कार छेड़खानी के अपराध में उनके कपड़ों का कारण भी हो सकता है या माना जाता है।

ड्रेस/ यूनिफार्म हमें अनुशासन सिखाता है, क्या मिलिटरीमैन, पुलिस, वकील, डॉक्टर, विद्यार्थी अपनी यूनिफार्म से पहचाने जाते हैं आज हम इतने आधुनिक होने के बावजूद पर भी





गुरुद्वारा, मस्जिद में एक प्रकार की ड्रेस में ही प्रवेश दिया जाता है वहां कोई समझौता नहीं होता है पर हमारे जैन मंदिरों में हिन्दू मंदिरों में कोई नियम धर्म नहीं है कुछ भी पहनकर जाना जैसे छोटे छोटे कपड़े, पारदर्शी ड्रेस पहनना और तंग चुस्त कपड़े पहनकर अंगों का दिखावा करने से क्या वे स्वयं अच्छा महसूस करती हैं उनके पहनावे से अन्य लोग भी आकर्षित होते हैं और उनका ध्यान भगवान की ओर न जाकर उनके अंगो और उनकी सुंदरता को देखने को विवश हो जाते हैं ।

इसी को ध्यान रखकर कई जैन मंदिरों और हिन्दू मंदिरों में उचित परिधान पहनकर प्रवेश मिलेगा अन्यथा उन्हें वापिस कर दिया जायेगा और हो सकता हैं उनको बेइज्जती की सामना हो सकता है।

मंदिरों में प्रवेश ऐसी ड्रेस में जायें जो स्वयं के साथ दूसरे को भी अच्छा लगे हां अपने निजी घर में वे निर्वस्त्र रहें कोई को कोई आपत्ति नहीं है पर जब हम सामाजिक, धार्मिक, पारिवारिक क्षेत्रों में वहां के अनुकूल क्यों पहनते हैं।

परिधान से व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रदर्शित होता है हमारा कहना हैं आधुनिकता जरूर अपनाओं पर अपनी सीमा में अपनी संस्कृति को बचाओ, कम या छोटे पहनावे से कोई भी उनकी प्रशंसा नहीं करता और यदि वे स्वयं अपने आपको आइना के सामने खड़े होकर देखो और कैसी लग रही हूं और अन्य मुझे देखकर कैसी दृष्टि या प्रतिक्रया देंगे।

कपड़े इज्जत ढांकने के लिये होते हैं अंग प्रदर्शन के लिये निर्वस्त्र रहना ही सबसे सस्ता और सुलभ साधन हैं एक बार ऐसा करके देखो।

**कविता**

# बिल्ली की व्यथा

पीडा क्या है इस बिल्ली की चतुर चोर चालू बिल्ली की
भूख के मारे जब तड़फे ये, तब करती है कुछ जुगाड़ ये
अपराधि यह कहलाती है पापी पेट को सह जाती है।
दूध पिया क्या पाप किया,
क्या दूध माँगने से मिल जायेगा
क्या दानवीर कोई मिल जायेगा,
क्या भूख मिटाना अधिकार नहीं
इक प्राणी को भूख मिले तो वह क्या अपराध करे
भोजन खातिर चोरी करना, बिल्ली का अपराध नहीं
चोरी का उसे ज्ञान नहीं, संतों की संगति मिल जाये
पुण्य कमल हृदय खिल जाये
मिले भावना मिटे वासना
बिल्ली पर उपकार यही।

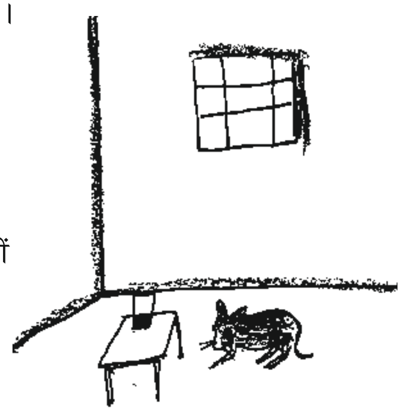

# श्रमण साधना मे सहयोगी वनस्पतियाँ एवं औषधीय गुण

❊ पं. सुरेश जैन मारौरा, इंदौर ❊

**श्री मन्सुरासुर नरेन्द्र किरीट कोटि- माणिक्य रश्मि निकरार्चित पाद पीठः।**
**तीर्थाधियो जितरिपुर्वृषभो बभूव, साक्षाद कारण जगत्त्रियैक बंधुः ।।**

वैज्ञानिकों की खोज के आधार पर भारत वर्ष में 45000 प्रकार की वनस्पति प्रजातियां पाई जाती हैं जिसमें से 5000 प्रजातियां ऐसी है, जो भारत के अलावा अन्यत्र कहीं नही पाई जाती। जैन ग्रंथों में वनस्पति की अधिकतम आयु 10,000 वर्ष है, वनस्पतियां सजीव हैं। ऐसा अब विज्ञान भी मानने लगा है।

वनस्पति मानव जीवन का मूल आधार है, वनस्पति ऑक्सीजन बनाने के कारखाने हैं, वनस्पति हमारे हितैषी हैं, अतः वनस्पति के बिना जीवन संभव नही है।

जैन दर्शन में वनस्पति को एकेन्द्रिय जीव का शरीर माना जाता है यह दो प्रकार की होती है। 1. प्रत्येक, 2. साधारण। एक जीव के स्वामी शरीर (वनस्पति) प्रत्येक वअनन्त जीवों के साझले शरीर को **साधारण** कहते हैं। जैसे काई, फफूंद । एक शरीर में अनंत जीवों का वास होता है। इसलिये इस शरीर को निगोद भी कहते हैं।

जगदीशचंद्र बसु ने प्रत्यक्षतः सिद्ध किया है कि वृक्ष, पौधे आदि वनस्पतियां मनुष्य के समान अनुकूल परिस्थिति में सुख एवं प्रतिकूल परिस्थिति में दुःखी रहते हैं अशुभ लेश्याएँ पाई जाती हैं, संवेदनशील हैं संज्ञायें पाई जाती हैं।

भारत वर्ष उष्ण प्रधान देश हैं, यहाँ गर्मी अधिक पड़ती हैं इसलिये यहां ठण्ड पहुँचाने वाली वनस्पतियों को भोजन में सम्मिलित करना उचित होता है। आयुर्विज्ञान के प्राचीनतम ग्रंथ चरक संहित, सुश्रुत, अष्टांग हृदय व संग्रह में वनस्पतियों से उपयोगी औषधियों को वर्णन मिलता है। प्राकृतिक चिकित्सा में सात्विक पदार्थों का सेवन किया जाता है। प्राकृतिक चिकित्सकों के दृष्टिकोण से भोजन की औषधि और औषधि ही भोजन है। प्राकृतिक भोजन शरीर की आतंरिक प्रतिरोध क्षमता को इतना अधिक गतिशील बना देता है कि वह सभी प्रकार के संक्रामक रोगों का प्रतिरोध करने में सक्षम होता है।

इकरात कहते हैं-पथ्यों में ही स्वास्थ्य और पथ्य ही औषधि है। स्वस्थ होने पर भोजन पोषण के लिये रोगी होने पर रोग का दूर करने के लिये औषधि की तरह ही भोजन करना चाहिये।

आचार्य श्रुतकीर्ति, कुमारसेन, वीरसेन, पूज्यपाद पात्र स्वामी (पात्र केसरी) सिद्धसेन, दशरथ गुरु, मेघनाथ, समंतभद्र एवं जटाचार्य आदि आचार्यों ने वैद्यक ग्रंथों की रचना की है। परन्तु खेद है कि वे ग्रंथ अभी उपलब्ध नहीं होते हैं इन ग्रंथों के आधार से 8वीं शताब्दी में उग्रादित्याचार्य ने प्रकृत सुंदरग्रंथ का निर्माण किया है।

पूज्यपाद आचार्य ने शालाक्य-शिलाभेदन नामक ग्रंथ बनाया है। पात्र स्वामी ने शल्यतंत्र नामक ग्रंथ की रचना की है, सिद्धसेन आचार्य ने विष व उग्र ग्रहों का शमन विधि का निरुपण





किया है, सिंहनाद आचार्य ने शरीर बलप्रयोगों का निरूपण किया है।

समन्तभद्राचार्य ने अष्टांग नामक ग्रंथ में विस्तृत व गंभीर विवेचना की है। उसके आधार पर कल्याणकारकम् को उग्रदित्याचार्य ने लिखा है।

**पुष्पायुर्वेदः** जैन धर्म अहिंसा प्रधान होने से उन महाव्रतधारी मुनियों ने इस बात का भी प्रयत्न किया कि औषधि निर्माण के कार्य में किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं होना चाहिये। इतना ही नहीं एकेन्द्रिय प्राणियों का भी संहार नहीं होना चाहिये, अतएवं उन्होंने पुष्पायुर्वेद का भी निर्माण किया।

आयुर्वेद ग्रंथकारों ने वनस्पतियों को औषधि में प्रधान स्थान दिया। चरकादि ग्रंथकारों ने मांसादिक अभक्ष्य पदार्थों का प्रचार-प्रसार औषधि के नाम से किया परंतु जैनाचार्यों ने तो उस आदर्श मार्ग का प्रस्थापन किया जिससे किसी भी प्राणी को कष्ट न हो सके। इसलिये पुष्पायुर्वेद में ग्रंथकार ने 18000 जाति के कुसुम (पराग) रहित पुष्पों से ही रसायनौषधियों के प्रयोग को लिखा है। 18000 जाति के केवल पुष्पों के प्रयोगों का ही जिसमें कथन हो उस ग्रंथ का कितना महत्त्व होगा। हम बहुत अभिमान के साथ कह सकते हैं कि जैनाचार्यों ने ही पुष्पायुर्वेद का निर्माण किया है। अन्य किसी ने नहीं।

**गुम्मट देव मुनि** ने मेरुतंत्र नामक वैद्यक ग्रंथ की रचना की है। ग्रंथ में पूज्यपाद स्वामी को बहुत आदरपूर्वक स्मरण किया है सिद्धनागार्जुन यह पूज्यपाद के भानजे थे नागार्जुन कल्प नागार्जुन कक्षपुट आदि ग्रंथों का निर्माण किया था, इन्होंने बज्रखेचर घुटिका नामक स्वर्ण बनाने की रत्न गुटिका तैयार की थी। जब यह इस औषधि को तैयार करने के संकल्प से आर्थिक मदद मांगने के लिये किसी राजा के पास गये थे, तब राजा ने पूछा कि यदि आपके कहने के अनुसार गुण न आवे तो आपका दण्ड क्या रहेगा ? नागार्जुन ने उत्तर दिया कि मेरी दोनों आँखें निकाल सकते हो। राजा ने उन्हें सहायता दी। नागार्जुन ने प्रयत्न करके एक वर्ष में इस औषधि को तैयार करके उसकी 3 मणियों को बनाकर उन पर अपना नाम खोदा बाद में मणियों को नदी में ले जाकर धो रहे थे। तब हाथ से फिसलकर वह नदी में गिर गई। राजा ने प्रतिज्ञा अनुसार दोनों आंखे निकलवाई। नागार्जुन दोनों आंखो से अंधे हुये व देशांतर चले गये। एक वेश्या स्त्री को उन मणियों की निगली हुई मछली के मिलने से चीरकर देखी तो 3 मणियां मिल गई। वैश्या ने वह मणियां ले जाकर झूले पर रख दी। झूले ही लोहे की सांकलन सोने की हो गई। तब वह वेश्या रोज लोहे से सोना बनाया करती थी। बड़े-बड़े पहाड़ के समान उसने सोना बनाया एवं विपुल धन व्यय कर एक अन्न सत्र का निर्माण कर उसका नागार्जुन-सत्र नाम दिया, नागार्जुन ने फिरते-फिरते वहाँ आकर सत्र को अपने नाम मिलने का कारण पूछा-मालूम होने पर उन्होंने उन रत्नों को पुनः पाकर उनके बल से गई हुई आँखों को पुनः पाया एवं राजसभा में जाकर उसके महत्व को प्रकट किया। वनस्पति आयुर्वेदीय औषध में कितना सामर्थ्य है कहा है कि- **ऐसा कोई अक्षर नहीं जो मंत्र न हो। ऐसा कोई पौधा नहीं जो औषध न हो।**

**देशी औषधियां-** चिरायता, गिलोय, नागर मोथा, ग्वारपाठा, वच, अश्वगंधा, ईसबगोल आदि उपयोगी है।

**वनस्पतियां और उनके औषधीय गुण-** आज व्यक्ति का खानपान संयमित न होने से उनके शरीर में बात-पित्त-कफ इत्यादि विकृति पाई जाती है। पहले व्यक्ति का भोजन संयमित, सात्विक, शांतिकारक एवं शक्तिवर्धक था और साथ ही इस बात का विचार था कि किस मौसम में क्या, कब और कैसे ग्रहण करना उचित होगा।

श्रावक एवं श्रमणों को आरोग्य लाभ, धर्म ध्यान, खुशहाली एवं समृद्धशाली जीवन बनाने के लिये (हम यहाँ फल, सब्जी, अनाज, मेवा व मसाले आदि की प्रकृति के बारे में तथा वह पदार्थ किस रोग में उपयोगी है हमारे त्यागी, व्रती, साधर्मी बंधु एवं साधु वर्ग इससे अवश्य ही समुचित लाभ उठाकर धर्म ध्यान को वृद्धिंगत होंगे।)

**विभिन्न प्रकार के फल-**

1. **सेव-** यह फल शक्तिवर्धक है, क्रोध को शांत करता है, इसकी तासीर ठंडी होती है।
2. **नाशपाति-** यह शक्तिवर्धक है, पाचक होती है, इसकी तासीर ठण्ठी है।
3. **अन्नानास-** यह गर्मीनाशक है, शुगर के रोगी के लिये हानिकारक है, ठण्डा होता है।
4. **अनार-** यह रक्तवर्धक, गर्मी नाशक, क्षुधावर्धक, हृदय व कंठरोग नाशक है, तासीर ठंडी है।
5. **फालसा-** यह गर्मीनाशक और ठण्डा है।
6. **जामुन-** गर्मीनाशक, क्षुधावर्धक, सिरदर्द को दूर करता है। शुगर के लिये गुणकारी है।
7. **अमरुद-** यह ठण्डा और रोचक होता है, भूनकर खाने से सूखी खांसी में लाभदाय है।
8. **पपीता-** यह मातृदुग्धवर्धक है, शक्तिवर्धक एवं रोचक होता है। तासीर गरम है।
9. **नारंगी-** यह रक्तशोधक व तासीर में ठण्डी होती है।
10. **आलू बुखारा-** यह ज्वर के लिये लाभदायक, इसकी तासीर गरम है।
11. **आम-** ठण्डा, शक्तिवर्धक और घृत की कमी की पूर्ति करता है।
12. **बेल-** इसमें स्वर्ण एवं चांदी भस्म की मात्रा पाई जाती है। दस्त में लाभकारी, तासीर ठण्डी है।
13. **नींबू-** यह गर्मीनाशक, जायकेदार तथा पाचक होता है, ठण्डा होता है, शरीर के विषैले तत्वों का नाश करता है। नींबू के रस में भीगी हुई सौंफ में थोड़ा सा सेंधा नमक मिलाकर भोजन के बाद खाने से पेट का भारीपन दूर होता है। भूख खूब लगती हैं। मल साफ होता है।
14. **आंवला-** यह अमृत के समान गुणकारी, तासीर ठण्डी है, धार्मिक दृष्टि से परम पवित्र है। व्यक्ति दीर्घायु हो जाता है स्मरण शक्ति में आशातीत बढ़ोतरी, गरुड-पुराण में लिखा है सौ वर्ष जीने के इच्छुक व्यक्ति को नित्य आंवले मिले हुये पानी से नहाना चाहिये।
15. **खरबूजा-** यह दस्तावर होता है, इसकी तासीर गरम है, अधिक लेना हानिकारक है।
16. **तरबूज-** यह शरीर में तरावट लाता है, अधिक लेना हानिकारक है।
17. **डाम (कच्चा नारियल)-** इसका पानी ठण्डी एवं गर्मीनाशक है।
18. **लीची-** यह उन्माद को दूर करती है, तासीर ठण्डी होती है।

**सब्जियाँ-**

1. कुकर विटेसी परिवार की सब्जियां बहुत लाभदायक हैं। तोरई, गिलकी, लोकी,





परमल, टिण्डा, खीरा, कद्दू इनकी तासीर ठण्डी, भूखवर्द्धक, स्वादिष्ट, मस्तिष्क की गर्मी को दूर करती हैं।

2. **करेला-** तासीर गर्म एवं शुगर में लाभदायक हैं।
3. **टमाटर-** रक्तवर्धक हैं, आयरन पाया जाता है तासीर ठण्डी हैं।
4. **तुलसी-** तासीर गर्म है। सर्दी-जुकाम में लाभकारी है।
5. **पौदीना-** तासीर ठण्डी है। उल्टी बंद करता है।

**मसाले-**

1. **धनिया-** पाचक एवं स्वादिष्ट होता है। तासीर ठण्डी है।
2. **हल्दी-** तासीर गर्म, पेटदर्द, बदनदर्द में लाभकारी, रक्तशोधक है।
3. **मैथी-** तासीर गर्म, इसका पानी मधुमेह में लाभकारी, वात व्याधिनाशकर जोड़ों के दर्द में लाभदायक स्वादिष्ट है।
4. **इलायची-** तासीर ठण्डी, स्वादिष्ट एवं उल्टी को रोकती है।
5. **लौंग-** तासीर गर्म, चबाकर खाने एवं दांत में लगाने से दर्दनाशक, रोगाणु कृमिनाशक उल्टी वमन को रोकती है।
6. अजवाइन- काली मिर्च, हींग भी उपयोगी औषधियां हैं।
7. **हरड़-** आयुर्वेर्दिय ग्रंथों में हरड़ की विशेष व्याख्या की है। इसे मां की संज्ञा दी है। हरड़ माता के समान कल्याणकारी है। माता तो कभी क्रोधित हो सकती है। लेकिन पेट में पहुंची हरड़ कभी भी क्रोधित नहीं होती, जिसके घर माता नहीं है, हरड़ उसकी माता है ऐसा आयुर्वेद महर्षियों ने कहा है। आयुर्वेदीय ग्रंथ भाव प्रकाश में 7 प्रकार की हरड़े बताई हैं। विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्त चेतकी इनमें 5 रस पाये जाते हैं। तासीर गर्म है, पाचक है, नित्य सेवन से उम्र बढ़ती है, बुद्धि बढ़ती है। आंख, नाक, कान, जीभ इत्यादि को शक्ति प्रदान करती है। इसे चबाकर, चूर्ण बनाकर पानी में उबालकर, भूनकर सेवन किया जा सकता है। हरड़ रसायन भी है।

जैनागम के अनुसार हमारे तीर्थ और श्रमण बड़े ही प्रकृति प्रेमी एवं पर्यावरण के रक्षक थे, उन्होंने तप के लिये शाल्मलि, बरगद, अशोक, आश्वत्य, जामुन आदि वृक्षों के तलभाग को चुना और पहाड़ियों से निर्वाण प्राप्त किया। वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया कि ऐसे वृक्षों से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। तीर्थंकरों के चिह्न में भी वनस्पति को स्थान मिला है, जैसे-श्वेत, कमल, लाल कमल, कल्पवृक्ष आदि।

आचार्य यतिवृषभ ने लगभग दूसरी शताब्दी तिलोयपण्णति ग्रंथ में लिखा है कि **वणसंदा मंडिदा विचित्तेहि 4/2272** जो राष्ट्र नाना प्रकार की वनस्पतियों से सुशोभित रहता है वहां पर किसी भी समय अकाल नहीं पड़ता।

आचार्य रविषेण ने पदम पुराण में वृक्षों की उपयोगिता बताते हुये लिखा है कि- **प्रतिष्ठां गमिष्यतियैः वृक्षा समरोपिता** वरांगचरित्र, धर्मशर्माभ्युदयः आदिपुराण एवं हरिवंशपुराण में

वनस्पति बन उद्यानों का वर्णन मिलता है। भोगभूमि में 10 प्रकार के कल्पवृक्ष मिलने का संदर्भ मिलता है- जिनसे समस्त प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाया करती थी। जैसे दीपांग एवं ज्योतिलिंग कल्पवृक्ष अंधकार का नाशकर सदैव दिन का उजाला बनाये रखते थे। भोजनांग-समस्त प्रकार की भोजन सामग्री, पानांग- समस्त प्रकार के पेय पदार्थ, अलयांग- समस्त प्रकार की आवास सामग्री आदि की पूर्ति होती थी।

कालान्तर में जब समस्त प्रकार के कल्पवृक्ष नहीं रहे, तब मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति वृक्षों से करने लगा। वृक्ष हमारा अनेक रूपों में हित साधन करते हैं। वृक्षों की पत्तियों में पाये जाने वाला क्लोरोफिल कार्बन डाई ऑक्साईड को ऑक्सीजन में बदल देता है। एक वृक्ष औसतन 50 वर्ष के जीवन में लगभग 15 लाख 70 हजार मूल्य की ऑक्सीजन देकर वायु शुद्धिकरण एवं आर्द्रता को नियंत्रित करता है।

**कविता**

# चन्द्रप्रभ स्तवन

निर्यापक श्रमण मुनिश्री योगसागर जी महाराज

श्री चन्द्रनाथ अरहन्त विलोक पूँ ।
है अन्तर हैं अन्तरंग बहिरंग प्रकाश पुंज ॥
काया अहो स्फटिक निर्मल पर दर्शी ।
मैं आपसा बन सकूं निज आत्म दर्शी ॥1॥
आदर्शवान तव जीवन को नमोस्तु ।
मिथ्यात्व नाशक दिवाकर को नमोस्तु ॥
सम्यक्त्व रत्न निधि दायक को नमोस्तु ।
संसार से तरण तारक को नमोस्तु ॥2॥
अम्बोज नील सम नेत्र सुशोभते हैं ।
निर्ग्रन्थ गात्र तप से सुरभित से है ॥
जो रागद्वेष मय संस्कृति से परे हैं ।
ये शुद्ध बुद्ध शिवसिद्ध विदेह से हैं ॥
निष्काम भक्ति परमोत्तम कार्यकारी ।
देवादि अतिशयादि प्रभाव कारी ॥
है निर्जरा भव भवान्तर पाप की है ।
यों ज्ञान तो प्रथम बार हमें मिली है ॥4॥
कोई विकल्प मन में अभिलाष ना हैं ।
यों है भावना हृदय में उठते सदा है ।
यों भक्ति में राहत लीन बना रहूं मैं ।
जो आप का जप करूं तव-सा बनू मैं ॥5॥

# मानव तस्करी दुनिया की सबसे बड़ी समस्या

❊ विजय कुमार जैन, राघौगढ़ (म.प्र.) ❊

मानव तस्करी एक प्रकार का बड़ा अपराध है जिसमें किसी मानव को खरीदा और बेचा जाता है खरीदे जाने वाले के बाद उसका इस्तेमाल मुफ्त में आजीवन मजदूरी कराने, उसके शरीर के अंगों को बेचने एवं अन्य लाभ प्राप्त करने हेतु किया जाता है इनमें इंसानों को मुख रूप से औरतों और बच्चों को खरीदा और बेचा जाता है। यौन शोषण, देह व्यापार, जबरन मजदूरी, जबरन शादी, घरेलू बेगार करवाना, गोद देना, भीख मंगवाना, अंगों का प्रत्यारोपण करवाना, मादक पदार्थों को एक स्थान से दूसरे स्थान भिजवाने के लिये महिलाओं एवं बच्चों की मानव तस्करी संगठित अपराध है और मानवाधिकार के हनन का सबसे घृणित नमूना है। सारी दुनिया में मानव तस्कारी गंभीर समस्या है, इस समस्या को जड़ से समाप्त करना संभव ही नहीं है। हम यह कह सकते हैं मानव तस्करी रोकने जो प्रयास हो रहे हैं उनसे यह अपराध कुछ कम हुआ हैं। हाल ही में एक अमेरिकी एजेंसी ने मानव तस्करी पर जो रिपोर्ट जारी की है। उस रिपोर्ट में उल्लेख किया है मानव तस्करी रोकने के उपायों के आधार पर भारत द्वितीय श्रेणी में हैं।

अमेरिका का विदेश मंत्रालय हर वर्ष एंट्री ट्रेफिकिंग रिपोर्ट जारी करता है। उक्त जारी ट्रेफिकिंग इन पर्सन्स रिपोर्ट में भारत में मानव तस्करी रोकने के आधार पर द्वितीय श्रेणी के देश के रूप में माना है। भारत सरकार अमेरिका के ट्रैफिकिंग विक्टिम्स प्रोटेशन एक्ट के न्यूनतम मानदंडो को प्रभावी तरीके से लागू नहीं कर सकती है। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया है मानकों के अनुपालन का भारत में प्रयास किया जा रहा है।

हम भारत में मानव तस्करी के मामलों की बात करें तो टी.आर.पी रिर्पोट के अनुसार भारत में मानव तस्करी के अधिकांश मामले आंतरिक होना पाया गया है। इन मामलों में अधिकांश प्रकरण निचली पिछडी जातियों व धार्मिक अल्प संख्यकों से जुड़े होते हैं। सबसे ज्यादा खतरा इन जातियाँ पर ही रहता है। रिपोर्ट के अनुसार भारत में भवन या सड़क निर्माण, स्टील, कपड़ा उद्योग, अंडरग्राउंट केबल निर्माण, बिस्कुट एवं नमकीन कारखाने, फूलों की खेती और मछली पालन जैसे उद्योगों में डरा धमकाकर जबरन मजदूरी कराने की मानसिकता से मानव तस्करी ने तीव्र गति से विस्तार लिया है। बेगार बंधुआ मजदूरी सहित वेश्यावृत्ति के लिये देश में अवैध रूप से बेरोजगार अथवा जरूरतमंद लोगों को उचित नौकरी या रोजगार के अवसर दिलाने का झांसा देकर वयस्कों बच्चों युवतियों व महिलाओं को अपने जाल में फंसाते हैं। ग्लोबल मारच अगेंस्ट चाइल्ड लेबर एंड ट्रेफिकिंग व्यवसायिक यौन शोषण से छुड़ाये गये 60 प्रतिशत पीड़ितों ने यह स्वीकार किया है कि उचित रोजगार दिलाने के नाम पर मजबूर किया गया। जारी रिपोर्ट में उल्लेख किया है भारत में मानव तस्कारी रोकने शोषण से मुक्ति दिलाने अनेक संस्थायें काम कर

रही हैं, विडंबना यह है जिनको तस्कारी से मुक्त कराया जाता है उन पीड़ितों को संरक्षण पुनर्वास देखरेख करने की शासकीय सेवाएँ पूरी तरह से सक्रिय नहीं हैं अथवा विफल हैं।

भारत में कानून प्रवर्तन में प्रगति की सही जानकारी नहीं मिल पाती क्योंकि अधिकारी तस्करी रोकने के समुचित व गैर एकीकृत आंकड़े नहीं देते। रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरों के आंकड़ों में निरीक्षण, अभियोजना या दोष साबित होने वाले मामले शामिल नहीं किये जाते और आंकड़ों में पीड़ितों की सजा के मामले होते हैं, जबकि वेश्या वृत्ति के लिये ग्राहक तलाशने व सेक्स तस्करी पीड़ितों को छिपाने में संलिप्तता को आपराधिक कृत्य घोषित करने वाले अनैतिक व्यापार अधिनियम को पूरी क्षमता से लागू नहीं किया जाता है।

भारत में महिलाओं की तस्कारी के मुख्य केन्द्र दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, गुजरात सहित भारत नेपाल सीमा क्षेत्र हैं। मानव तस्कारी निवारण संरक्षण और पुनर्वास बिल 2018 तत्कालीन महिला एवं बाल विकास मंत्री मेनका गांधी के कार्यकाल में बनाया गया है यह कानून सभी प्रकार की मानव तस्करी की जांच उसके निवारण संरक्षण और पीड़ितों को न्याय दिलाने का प्रावधान करता है। इस कानून में यह भी प्रावधान किया है कि किसी व्यक्ति को दूसरे अपराध में 10 वर्ष की सजा हो गई है तो उस व्यक्ति पर यह कानून लागू नहीं होगा। भारतीय दण्ड संहिता की धारा 370 में सेक्स ट्रेफिकिंग के विभिन्न तरीकों का निषेध और सात वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक की सजा का प्रावधान किया गया है। साथ ही यह भी प्रावधान है मानव तस्कारी में सरकारी अधिकारियों की संलिप्तता पायी जाना प्रमाणित होता है उसको आपराधिक कृत्य मानते हुये अधिकतम आजीवन कारावास की सजा दी जायेगी। भारतीय दंड संहिता 1860 के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता 2023 को एक जुलाई 24 से लागू किया गया है। पुरानी भारतीय दंड संहिता की धारा 370 के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता में धारा 143 स्थापित की गई है। पुरानी धारा 370 और नई धारा 143 में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। मानव तस्कारी रोकने इस कानूनी प्रावधान के अलावा बंधुआ श्रम प्रणाली अधिनियम, बाल श्रम अधिनियम, किशोर न्याय अधिनियम और भारतीय दण्ड संहिता के अन्य प्रावधानों के अन्तर्गत बेगार के विभिन्न तरीकों का निषेध किया गया है।

अमेरिका अपने टीवीपीए कानून के न्यूनतम मानकों पर कार्यान्वयन के आधार पर विभिन्न देशों का वर्गीकरण करता है। प्रथम श्रेणी में वे देश आते हैं जहाँ पर टीवीपीए के न्यूनतम मानकों को पूरी तरह से लागू करते हैं जबकि दूसरे स्थान पर वे देश आते हैं, जो न्यूनतम मानकों को पूरी तरह लागू नहीं कर पाते, लेकिन प्रयासरत होते हैं। टीवीपीए न्यूनतम मानकों की व्यापकता के चलते भारत अब तक सफल नहीं हो पाया है। सारी दुनिया में चल रहे अनेक प्रयासों के बावजूद यह विचारणीय प्रश्न है कैसे रूकेगी मानव तस्करी ?





# गोत्र विचार

✻ लेखक- पं. फूलचंद सिद्धान्तशास्त्री ✻

मनुष्यों के भेदों में गोत्र विभाग- धवला प्रकृति अनयोगद्वार का उद्धरण देकर यह तो हम पहले ही बतला आये हैं कि जो साधु-आचार वाले आर्य मनुष्य हैं या जिन्होंने इनसे पूरी तरह से सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करके आयत्व प्राप्त कर लिया उनके उच्च गोत्र होता है। इससे यह भी निष्कर्ष निकल आता है कि जो आर्य साधु आचार वाले नहीं हैं। उनका तथा म्लेच्छों का नीच गोत्र होता है। अब यहाँ इसका विचार करना है शिक्षा योग्य साधु आचार वाले कौन से आर्य पुरुष माने गये हैं। इस प्रश्न के निर्णय के लिये हम पाठकों का ध्यान धवला प्रकृति अनुयोगद्वार के निम्न वाक्यांश की ओर खींचते हैं -

**नेक्ष्वाकुकुलाद्युत्पत्तौ, काल्पनिकानां तेषां परमार्थेतेऽपत्वात्, द्विड्बाह्मण-साधुप्वपि उच्चैगेत्रिभ्योदयदशेनात्।**

इक्ष्वाकुकुलादिकी उत्पत्ति में उच्च गोत्र का व्यापार नहीं होता, क्योंकि वे इक्ष्वाकु आदि कुल काल्पनिक हैं वास्तव में वे नहीं है। दूसरे वैश्य, ब्राह्मण और साधुओं में भी उच्च गोत्र का उदय देखा जाता है।

यद्यपि यह वाक्य गोत्र कर्म के विचार के समय पूर्व पक्ष के रूप में आया है पर इससे इतना तो पता चल ही जाता है कि उच्च गोत्र का उदय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और साधुओं में माना गया है। अतः इससे यह निष्कर्ष सहज ही निकाला जा सकता है कि इनके अतिरिक्त जो समाज विद्यानाचगानवृत्ति, शिल्पवृत्ति ओर सेवावृत्ति आदि के आधार से निर्मित हुई है, जिसे सूत्र कहते हैं वे आर्य होते हुये भी नीचगोत्री होते हैं।

इस उपर्युक्त कथन का यह सारांश हे कि सूत्र आर्य और म्लेच्छ ये नीच गोत्री होते हैं और शेष आर्य उच्चगोत्री होते हैं।

यहाँ दो महत्त्व के प्रश्न उपस्थित होते हैं। जो निम्न प्रकार हैं-

1. जब सभी म्लेच्छों के नीचगोत्र का उदय रहता है तो पर्याप्त मनुष्य के सामान्य जो 102 प्रकृतियां उदय योग्य बतलाई हैं उनमें से एक उच्च गोत्र कम होकर इनके एक सौ प्रकृतियों ही उदययोग्य कम होगी। और यदि यह ठीक है तो इनकी उदयादि व्यवस्था कथन अलग से क्यों नहीं किया। इसी प्रकार इनके एक मिथ्यात्व गुणस्थान ही कहना था ?

2. उदयादि का कथन करते समय कुभोगभूमिकों के मनुष्यों का किनमें अंतर्भाव किया है। भोग भूमि के मनुष्यों में या पर्याप्त मनुष्यों में। कहीं भी अन्तर्भाव करने पर बाधा आती है ? यदि भोगभूमि में मनुष्यों में अंतर्भाव किया जाता है तो उनके उच्चगोत्र के उदय की प्राप्ति होती है और यदि पर्याप्त मनुष्यों के अन्तर्भाव किया जाता है तो भी जिस प्रकार म्लेच्छों के निमित्त से दोष दे आये हैं उसी प्रकार यहां भी दोष उत्पन्न होते हैं ?

ये दोनों प्रश्न महत्व के हैं यह बात स्वीकार कर लेने में हमें कोई आपत्ति नहीं प्रतीत होती है। पर पहले प्रश्न का समाधान हो सकता है जो निम्न प्रकार है-

बात यह है कि मनुष्यों के आर्य और म्लेच्छ भेद सामाजिक परम्परा से सम्बन्ध रखते हैं। कुत्ता और बिल्ली में जिस प्रकार तिर्यंच होते हुये भी जातिगत भेद है उस प्रकार आर्य और म्लेच्छ मनुष्यों में नहीं। त्रिकाल में भी कुत्ता बिल्ली नहीं हो सकता और बिल्ली कुत्ता नहीं। पर मनुष्यों की ऐसी बात नहीं है। जो आज म्लेच्छ है वह अपने संस्कारों और परम्पराओं छोड़कर कालान्तर में आर्य हो सकता है। जो आर्य है वह उसी प्रकार म्लेच्छ हो सकता है। यही समय है कि करणानुयोग में मनुष्यों में प्रकृतियों का उदय बतलाते हुये इनमें उदय-योग्य प्रकृतियों की अलग-अलग व्यवस्था नहीं की। अब रह गई गुणस्थानों की बात तो जब तक म्लेच्छ मनुष्य आर्य हो सकता हो उसे आर्यों के संसर्ग से सम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानों के प्राप्त करने में कौन सी बाधा आ सकती है ? अर्थात् कोई नहीं।

दूसरे प्रश्न का निर्णय करना थोड़ा कठिन है। उसमें किसी भी प्रकार के तर्क को आश्रय देना इष्ट नहीं। सम्भव है अनुसंधान में कभी इस पर अधिक प्रकाश डाला जा सके।

**एक भव में गोत्र परिवर्तन होता है।**

गोत्र परिवर्तन के विषय में हम कुछ व्यक्ति में इसके पहले आगम प्रमाण उपस्थित कर देना चाहते हैं। ये प्रमाण धवला उदीरणा अनुयोगद्वार के हैं।

**अजसफित्तिदुब्भगअणदेज्जणीबागोदाणं उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? सब्बविसुद्धों असंजद सम्माइट्ठी से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति।**

अयशः कीर्ति, दुर्भग अनादेय और नीच गोत्र की उत्कृष्ट प्रवेश उदीरणा किसके होती ? जो तदनन्तर समय में संयम को प्राप्त होगा ऐसे सर्वविशुद्ध असंयतसम्यग्दृष्टि के होती है।

पाठक कर्मकाण्ड के उदय-प्रकरण को देखकर जान सकते हैं कि इन चार प्रकृतियों में से प्रारंभ की तीन प्रकृतियों की चौथे गुणस्थान के अंत में और नीच गोत्र की पांचवें गुण स्थान के अंत में उदय या उदीरणा व्युच्छित्ति होती है। अब कोई असंयमसम्यग्दृष्टि जीव, जिसके उक्त चार प्रकृतियों का उदय हो रहा है, सकल संयम को स्वीकार करें तो उसके इनके स्थान में यशः कीर्ति सुभग, आदेय ओर उच्च गोत्र का उदय हो जायेगा। इससे स्पष्ट हो जाता है कि एक भव में गोत्र परिवर्तन होता है।

णीचागोदस्स जह. एगममओ उच्चागोदादो णीचाागोदं गंतूण तत्थ एगसमयमच्छिय विदियसमए उज्जागो दे उदयभाग दे एगसमओ लब्भदे। उक्क. असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। उच्चागोदस्स जह. एगसमओ। उत्तर-सरीरं विउव्विय एगसमएण मुदस्स तदुवलम्भादो। एवं णीचागोदस्स वि उक्क. सागरोवमसदपुघत्तं।

नीचगोत्र की उदीरणा जघन्यकाल एक समय है। कोई जीव उच्चगोत्र से नीचगोत्र गया और वहां एक समय तक रहा। पुनः दूसरे समय मे उसके उच्चगोत्र उदय में आ जाने पर नीचगोत्र की उदीरणा का एक समय प्राप्त होता है। तथा नीच गोत्र की उदीरणा का उत्कृष्टकाल असंख्यात पुद्‌गल परिवर्तन है। उच्चगोत्र की उदीरणा का जघन्यकाल एक समय है। जैसे, किसी ने उत्तर शरीर की विक्रिया की और वहां एक समय रहकर मर गया तो उसके उच्चगोत्र की उदीरणा का एक





समय काल पाया जाता है। इसी प्रकार नीचगोत्र की अपेक्षा भी एक समय जानना चाहिये। उच्चगोत्र उत्कृष्टकाल सौ पृथक्तवसागर है। इससे भी यही निश्चित होता है कि एक भव में गोत्र का परिवर्तन पाया जाता है-

**उच्चणीचागोदाणं जह. एगसमओ। उक्क. णीचागोदस्स सागरोवमसदपुधत्तं। उच्चागोदस्स उदीरणंतरमुक्क. असंखे. पो. परियट्टा।**

उच्चगोत्र और नीचगोत्र की उदीरणा जघन्य अंतर एक समय है। नीचगोत्र की उदीरणा का उत्कृष्ट अंतर सौ पृथक्वसागर और उच्चगोत्र की उदीरणा का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्‌गल परिवर्तन प्रमाण है। किसी एक उच्चगोत्री एक समय तक नीच गोत्र का उदय होकर पुनः दूसरे समय में उच्चगोत्र उदय हो गया तो उसके उच्च गोत्र की उदीरणा का जघन्य अंतर एक समय प्राप्त हुआ। यही बात नीच गोत्र के सम्बन्ध में भी समझना चाहिये।

इससे भी यही निश्चित होता है कि एक भव में गोत्र परिवर्तन होता है। यहाँ जघन्य और उत्कृष्टकाल या अंतर ही कहा है मध्यमकाल या अंतर दो समय से लेकर एक समय कम उत्कृष्टकाल या अंतर तक मध्य के जितने समय हों उतने विकल्परूप होता है। इससे यह भी निश्चित हो जाता है कि जिसने एक पर्याय में गोत्र परिवर्तन किया उसे पुनः अपनी पहले की स्थिति में पहुंच जाये।

इसी प्रकार श्वेताम्बर परम्परा में भी गोत्र परिवर्तन का उल्लेख मिलता है। यथा-

**गोउत्तमस्स देव णरा य वइणो च उण्हमियरासि।- कर्मप्रकृति 17**

**गोउत्तम देवा तित्त उच्चगोयस्स सठवे देया उदीरणा। णराय त्ति मणुयाण वि कोति उच्चगोयं उदीरेति। वदणो य त्ति जो वि णीजाति तो यती सो वि उच्चागोयं उदीरेति। टीका**

इसका भाव यह है कि सब देव उच्चगोत्र की उदीरणा करते हैं। मनुष्यों में कोई उच्चगोत्र की उदीरणा करते हैं। तथा जो नीच जाति से आकर व्रती होता है वह भी उच्चगोत्र की उदीरणा करता है।

सौभाग्य की बात है कि दिगम्बर और श्वेताम्बर परम्परा में कर्म विषय के साहित्य प्रायः समान रूप से चला रहा है। ऊपर जो कर्म प्रकृति का उदाहरण उपस्थित किया है उससे धवला की मान्यता की ही पुष्टि होती है। धवला का जो सबसे पहला उद्धरण हमने उपस्थित किया है उससे भी यही सिद्ध होता है कि एक नीचगोत्री जीव सकल संयमी हो जाता है। पर जिस समय उसके संयम की प्राप्ति होती है उस समय गोत्र बदल जाता है और नीच गोत्र के स्थान में उच्चगोत्र का उदय होने लगता है। कर्म प्रकृति के उक्त उद्धरण से भी इसी बात की पुष्टि होती है।

गोत्र परिवर्तन के इतने उल्लेखों की रोशनी में अब हम युक्ति से भी यह सिद्ध कर देना चाहते हैं कि एक पर्याय में गोत्र बदल जाता है। पर यह नियम केवल कर्मभूमि के मनुष्यों में ही लागू होता है, अन्य के नहीं। अन्य जीवों के अपनी-अपनी गति के अनुसार नीचगोत्र और उच्चगोत्र का उदय निश्चित है। केवल कर्मभूमि के मनुष्य ही ऐसे है जहाँ विकल्प से दोनों गोत्रों का उदय सम्भव है। इसका भी कारण है और वह यह कि जिस प्रकार अन्य गतियों में या भोगभूमि के मनुष्यों में उनकी वृत्ति निश्चित है उसमें भी बदल नहीं होती। कर्मभूमि के मनुष्यों की यह बात नहीं। ये परिस्थिति

के अनुसार अपनी वृत्ति बदलते रहते हैं और उसके अनुसार उनके नीच उच्च-भेदगत अनेक प्रकार के परिणाम भी होते रहते हैं । यह दूसरी बात है कि सामाजिक व्यवस्था के अनुसार हम व्यक्तिगत परिणामों की और ध्यान न दें। पर गोत्र का जहां तक व्यक्तिगत सम्बन्ध है वहां तक व्यक्ति की गोत्रकर्मानुसार होने वाली विविध दशाओं को कौन रोक सकता है ? यही सबब है कि इन परिणामों के आधार से दो गोत्रों को छह भेदों में बांट दिया है-

**उच्चुच्च उच्च तह उच्चणोच णीचुच्च णीचणीचं च । जस्सदियेण भावा णीचुच्च विवज्जिओ तस्स।**

यह उद्धरण धवला टीका खुद्दाबन्ध का है। इसका यह भाव है कि जिसके उदय से उच्च उच्च उच्चनीच, नीच उच्च, नीच और नीच नीच भाव होता है इस गोत्र कर्म के प्रभाव होने पर सिद्ध जीव नीच और उच्च भाव से रहित होते हैं ।

धवला के उदय और उदीरणा अनुयोगद्वार में लिख है कि नीचगोत्र केवल भव प्रत्यय है और उच्चगोत्र गुणस्थानप्रतिपन्न जीवों परिणामप्रत्यय और भवप्रत्यय दोनों प्रकार का है और अगुणप्रतिपन्न जीवों के केवल भव-प्रत्यय है। यहां परिणामों से देशसंयम और सकलसंयम का ग्रहण किया है। इसमें साता और असाता को भवप्रत्यय बतलाता है। यथा-

णीचागोदाणमुदीरणा एयंतभवपच्चइया । उच्चागोदाणमुदीरणा गुणपडिवण्णेसु परिणामपच्चइया। अगुणपडिवण्णेसु भवच्चइया। को पुण गुणों संजमों संजमासंजमो वा।

आशय यह है कि जिस प्रकार जहां साता और असाता दोनों का उदय सम्भव है वहां साता से असाता के होने में और असाता के होनेमें वह भी मुख्य कारण है। उसी प्रकार नीचगोत्र और उच्च गोत्र के उदय और उदीरणा के विषय में जानना। यह हम ऊपर ही बतला आये हैं कि कर्मभूमि के मनुष्य ही ऐसे हैं जहां एक पर्याय में दोनों का उदय हो सकता है, इसमें कोई बाधा नहीं है। केवल इतनी विशेषता है संयम को प्राप्त होने वाले के नीच गोत्र का उदय नहीं रहता उसके नियम से उच्चगोत्र का उदय हो जाता है। तथा किसी मनुष्य के देशसंयम के होने पर भी नीचगोत्र न रहकर उच्चगोत्र हो जाता है। इसके विदित होता है कि एक भव में गोत्र परिवर्तन होता है।

यतिवृषभ आचार्य ने अपने चूर्णिसूत्रों में अकर्मभूमियां मनुष्य के सकल संयम का निर्देश दिया है। ये अकर्मभूमियां मनुष्य पांच खण्ड के म्लेच्छों को छोड़कर और कोई नहीं। पर इनके वीरसेन स्वामी के द्वारा की गई उच्चगोत्र की व्याख्या के अनुसार नीचगोत्र होता है। और यह ऊपर बतला आये हैं कि सकल संयमी के नीचगोत्र नहीं होता। इससे भी यही निष्कर्ष निकलता है कि एक भव में गोत्र बदलता है।

इस प्रकार हमने गोत्र विचार शीर्षक के चार अवान्तर विभागों द्वारा गोत्र का का विचार किया है। इसमें हमने अभी चरणानुयोग और करणानुयोग के पार्थक्य को दिखाने का यत्न नहीं किया है । यद्यपि उसके बिना यह लेख अभी अधूरा ही है। पर हम सोचते हैं कि इस पर अनुकूल और प्रतिकूल विचार हो जाने के बाद जो प्रमेय निष्पन्न हों उनके आधार से इस विषय का एक व्यवस्थित निबन्ध तैयार किया जाये तो सर्वदा के लिये उपयोगी होगी। इसलिये हम इतना ही लिखकर वर्तमान में इस लेख को समाप्त कर रहे हैं आशा है दूसरे विद्वान् तत्त्वमीमांसा की दृष्टि से सप्रमाण अपने विचार व्यक्त करने की कृपा करेंगे।





# गोत्र विचार

**✻ लेखक- पं. फूलचंद सिद्धान्तशास्त्री ✻**

अनेकांत की गत किरण नं. 8 में जो मेरे गोत्र विचार शीर्षक लेख का आद्य भाग प्रकाशित हुआ है उसे पढ़कर अनेक विद्वान् पाठकों ने कुछ और ज्ञातव्य बातों पर प्रकाश डालने के लिये लिखा है। उनकी सूचनाओं का संकलन निम्न प्रकार से किया जा सकता है -

1. संतान का जो आपने अर्थ किया है वह मननीय है उस पर थोड़ा और प्रकाश डालिये।

2. गोत्र कर्म जीव विपाकी है, अतः उसका शरीर नो कर्म द्रव्य कर्म कैसे हो सकता है।

3. देवों के केवल उच्च गोत्र का और तिर्यंच तथा नारकियों के नीचगोत्र का ही उदय होता है, अतः इनके गोत्र के अवान्तर भेदों का परस्पर संक्रमण नहीं हो सकता। मनुष्यों को दोनो गोत्रों का उदय होता है इसलिये उनके दोनों का संक्रमण सम्भव है।

4. सत्ता में स्थित द्रव्य का उदयाबलि में आये हयु द्रव्य में संक्रमण होता है।

अब आगे इनका क्रम में विचार करते हैं-

**आर्यप्रत्ययाभिधानव्यवहारनिबन्धानाम्** यह वाक्य आया है जिससे आचार्य ने सादृश्य सामान्य की ओर इशारा किया है। इससे मालूम होता है कि गोत्र में समान आचार वालों की संतान ली गई है। यद्यपि आचार मोहनीय उदयादि से होता है पर जीवों को आचार की अपेक्षा समानता या एक रूपता बनाये रखना और उसकी परम्परा चलाना एक गोत्र कर्म का कार्य है। प्रत्येक जीव का आचार अपने अपने चारित्र मोहनीय के हीनाधिक उदयादि के अनुसार हीनाधिक भी होगा पर इस व्यक्तिगत हीनाधिकता के रहते हुये जो उन जीवों के उसकी समानता देखी जाती है उसकी उस समानता की परम्परा का प्रयोजन गोत्रकर्म है और इसी अर्थ में संतान शब्द चरितार्थ है। इससे मालूम होता है कि समान निर्माण का गोत्रकर्म मुख्य अंग है यदि गोत्र को समाज का पर्यायवाची भी कहा जाये तो कोई अव्युक्ति न होगी। फरक केवल कारण और कार्य का है। गोत्र अदृश्य भाव है जो कि कारण है और समाज दृश्यफल है जो कि उसका कार्य है। यद्यपि यह कहा जा सकता है कि यह काम तो जातिकर्म से भी होता है। जैसे इसलिये उनका एक समाज हुआ। फिर गोत्रकर्म की क्या आवश्यकता ? सो इसका यह समाधान है कि जाति तो पर्याय की अपेक्षा नियामक है और गोत्र व्यवहार की अपेक्षा अतः इन दोनों में भेद है। यही सबब है कि हमने गोत्र का अर्थ व्यवहार की परम्परा या व्यवहार वालों की परम्परा किया है।

गोत्र कर्म जीव विपाकी है फिर भी उसका नो कर्म द्रव्यकर्म शरीर को मान लेने में कोई आपत्ति नही हों।एक बाधा अवश्य है कि उच्च और नीच गोत्र का उदय भव के प्रथम समय में होता है और शरीर की प्राप्ति प्रथम समय से लेकर चौथे समय तक किसी एक समय में होती है। अतः प्रारंभ में शरीर उच्च और नीच गोत्र के उदय का अव्यभिचारी कारण नहीं है। यही सबब है कि सिद्धान्तशास्त्रों में गोत्र को भवप्रत्यय और गुणप्रत्यय स्वीकार किया है। गोत्र के दोनों भेद को भवप्रत्यय और गुणप्रत्यय स्वीकार किया है। गोत्र के दोनों भेदो में से नीचगोत्र तो भवप्रत्यय ही है

और उच्च गोत्र भवप्रत्तय तथा गुणप्रत्यय दोनों प्रकार का होता है। इसका यह अभिप्राय है कि जिस भव में जिस गोत्र के उदय की संभावना है उसमें उसी का उदय होता है अन्य का नहीं। अन्यत्र तो एक एक गोत्र के उदय की ही व्यवस्था है। पर कर्मभूमि के मनुष्य ऐसे हैं जिनके किसी भी गोत्र का उदय हो सकता है। हाँ यदि कोई उच्च गोत्री जीव नीच आचार वाले जीवों की परम्परा में उत्पन्न हो गया और समझदार होने पर उसका उस परम्परा के प्रति अनुराग बढ़ गया तो उसके उच्च गोत्र के स्थान में नीचगोत्र का उदय हो जायेगा। और यदि उसने उस परम्परा का त्याग कर दिया तो उसके उच्च गोत्र का ही उदय बना रहेगा। इसी प्रकार नीच गोत्र के सम्बन्ध में भी समझना चाहिये। नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती इसी अर्थ में उच्च और नीच शरीर को उच्च और नीच गोत्र का नो कर्मद्रव्य कर्म कहा है। यदि हम ऐसा न मानकर इसके विपरीत उनके कथन का अर्थ करें जैसा कि वर्तमान में किया जाता है तो उनकी की हुई सारी व्यवस्था खटाई में पढ़ जाती है। उदाहरण के लिये नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती स्त्री वेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेद के उदय के लिये स्त्री, पुरुष और नपुसंक का शरीर नोकर्मद्रव्य कर्म कहा है। अब यदि यह ऐकान्तिक व्यवस्था मान ली जाये तो वेद के नो अंग ही नहीं बन सकते हैं और कारण के पहले कार्य की उत्पत्ति माननी पड़ती है। यहाँ यह विषय संक्षेप में लिखा है अन्यत्र मैं इसका विस्तार से विचार करने वाला हूँ। इस लिये जितना लिखा उससे सारा विषय साफ तो नहीं होता फिर भी उससे चिन्तकों को चिन्य और व्यवस्था की दिशा मिल जाती हैं।

संक्रमण बंध का ही एक भेद है। अंतर केवल इतना ही है कि बन्ध नये कर्मों का होता है और संक्रमण सत्ता में स्थित कर्मों का उसका प्रभाव उदय पर कुछ भी नहीं पड़ता है। अतः जो भाई यह समझे बैठे है कि जिसका जहां संक्रमण होता है उसका वहां कार्य अवश्य होता होगा, उनकी यह धारणा गलत है। अब किस गति में किस गोत्र का संक्रमण होता है इसके लिये हमें बंध पर ध्यान देना चाहिये क्योंकि बंधकाल में ही उसमें अन्य सजातीय प्रकृति का संक्रमण होता है ऐसा नियम है। चारों गति के जीवों के दोनों गोत्रों का बंध होता है अतः दोनों का संक्रमण भी होता है। जब उच्च गोत्र का बंध होगा तब उसमें नीच गोत्र का संक्रमण होगा। इससे यह निश्चय हो गया कि संक्रमण का उदय से कोई सम्बन्ध नहीं। हां, यदि संक्रमण से स्थिति और अनुभाग का उत्कर्षण और अपकर्षण लिया जावे तो इसके विषय में ऐसा नियम है कि उत्कर्ष तो बन्धकाल में ही होता है पर अपकर्षण बन्धकाल में भी होता है और बन्धकाल के बिना भी होता है। किन्तु उदयवाली प्रकृतियों में उदयनिषेक तक होता है जिसे उदीरणा कहते हैंः और अनुदयरूप प्रकृतियों में उदयावलि से बाह्य निषेकों तक ही होता है। सो चारों गतियों जहाँ जिस गोत्र का उदय हो वहाँ उसी की उदीरणा होती है अन्य की नहीं। इस प्रकार इस कथन से यह निश्चित हो गया कि चारों गतियों में दोनों गोत्रों का संक्रमण होता है, पर उसका उदय से कोई सम्बंध नहीं।

सत्ता में स्थित द्रव्य का उदयावलि में निश्चत होना इसी का नाम उदीरणा है सो यह क्रिया उदयवाली प्रकृति में ही होती है अन्य में नहीं क्योंकि उदीरणा उदय की अविनाभाविनी है। इसे परमप्रकृति संक्रमण नहीं कहना चाहिये। संक्रमण तो एक प्रकृति के निषेकों का अन्य सजातीय प्रकृति के निषेकरूप हो जाना कहलाता है। जिसका विशेष हम ऊपर कर आये हैं।

मेरी इच्छा है कि इस विषय पर लोग खूब विचार करें और लेखों द्वारा अपने अपने विचारों को व्यक्त करें।





**चलो देखें यात्रा**

# चूलगिरी (खानियांजी)

**नाम एवं पता-** श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री पार्श्वनाथ चूलगिरि, आगरा रोड़, जयपुर फोन- श्री प्रदीपचंद जी छाबडा-0141-2720424

**सुविधाये-** देश-भुषण निलय में सुविधा युक्त 28 कमरे, 6 अटेच, सामान्य 16 एवं 2 हॉल हैं। भोजन सशुल्क है।

**मार्गदर्शन-** जयपुर से 5 किमी. आगरा रोड पर पहाडी पर स्थित है। सिसोदिया गार्डन से 2 किमी है। सभी जगह से टैक्सी एवं ऑटोरिक्शा उपलब्ध है। 400 फीट पहाडी पर तलहटी से 1008 सीढिया चढ़कर भी क्षेत्र पर पहुँच सकते हैं। पदमपुरा-34, सांगानेर 20, आमेर 14, जग्गा बावडी गलता रोड पर -3 किमी.।

**महत्त्व एवं दर्शनः** क्षेत्र पर मंदिर एक है। तलहटी में प्राचीन राणाजी की नसिया विशाल कैम्पस में निर्मित है। क्षेत्र सन् 1964 में आचार्य देशभूषण महाराज जी के प्रयासो एवं प्रेरणा से निर्मित है। शांत एवं सुरम्य वातावरण में आस-पास का दृश्य नयनाभिराम है। क्षेत्र पर मूलनायक पार्श्वनाथ की साढे सात फीट प्रतिमा के अलावा महावीर भगवान की 21 फुट प्रतिमा तथा गुफा में चौबीसी एवं रत्न की प्रतिमायें है। विजय पताका महामंत्र क्षेत्र की विशेषता है।

**विशेषः** तलहटी से क्षेत्र पर पहुंचने के लिये सशुल्क वाहन की व्यवस्था है।

---


# पथरीधन चूर्ण

**पथरी की अचूक दवा**

**सेवन विधि–**

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

**नोट– यह औषधि निः शुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।**

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

**दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें**

आगम दर्शन

# क्या है सत् प्ररूपणा में ?

षट्खण्डागम ग्रंथ जीवस्थान, क्षुद्रकबंधक, बन्धस्वाभित्व विचय, वेदना, वर्गणा और महाबन्ध इन छह खण्डों में विभक्त है। उनमें जो प्रथम खण्ड जीव स्थान है उसमें से ये आठ अनुयोगद्वार हैं। 1. सत् प्ररुपणा 2. द्रव्यप्रमाणानुगम 3. क्षेत्रानुगम 4. अल्पबहुत्वानुगम। इनका यहाँ क्रम से विषय परिचय कराया जा रहा है-

सत्प्ररूपणा- यह पीछे ग्रंथनाम शीर्षक में स्पष्ट किया जा चुका है कि मूल ग्रंथ में कहीं कोई खण्ड-विभाग नहीं किया गया है। प्रकृत में जो छह खण्डों का विभाग किया गया है वह धवला टीका और इन्द्रनन्दि श्रुतावतार के आधार से किया गया है।

सर्वप्रथम यहाँ णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं आदि पंचनमस्कारात्मक मंगलगाथा के द्वारा जिसे अनादि मूलमंत्र माना जाता है।-अर्हदादि पाँच परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है। तत्पश्चात् दूसरे सूत्र के द्वारा चौदह जीवसमासों के मार्गनार्थ-चौदह गुणस्थानों के अन्वेषनार्थ चौदह मार्गणाओं को जान लेने योग्य कहा गया है।

जैसा कि धवला में स्पष्ट किया गया है इस सूत्र में उपयुक्त जीवसमास से यहाँ मिथ्यात्वादि चौदह गुणस्थान अभिप्रेत हैं। सुत्र में जिन मार्गणा स्थानों को ज्ञातव्य कहा गया है वे चौदह मार्गणास्थान कौन हैं, इसे आगे के सूत्र द्वारा स्पष्ट करते हुये उनके नामों का उल्लेख इस प्रकार किया गया है- गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या, भव्यत्व, सम्यक्त्व, संज्ञी और आहार।

तत्पश्चात् पूर्वनिर्दिष्ट चौदह जीवसमासों की प्ररूपणा की प्ररूपणा के निमित्तभूत उपर्युक्त सत्प्ररूपणादि आठ अनुयोग द्वारों को ज्ञातव्य कहा गया हैं (5-0)। इन भुमिका स्वरूप सात सूत्रों को सम्मिलित कर प्रकृत सत्प्ररूपणा अनुयोग द्वार में सब सूत्र 177 हैं।

सत्प्ररूपणा में सत् का अर्थ अस्तित्व और प्ररूपणा का अर्थ प्रज्ञापन है। इस प्रकार इस सत्प्ररूपणा अनुयोग के आश्रय से गति-इन्द्रियादि चौदह मार्गणाओं में जीवों के अस्तित्व का परिज्ञान कराया गया है। वह प्रथमतः ओद्य, अर्थात सामान्य या मार्गणा निरपेक्ष केवल गुणस्थानों के आधार से और तत्पश्चात् आदेश से, अर्थात् गति-इन्द्रिय आदी मार्गणाओं की विशेषता के साथ कराया गया है।

ओध से जैसे- मिथ्यादृष्टि हैं सासादन सम्यग्दृष्टि हैं, सम्यग् मिथ्यादृष्टि हैं, इत्यादिक विशेष रूप से यहाँ अपूर्वकरण प्रविष्टशुद्धिसंयतों, आनवृत्ति -बादर-साम्परायिक प्रविष्ट शुद्धि संयतों और सूक्ष्म साम्परायिक प्रवृष्टशुद्धि संयतो इन तीन (8,9,10) गुणस्थानों में उपशम श्रेणि की अपेक्षा उपशमकों के और क्षपकश्रेणि की अपेक्षा क्षपकों के भी अस्तित्व को प्रकट किया गया है।

इस प्रकार सामान्य से चौदह गुणस्थानवर्ती जीवों के अस्तित्व का दिखाकर तत्पश्चात् गुणस्थानातीत सिद्धों के भी अस्तित्व को प्रकट किया गया है (23)।





## समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
## अक्टूबर 2024

# दूढ़ रहा हूँ प्यार गगन में

**प्रथम-**

नीलगगन में पंख पसारे
उडा हूँ मैं साँझ सकारे।
चाहत है बस एक ही मन में
दूंढ रहा हूँ प्यार गगन में ॥

**श्रीमति रजनी जैन, राहतगढ़**

**द्वितीय-**

मैं अकेला अस्माँ अनंत
उड़ता जाऊँ पाऊँ न अंत।
सजनी बिघुड़ी नील गगन में
दूढं रहा हूँ प्यार गगन में ॥

**श्रीमति प्रभा जैन, रहली**

**तृतीय-**

कोई कैसे साथ निभाये
कोस कोई दो कोस जाये
उड़ना हमको अरे अकेला
झूठा है दुनिया का मेला
फिर भी प्यास जगी है मन में
दूढ़ रहा हूँ प्यार गगन में ॥

**आयुषी जैन, गंजबासौदा**

**वर्ग पहेली क्र. 299**
**सितम्बर 2024 के विजेता**

**प्रथम :** राजेश जैन, इंदौर
**द्वितीय :** श्रीमति इन्द्रा जैन, भोपाल
**तृतीय :** श्रीमति राखी जैन, सावरमति

## माथा पच्ची

**निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।**

1. आ द् अ द्द् अ ढ् ण् आ अ ल् अ र् ष् द्द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

**परिणाम :**
**अगस्त 2022:** (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

# मंत्र की महिमा

**अपवादो हि सह्योत रक्तेन न मनोव्यथा ।।**

इस प्रकार विचार करते हुये राजा सुमुखने उसके हरन करने में मन लगाया सो ठीक ही है क्योंकि रागी मनुष्य अपवाद तो सह सकता है परन्तु मन की व्यथा को नहीं सह सकता।

**तमः पतनकाले हि प्रभवत्यपि भास्वतः ।।**

आचार्य कहते हैं कि देखो राजा सुमुख यश से प्रकाश मान था तथा लोक व्यवहार का ज्ञाता था फिर भी अत्यंत मोह को प्राप्त हो गया सो ठीक ही है क्योंकि सूर्य के पतन का जब समय आता है तब अंधकार की प्रबल हो ही जाती है।

**पापोपशमनोपायाः सन्त्येव सति जीविते ।।**

इसलिये अकार्य में प्रवृत्त होने पर भी मैं तुम्हारे द्वारा रोकने योग्य नहीं है। यदि जीवन रहा तो पाप को शांत करने के बहुत से उपाय हो जावेंगे।

**अत्यभ्यर्णावपत्तीनां मन्त्रिणों हि निवर्तकाः ।।**

यद्यापि राजा का वह वचन अन्याय रूप था तथा मंत्री ने उसे मान लिया सो ठीक ही है क्योंकि मंत्री अत्यंत निकटवर्ती आपत्तियों को ही दूर करते हैं।

**षट्कर्णो भिध्यते मन्त्रों रक्षणीयः स यत्नतः ।।**

दूती के यह कहते ही उसके मुख से गरम-गरम साँसें निकलने लगी जिनसे उसका अधर पल्लव मुरझा गया। तदनन्तर दूती के कई बार प्रार्थना करने पर उसने बड़े दुख से यह वचन कहे कि हे माँ ! तुझे छोड़कर इस विषय में मेरा कोई भी विश्वासपात्र नहीं है। चूँकि छह कानों में पहुँचा हुआ मंत्र फूट जाता है- उसका रहस्य खुल जाता है इसलिये मंत्र की यत्न-पूर्वक रक्षा करनी चाहिये।





केरियर

# पुस्तकालायाध्यक्ष

पुस्तकें सुचना का सबसे उत्कृष्ट स्त्रोत हैं। पुस्तकों में सभी प्रकार की सूचनायें एवं तथ्य संग्रहीत होते हैं। पुस्तकें ज्ञान का भंडार है। भुत-भविष्य-वर्तमान तीनों ही बातें पुस्तकों में संग्रहीत हैं। सो सारी पुस्तको को व्यवस्थित तरीके से संग्रहीत करना उसकी उचित देखभाल करना यह काम पुस्तकालयों के माध्यम से होता है। नई-पुरानी, ज्ञान-विज्ञान, कथा-कहानी, आत्म चरित्र, प्रेरक कथायें, जीवन चरित्र ऐसी सभी किताबें धार्मिक किताबें सभी का संग्रह पुस्तकालयों में किया जाता है।

जिससे हर पीढ़ी को इसका ज्ञान प्राप्त होता है और निःशुल्क रूप से लोग इसका ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

**पुस्तकालयों के प्रकारः-**

1. सार्वजनिक पुस्तकालय
2. शैक्षणिक पुस्तकालय
3. व्यक्तिगत पुस्तकालय

**कार्य :-**

पुस्तकों की अच्छे से देखभाल करना।

सभी पुस्तकों का रिकार्ड मैंटेन रखना।

बच्चों का कहानी सुनाना तथा वयस्कों को शिक्षा प्रदान करना।

सैल्फ में विषयानुसार श्रेणी से पुस्तक लगाना।

यह महत्वपूर्ण कार्य है।

**रोजगार :-**

प्रत्येक कॉलेज, विश्वविद्यालय, सरकारी संस्थान में पुस्तकालय होता है वहां नौकरी प्राप्त कर सकते हैं।

व्यक्ति राष्ट्रीय पुस्तकालय एवं अभिलेखगार, सार्वजनिक पुस्तकालय विज्ञान एवं तकनीकी पुस्तकालय, मीडिया संस्थान, सामाजिक विज्ञान पुस्तकालय, विशेष पुस्तकालय, सरकारी पुस्तकालय तथा दूतावासों के पुस्तकालय में आवेदन कर सकता है।

■ **1 सितम्बर**

- अल्मोड़ा के सल्ट मंडल के भाजपा नेता भगवत सिंह बोरा को पुलिस ने छेड़छाड़ के मामले में गिरफ्तार किया।

- अगरतला: 7 बांग्लादेश के घुसपैठियों को गिरफ्तार रेलवे पुलिस ने किया।

- ज.द.यू के राष्ट्रीय प्रवक्ता के.सी. त्यागी को राष्ट्रीय प्रवक्ता पद से मुक्त किया गया। उनके स्थान पर राजीव रंजन प्रसाद प्रवक्ता बने।

■ **2 सितम्बर**

- कुमार नीतेश ने बैंडमिंटन में पैरालम्पिक में स्वर्ण पदक जीता।

- जम्मू-कश्मीर के सुंजवान सेना बेस पर आतंकी हमला हुआ छिपकर गोली चलाई 1 जवान शहीद हुआ।

- जम्मू: वैष्णों देवी यात्रा मार्ग में भूस्खलन से 2 लोगों की मौत हुई।

■ **3 सितम्बर**

- सांसद चंद्रशेखर की सुरक्षा बड़ी उन्हें y श्रेणी की सुरक्षा दी गई।

- ठाणे: बिस्किट मशीन के पट्टे में फंस जाने से 3 वर्षीय आयुष की मौत हुई।

- पोरबंदर: समुद्र में चॉपर हैलीकॉप्टर दुर्घटना ग्रस्त हुआ चालक दल के तीन सदस्य लापता हुये।

■ **4 सितम्बर**

- पश्चिम बंगला विधान सभा में बलात्कारी को 10 दिन में फाँसी देने का बिल कानून पास हुआ।

- छपरा (बिहार) महावीर अखाड़े में चल रही आर्केस्टा के दौरान छज्जा गिरने से भगदड़ में 100 लोग घायल हुये।

- यूक्रेन के 4 मंत्रियों ने इस्तीफा दिया।

■ **5 सितम्बर**

- नाइजीरिया में बोकोहरम के आतंकियो ने ग्रामीणों की हत्या की।

- पैरालंपिक ने धर्मवीर क्लबथ्रो में स्वर्ण पदक और प्रणव ने रजत पदक जीता।

- रूस के राष्ट्रपति ब्लामिदी पुतिन ने कहा यूक्रेन युद्ध में भारत मध्यस्थता कर सकता है। मैं राजी हूँ।

■ **6 सितम्बर**

- आंध्रप्रदेश के 2.75 लाख लोग बाढ़ की चपेट में आये विजयवाड़ा में सेना को उतारा।

- प्रवीण कुमार ने पैरालम्पिक में हाई जम्प में स्वर्ण पदक जीता।

- इम्फाल: पूर्व सी.एम. के घर पर रॉकेट हमला हुये।

■ **7 सितम्बर**

- आई.ए.एस पूजा खेडकर को केन्द्र सरकार ने बर्खास्त किया।





- शाटपुट पैरालम्पिक में सेना होका तो सेमा को कांस्य पदक मिला।

- मणिपुर में मैतई और कुकी संप्रदाय आमने-सामने हुये, जंग, फायरिंग में 5 की मौत हुई।

■ **8 सितम्बर**

- बिहार के सारण के गड़खा में झोला छाप डॉक्टर ने वीडियो देखकर पेट चीर दिया पेशेन्ट की मौत हुई।

- मैक मोहन रेखा से 90 किमी दूर अंजो में चीनी ने अलाव जलाया।

-कनाड़ा में आतंकी पन्नू के घर आग लगी।

■ **9 सितम्बर**

- अबुजा (नाइजेरिया) के तेल टैंकर-ट्रक भिडत के बाद विस्फोट में 50 लोगों की मौत हुई।

- राजौरी: एल.ओ.सी पर सेना ने 2 आंतकियों को ढेर किया।

- पटना: सी.एम. नीतीश कुमार के काफिले पर गेट गिर गया सी.एम. बाल-बाल बचे।

■ **10 सितम्बर**

- मणिपुर में दूसरे दिन भी छात्रों का हिंसक प्रदर्शन जारी रहा कर्फ्यू लागू किया गया हालात बेकाबू हुये।

- कोलकाता: सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद भी डॉक्टर काम पर नहीं लौटे।

- केदारनाथ (उत्तराखंड) मार्ग पर भूस्खलन 4 लोगों की मौत हुई।

■ **11 सितम्बर**

- दिल्ली (एन.सी.आर) में भूकम्प के झटके महसूस हुये भूकम्प का केन्द्र पाक में था तीव्रता 5.8 की रही।

- ताजाकिस्तान में बड़ा फैसला हुआ हिजाब पहनने पर 1 लाख का जुर्माना तथा बड़ी होने पर जेल।

- जबलपुर: बरगी बांध के 11 गेट खोले नर्मदा का जल स्तर बड़ा।

■ **12 सितम्बर**

- सी.पी.एम के महासचिव सीतराम येचुरी का निधन हुआ 72 वर्ष के थे।

- रायगढ़ जिले में एक कैमिकल फैक्ट्री में विस्फोट होने से 3 श्रमिकों की मौत हुई तथा 3 घायल हुये।

- मध्यप्रदेश के 6 जिलों में बाढ़ का संकट छाया दतिया में दीवार गिरने 7 लोगों की मौत हुई।

■ **13 सितम्बर**

- 177 दिन बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिली।

- कश्मीर के कठुआ में 4 आतंकी ढेर हुये तथा दो जवान शहीद हुये।

- गृहमंत्री अमितशाह ने पोर्ट ब्लेयर का नाम विजयपुरम करने का फैसला किया।

■ **14 सितम्बर**

- पटना: इंडिगो एयरलाइन्स विमान में एक यात्री ने दूसरे पर हमला किया।

- शाहपुर: (राजस्थान) जिले के जहाजपुर मे एकादशी के जुलूस पर पथराव हुआ।

- भारत ने पाकिस्तान को हॉकी में 2-1 से हराया 21-35 रॉबिन टूर्नामेंट में भारत की 5 वीं जीत है।

■15 सितम्बर

- मेरठः तीन मंजिला घर गिरने से10 लोग मरे 6 घायल।

- वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की हत्या के इरादा रखने वाले 6 विदेशी नागरिक गिरफ्तार हुये।

- हुतियों के हमलों से इजरायल दहला।

■16 सितम्बर

- ब्रह्मपुर (उड़ीसा) महाराजा इंजिनियरिंग कालेज के 7 छात्रों को बीफ पकाने पर छात्रावास निकाला।

- नीट टॉपर नवदीप सिंह ने आत्म हत्या की।

- कैमर (बिहार) शराब सेवन के आरोप में तीन पुलिसकर्मी निलंबित हुये।

■17 सितम्बर

- शिमलाः संजुल मस्जिद के अवैध निर्माण में लाखों लोग सड़क पर उतरे।

- भारत ने हॉकी की एशियन चैम्पियन ट्रॉफी चीन को हराकर अपने नाम कर ली।

- उत्तराखंड के मनु स्यारी बर्फबारी हुई।

■18 सितम्बर

- सुप्रीम कोर्ट 1 अक्टूबर तक बुल्डोजर एक्शन पर रोक लगाई।

- मोदी सरकार की केबिनेट ने एक देश एक चुनाव की पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की सिफारिशों को मंजूरी दी।

- अमेरिका पूर्व राष्ट्रपति एवं राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रम्प की कार में विस्फोटक मिला तीसरी हमलेकी साजिश नाकाम हुई।

■19 सितम्बर

- दिल्ली के मुख्यमंत्री पद हेतु श्रीमती आतिशी का चयन किया गया वे कल शपथ लेंगी।

- लेबनान में वॉकी टॉकी विस्फोट में 25 लोगों की मौत हुई।

- पुर्तगाल के जंगल आग लगने से 37000 एकड़ खाक।

■20 सितम्बर

- सुप्रीम कोर्ट का यूट्यूब का चैनल हैक हुआ।

- अम्बड (महाराष्ट्र)- बस और ट्रक की भिडंत में 6 की मौत हुई 22 घायल हुये।

- हिजबुल्लाह ने इजरायल पर 140 रॉकेट दागे । इजरायल ने जबाबी हमला बेरुत पर किया।

■21 सितम्बर

- दिल्ली के मुख्यमंत्री पद की शपथ आतीशी ने ली नई कैबिनेट में 5 मंत्री शामिल हुये।

- नये वायुसेना प्रमुख अमर पीत सिंह बने।

- म.प्र. के बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में तितलियों का सर्वे शुरु हुआ।

■22 सितम्बर

- ईरान की कोयला खदान में विस्फोट से 52 लोग मरे।

- शतरंज ओलंपियाड में भारत के प्रज्ञानंद और महिलावर्ग में दिव्या देशमुख ने स्वर्ण पदक जीता।

- क्वाड देशों ने चीन और पाकिस्तान को चेताया।





■23 सितम्बर

- सुप्रीम कोर्ट अपने अहं फैसले में चाइल्ड पोर्न देखना और डाउनलोड करने को अपराध बताया।

- बादलपुर (महाराष्ट्र) के रेपिस्ट अक्षय शिंदे की एन्काउन्टर में मौत हुई।

- गुना (म.प्र.) पैसे और गिफ्ट देकर ईसाई बनाने की कोशिश करने वाले 5 लोग गिरफ्तार हुये।

■24 सितम्बर

-गढ़ चिरौली का नक्सल कमांडर रूपेश मडावी छत्तीसगढ़ में मारा गया।

- उड्डयन मंत्रालय ने शंख एयर उड़ान भरने की अनुमति दी।

- मुम्बईः सिद्धि विनायक लड्डू प्रसाद में चूहा मिला।

■25 सितम्बर

- हिमाचल में होटल मालिक का नाम लिखना अनिवार्य किया गया।

- पैरासिटामॉल सहित 53 दवाएँ क्वालिटी टेस्ट में फेल हुई।

- श्रीलंका के नव निर्वाचित राष्ट्रपति अनुरा कुमारादिसा नायके ने संसद को भंग किया।

■26 सितम्बर

- शिवसेना नेता सांसद संजय राऊत को मानहानि मामले में 15 दिन की सजा 25000 रूपये दंड हुआ।

- अमेरिका के कैलीफोर्निया में बी.ए. पी.एस मंदिर को दहसत फैलाने तोड़ा।

- गयाः आंती थाना से सूखे में 1490 जिंदा कारतूस बरामद पुलिस ने किये।

■27 सितम्बर

- उज्जैनः महाकाल मंदिर में दीवार गिरने से 2 लोगों की मौत हुई 10 लोग घायल हुये।

- कर्नाटक के मुख्यमंत्री एम सिद्धारमैया के खिलाफ लोकायुक्त ने एफ आई आर दर्ज की।

- अरवल (बिहार): जिले के एक स्कूल की दो छात्रायें पिस्टल लेकर स्कूल पहुँची।

■28 सितम्बर

- नेपाल में बाढ भूस्खलन 62 लोग मारे गये।

- इजरायल ने एयर स्ट्राईक कर हिजबुल्ला चीफ नसरल्ला को मार गिराया।

- कुलगामः (जम्मू-कश्मीर) मुठभेड़ में 2 आतंकी ढेर हुये।

■29 सितम्बर

- हिजबुल्ला का डिप्टी हेड नबील काउक मारा गया।

- जम्मू: काँग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे बेहोश हुये।

- काँच फैक्ट्री में काँच उतार रहे कांच मजदूरों पर गिरने से 4 मजदूरों की मौत हुई।

■30 सितम्बर

- महाराष्ट्र सरकार ने देशी गायों को राज्य माता घोषित किया।

- अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती को दादा साहेब फाल्के सम्मान देने की घोषणा हुई।

- नेपाल में बाढ़ एवं भूस्खलन से मरने वालोंकी संख्या 200 पहुँची 4500 लोगों को बचाया गया।

**इसे भी जानिये**

# भाररतीय राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों की राजधानी

| क्र. | राज्य | राजधानी |
|---|---|---|
| 01. | महाराष्ट्र | मुंबई |
| 02. | बिहार | पटना |
| 03. | आंध्र प्रदेश | अमरावती |
| 04. | तेलंगाना | हैदराबाद |
| 05. | कर्नाटक | बैंगलोर |
| 06. | तमिलनाडु | चेन्नई |
| 07. | केरल | तिरवनन्तपुरम |
| 08. | गोवा | पणजी |
| 09. | प. बंगाल | कोलकाता |
| 10. | असम | दिसपुर |
| 11. | उत्तरप्रदेश | लखनऊ |
| 12. | गुजरात | गांधीनगर |
| 13. | ओडीशा | भुवनेश्वर |
| 14. | त्रिपुरा | अगरतला |
| 15. | नागालैंड | कोहिमा |
| 16. | पंजाब | चण्डीगढ़ |
| 17. | हरियाणा | चण्डीगढ़ |
| 18. | मणिपुर | इम्फाल |
| 19. | मध्यप्रदेश | भोपाल |
| 20. | मेघालय | शिलाँग |
| 21. | राजस्थान | जयपुर |
| 22. | हिमाचल प्रदेश | शिमला |
| 23. | सिक्किम | गंगटोक |
| 24. | मिझोरम | आईजॉल |
| 25. | अरूणाचल प्रदेश | ईटानगर |
| 26. | छत्तीसगढ़ | रायपुर |
| 27. | झारखंड | राँची |

| क्र. | केन्द्रशासित प्रदेश | राजधानी |
|---|---|---|
| 01. | दमन और दीव | दमन |
| 02. | चण्डीगढ़ | चण्डीगढ़ |
| 03. | लक्षद्वीप | कवारत्ती |
| 04. | दादरा-नागर हवेली | सिलवासा |
| 05. | दिल्ली | नई दिल्ली |
| 06. | पुदुचेरी | पुदुचेरी |
| 07. | अण्डमान-निकोबार | पोर्ट ब्लेयर |
| 08. | जम्मू-कश्मीर | श्रीनगर जम्मु |





**दिशा बोध**

# कृतज्ञता

1. आभारी बनाने की इच्छा से रहित होकर जो दया दिखाई जाती है, स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मिलकर भी उसका बदला नहीं चुका सकते।
2. अवसर पर जो उपकार किया जाता है, वह देखने में छोटा भले ही हो; परन्तु जगत् में सबसे महान् है।
3. प्रत्युपकार मिलने की चाह के बिना जो भलाई की जाती है, वह सागर से भी अधिक गहरी है।
4. किसी से प्राप्त किया हुआ लाभ राई की तरह छोटा ही क्यों न हो, किन्तु समझदार आदमी की दृष्टि में वह ताड़वृक्ष के बराबर है।
5. कृतज्ञता की सीमा किये हुए उपकार पर अवलम्बित नहीं है, उसका मूल्य उपकृत व्यक्ति की योग्यता पर निर्भर है।
6. महात्माओं की मित्रता की अवहेलना मत करो और उन लोगों का त्याग मत करो, जिन्होंने संकट के समय तुम्हारी सहायता की है।
7. जो किसी को कष्ट से उबारता है, जन्म-जन्मान्तर तक उसका नाम कृतज्ञता के साथ लिया जायेगा।
8. उपकार को भूल जाना नीचता है, लेकिन यदि कोई भलाई के बदले बुराई करे, तो उसको तुरन्त ही भुला देना बड़प्पन का चिह्न है।
9. हानि पहुँचाने वाले का यदि कोई उपकार स्मरण हो आता है, तो महा भयंकर व्यथा पहुँचाने वाली चोट भी उसी क्षण विस्मृत हो जाती है।
10. अन्य सब दोषों से कलंकित मनुष्यों का तो उद्धार हो सकता है; किन्तु अभागे अकृतज्ञ का कभी उद्धार नहीं होगा।

# बहु उपयोगी पीपल का वृक्ष

❊ डॉ. अरविन्द प्रेमचंद जैन, भोपाल ❊

चरक महर्षि का एक सूत्र अत्यंत उपयोगी हैं कि संसार में जितनी भी वस्तुएँ हैं वे सब औषधि हैं इसके अलावा कुछ नहीं हमारे इर्द गिर्द अनेक वृक्ष, पेड़ पौधे मिलते हैं पर हम उनके औषधि गुणों से अनिभिज्ञ होने से उन्हें हम उपेक्षित कर देते हैं पर वे बहुउपयोगी और लाभकारी होती हैं, ऐसा ही एक वृक्ष पीपल न केवल पूजनीय वरन अनेकों लाभकारी गुणों से भरपूर हैं।

पीपलः हिन्दू धर्म का पूज्य वृक्ष माना जाता है। जैसे देवताओं में अनेक गुण होते हैं वैसे ही पीपल का वृक्ष भी गुणों की खान है इसलिये पीपल वृक्ष की पूजा वैसे ही होती है जैसे किसी देवता की। पीपल के पत्तों, शाखाओं, छाल एवं जड़ में तीव्र गति से कार्य करने की शक्ति होती है। विद्वानों ने पीपल के देवत्व गुणों की पहचान कर इसका पूरा लाभ उठाया है। और समाज को पीपल के गुणों से स्वयं के स्वस्थ्य रहने का मार्ग बताया है।

पीपल के गुणों का वर्णन हिन्दू धर्म-ग्रंथों, आयुर्वेद ग्रंथों और वनस्पति विज्ञान ग्रंथों में स्पष्ट लिखा है। वनस्पतियों में एक पीपल का वृक्ष ही ऐसा वृक्ष है जो दिन और रात दोनों समय अर्थात् 24 घण्टे प्राण-वायु (ऑक्सीजन) प्रदान करता है जबकि अन्य सभी पेड़-पौधे दिन में ऑक्सीजन तथा रात्रि में कार्बन डाई ऑक्साईड छोड़ते हैं। इसी कारण इस देव वृक्ष की सुरक्षा के प्रबन्ध किये गये और इसे पूज्य बना दिया गया ताकि इसे कोई क्षति न पहुचायें। हिन्दू धर्म के लोग इसे कभी पूज्य एवं गुणों की खान होने से नहीं काटते और ना उखाड़ते। एक पीपल का वृक्ष अपने आस-पास के दो-तीन कि.मी. क्षेत्र को प्राण वायु देने में सक्षम होता है। वह हजारों घन फुट शुद्ध वायु का प्रसारण करता रहता है। जो लोग इस तथ्य से परिचित हैं वह पीपल के वृक्ष को देवता मानते हैं और आदर सम्मान एवं पूजा करते हैं।

भगवान श्री कृष्ण ने पीपल वृक्ष की महिमा करते गीता में कहा है- सब वृक्षों में उत्तम और दिव्य गुणों से सम्पन्न पीपल मैं स्वयं हूँ।

इसका सीधा सा अर्थ है कि जितना सम्मान लोग भगवान श्री कृष्ण को देते हैं उतना ही सम्मान उन्हें पीपल को देना चाहिये। इसी भाव तथा विचार को ध्यान में रखकर विद्यालयों, मंदिरों, पार्कों आदि में पीपल वृक्ष लगाते हैं। वेदों में भी पीपल के गुणों का वर्णन अनेक स्थानों पर किया गया है जहां यह वृक्ष होता है। वहां प्राण-वायु हमेशा रहती हैं। पीपल की छांव प्राण-वायु प्रदान करती है इसलिये इसके नीचे बैठते ही नींद के सुखद झोंके आने लगते हैं। यह वृक्ष जितना साहूकार को सुखदायी है उतना ही गरीब को भी सुख देता है अर्थात् पीपल राजा रंक दोनों को ही एक दृष्टि से देख प्राण-वायु बराबर देता है।

पीपल का वृक्ष अधिकतर दीवारों के कोणों, नींव के आस-पास कब्जों व दरारों में उग जाता है इसका कारण यह है कि इसका बीज ऐसे ही धरती मे नहीं उग सकता। पीपल के पेड़ के





नीचे पीपल बीज बिखरे रहते हैं जो कबूतरों को बहुत प्रिय हैं। कबूतर इन बीजों को बड़े चाव से खाता है। बीज कबूतर के पेट में अंकुरित हो जाता है और कबूतर जहां पर अपनी बीट करता है वहीं पर पीपल उग जाता है क्यांकि कबूतर अक्सर दीवारों के कोनों तथा दीवारों पर बीट करता है। इसलिये यह अधिकतर कोनों, नीवों, दरारों में ही उगते हैं। यहां से इन्हें उखाड़कर भी लगा दो तो उग जाता है।

कई बार तो ऐसा भी देखने में आता है कि किसी दूसरे पेड पर पीपल का पेड़ उग जाता है। उसका कारण भी यही है कि कबूतर दूसरे पेड़ पर भी बीट कर आया तो वहां भी पीपल उग आया।

**पीपल वृक्ष की विशेषताएं**

1. यह विषैली वायु को शुद्ध करता है तथा प्राण-वायु का संचार करता है।

2. दमा और टी.बी. के रोगियों के लिये पीपल अमृत समान है। पीपल के पत्तों की चाय पीने से रोगों में आराम होता है। पीपल की छाल को सुखाकर पूर्ण बनाकर शहद के साथ लेने से भी लाभ होता है। जड़ को पानी में उबालकर स्नान करना चाहिये।

3. पीपल की छांव में बैठने से थकावट दूर होती है क्योंकि पीपल के पत्तों से होकर नीचे आने वाली किरणों में तैलीय गुण आ जाते हैं।

4. पीपल का वृक्ष दिन-रात प्रकाश देता है। दिन हो या रात पीपल के पेड़ के नीचे सघन अंधकार भी दिखाई नहीं देता। पत्तियों के बीच से दिन में सूर्य का और रात में चन्द्रमा का प्रकाश छन-छन कर आता रहता है।

5. पीपल के नीचे बैठने से शीतल, मंद-सुगंधित वायु के चलने पर कुछ पत्ते तालियां बजाते हैं तो कुछ मीठी-मीठी ध्वनि निकालते हैं जो कानों में प्रवेश करके व्यक्ति को हल्का नशा देते हैं। इसी कारण व्यक्ति आनंदित होकर सो जाता है।

6. पीपल के पत्ते, कोपलें, फूल-फल, डाली, छाल एवं जड़ सभी अमृत-रस की वर्षा प्रदान करते हैं। इसी प्रकार पीपल की हर एक चीज व्यक्ति को बुद्धि-बल और स्वास्थ्य प्रदान करती है यही अमृत रस है।

7. पीपल रोग नाशक, विषहर एवं दीर्घायु प्रदान करने वाला है। अतः भगवान शिव को यह वृक्ष बहुत पसंद है।

8. पीपल में भगवान शिव जैसे गुण पाये जाते हैं जो विष पीकर लोगों को अमृत प्रदान करने वाले हैं। पीपल और शिव का संगम हमारे देश में हजारों वर्ष पूर्व से चला आ रहा है।

**आयुर्वेदिक गुण-** ऋषि चरक ने अपने ग्रंथ में लिखा है कि यदि व्यक्ति में नपुंसकता का दोष है और वह अपनी पत्नी से संतान उत्पन्न करने में असमर्थ है तो उसे पीपल की जटा को उबालकर उसका क्वाथ पीना चाहिये। पीपल की जड़ तथा जटा में पुरुषत्व बढ़ाने के गुण विद्यमान हैं।

सभी प्रकार की दवाओं का निर्माण जड़ी-बूटियों, फलों, पत्तों, छालों एवं रसों से होता है।

उनके बनाने में देर लगती है। उस पर निर्मित दवा प्रयोग करने के बाद भी परहेज करना पड़ता है किन्तु पीपल वृक्ष आशुतोष है। आशुका अर्थ है शीघ्र और तोष का अर्थ है संतुष्टि प्रदान करना। अर्थात् शीघ्र संतुष्टि प्रदान करना। पीपल का वृक्ष बिना किसी लाग-लपेट के शीघ्र ही पूर्ण लाभ पहुंचाता है।

स्त्रियाँ -पुरुषों दोनों ही पीपल के पत्तों की छाल का सेवन करना चाहिये। ये दोनों चीजें पुत्र प्रदान करने वाली है। सूखी कोख की हरी करने वाली है।

चर्म विकार जैसे कुष्ठ, फोड़े-फुंसी, दाद खाज और खुजली को नष्ट करने वाला है। पीपल की छाल घिसकर चर्म रोगों पर लगाने से त्वचा को लाभ होता है। कुष्ठ रोगों में पीपल के पत्तों को पीसकर कुष्ठ स्थान पर लगाया जाता है। पत्तों का जल सेवन किया जाता है। आयुर्वेद ग्रंथों में ऐसा कहा गया है कि पीपल के वृक्ष के नीचे दो तीन घंटे प्रतिदिन नियमित रूप से रूककर आसन लगाकर बैठने से हर प्रकार के त्वचा रोगों में लाभ होता है।

**रोगों में पीपल का उपचार पेट दर्द -** पीपल की छाल का चूर्ण, अजवायन का चूर्ण, हींग एवं खाना सोडा सबकी उचित मात्रा लेकर फांके और ऊपर से पानी पी लें। पीपल के पत्तों का रस, मांगरे के पत्तों का रस काला नमक सबको मिलाकर सेवन करें।

**बवासीर -**पीपल के पत्तों का रस 10 ग्राम, अमरबेल का रस 50 ग्राम, 8-10 काली मिर्च का चूर्ण मिला घोटकर दिनभर में तीन बार पी लें। यह दवा वादी और खूनी दोनों बवासीरों में लाभदायक है।

**कब्ज-**पीपल के सूखे पत्तों का चूर्ण, शहद में मिलाकर सेवन करने में कब्ज खुल जाता है।

पीपल के फल और अमलतास के फूल दोनों का समान मात्रा में सूखा, थोड़ी मिश्री मिलाकर चूर्ण बना प्रतिदिन एक चम्मच पानी के साथ लें।

**खांसी-**एक चम्मच पिसी हल्दी तथा एक चम्मच पीपल की सूखी पिसी छाल का चूर्ण मिलाकर शहद के साथ सेवन करें।

**चक्कर आना-** पीपल के फलों का चूर्ण 6 ग्राम दूध के साथ सोते समय सेवन करें।

**जीव-** जन्तु का काटना (बिच्छू) ततैया, मधुमक्खी, मकड़ी आदि।

पीपल की छाल को पानी में घिसकर डंक लगने या काटे जाने वाले स्थान पर लगायें।

नीम की छाल, पीपल की छाल दोनों को अलग-अलग पानी में घिसकर मिला लें और काटे जाने वाली जगह पर लगायें लाभ होगा।

इसके अलावा यह अपच, अजीर्ण, खाज-खुजली, फुंसी, कील-मुंहासे, चक्कर आना, सिर दर्द, कमर दर्द आदि रोगों में भी लाभदायक है।

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि हमारे पास होने पर भी हम इसके गुणों से अनभिज्ञ हैं खुले दिल दिमाग से उपयोग करे और इस वृक्ष को अधिक से अधिक बचाये और लाभ लें।





# चाणक्यवार्ता का पठनीय अनूठा विशेषांक

❊ सुरेश जैन, (आई.ए.एस), भोपाल ❊

विनम्रता से ओतप्रोत आपका आत्मीय आभार पत्र 2 मई, 2024 प्राप्त कर हार्दिक आल्हाद हुआ। न्यायमूर्ति विमला जी तथा हमारे लेख के प्रकाशन के लिये आपको पुनः साधुवाद प्रेशित कर प्रसन्नता प्राप्त कर रहे हैं। जीवन के अस्सीवें वर्ष में प्रवेश करने के कुछ दिन पूर्व आपने हमसे दूरभाष पर विस्तृत चर्चा कर हमारे प्रति आत्मीय स्नेह और सम्मान प्रगट किया है। एतदर्थ हम अनुगृहीत हैं। कृपया सभी पारिवारिक जनों को हमारी शुभकामनाएं प्रदान करें।

हमें आपके कुशल एवं सक्षम संपादकत्व में प्रकाशित चाणक्य वार्ता अंक-8 (पाक्षिक) कुल पृष्ठ 152, राजभाषा हिन्दी की संपूर्ण अंतराष्ट्रीय पत्रिका- चाणक्य वार्ता का गौरवशाली 200 वाँ अंक आचार्य श्री विद्यासागर जी स्मृति विशेषांक प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई यह विशेषांक और इसके साथ ही चाणक्य वार्ता के अन्य विशेषांक पूर्णतः पठनीय और संग्रहणीय होते हैं।

इस विशेषांक के सहयोगी **ऐलक सिद्धांतसागर जी महाराज** और अतिथि संपादक ब्र. जिनेश मलैया को सादर साधुवाद। जिनेश जी ने संघस्थ सभी साधु संतों को सांख्यिकी का वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण कर सराहनीय एवं ऐतिहासिक कार्य किया है। उन्होंने जैन संतों का विधिवत श्रेणीकरण करते हुये उनकी संख्या आचार्यों, मुनिवरों, आर्यिकाओं, ऐलकों और क्षुल्लकों आदि के बीच विभाजित की है। भौगोलिक दृष्टि से मध्यप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश, राजस्थान और झारखंड आदि राज्यों के संतों को विविध जिलों में विभाजित कर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत की है। यह अत्यधिक सराहनीय है कि आपने आध्यात्मिक जगत के शोधार्थियों के लिये महत्वपूर्ण सामाजिक जानकारी उपलब्ध कराई है। इस जानकारी का सामाजिक उपयोग करने का अवसर उपलब्ध कराया है।

आचार्य श्री की विश्वविश्रुत **मूकमाटी** का लेखन पिसनहारी मढ़िया जबलपुर म.प्र. में **षट्खण्डागम, द्वितीय वाचना प्रसंग पर बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ के दीक्षा कल्याणक दिवस-वीर निर्वाण-संवत् 2510, विक्रम संवत 2041, वैशाख कृष्ण दशमी, बुधवार (25 अप्रैल सन् 1984)** को प्रारंभ किया गया है। इस महाकाव्य का समापन आचार्य श्री द्वारा **श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि, जिला छतरपुर,** म.प्र. में आयोजित श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक एवं त्रि-गजरथ महोत्सव के अवसर पर केवलज्ञान कल्याणक दिवस, माघ शुक्ल त्रयोदशी वीर निर्वाण संवत् 2513, विक्रम संवत् 2043 बुधवार (11 फरवरी सन् 1987) को किया गया।

मूकमाटी के प्रस्तवन मानस तरंग में गुरुचरणारविन्द चंचरीक विशेषण से गुरुदेव ने नैनागिरि की ऐतिहासिक आध्यात्मिक सांस्कृतिक और साहित्यिक उपलब्धियों का निम्नांकित शब्दो में वर्णन किया है-

मढ़िया जी (जबलपुर) में
द्वितीय वाचना का काल था
सृजन का अथ हुआ और
**नयनाभिराम-नयनागिरि में**
पूर्ण पथ हुआ
समवसरण मंदिर बना
जब गजरथ हुआ।

पर्वत के पीछे वरदत्त वन में स्थित चालीस हजार वर्ष प्राचीन सिद्ध शिला पर बैठकर गुरुवर ने अपने मधुर कण्ठ से मूकमाटी की पंक्तियाँ सुनाई और बारह पदों में विरचित और निर्बंध गुरु के छंद में प्रकाशित आध्यात्मिक भक्तिगीत **अहो यही सिद्ध शिला** के द्वारा सिद्ध शिला का गुणानुवाद किया। मूकमाटी के समापन के दिन ही आचार्य श्री के द्वारा वर्ष 1987 में नैनगिरि में 11 आर्यिका माताओं की दीक्षा का ऐतिहासिक तथ्य महिला जगत में आध्यात्मिक क्रांति का सूत्रपात करता है। ऐलक सिद्धांतसागर महाराज ने अपने आलेख **हथकरघा के विस्तार की कथा** के माध्यम से आचार्य श्री के औद्योगिक क्षेत्र में अवदान को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है।

यह प्रसन्नतादायक है कि चाणक्य वार्ता द्वारा भारत के 28 राज्यों पर केन्द्रित अपने विशेषांक प्रकाशित किये है। यह आपकी चतुर्मुखी सफलता का प्रतीक है कि चाणक्य वार्ता विश्व के 35 देशों में अपने पदचिन्ह स्थापित कर सफलतम अंतर्राष्ट्रीय पाक्षिक पत्रिका बन चुकी है। पूरी विश्व के देशों में स्थित भारतीय दूतावासों में प्रेषित की जाती है। न्यायाधिपतियों, प्रशासकों, राजनीतिज्ञों और शोध छात्रों के बीच लोकप्रिय है। भारत सरकार के सभी विभागों और देश के प्रायः सभी विश्वविद्यालयों और पुस्तकालयों में उपलब्ध है। रेलवे स्टेशनों पर स्थित बुक स्टॉलों में आसानी से मिल जाती है। ई-संस्करण के रूप में www.chanakyavarta.com के माध्यम से उपलब्ध है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 18 अक्टूबर 1983 को जन्में आप प्रथम श्रेणी के छात्र रहे हैं। आपने उत्तरप्रदेश जैन समाज के भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान विषय पर शोध ग्रंथ प्रस्तुत कर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। यह उल्लेखनीय है कि आपका यह ग्रंथ भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित और तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा विमोचित किया गया है।

आपने गुरुग्राम में भारत अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना की है। आप इंटरनेशनल दिव्य परिवार सोसायटी, नई दिल्ली के अध्यक्ष के रूप में अनेक राष्ट्रीय स्तर के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में संलग्न है। आप सांस्कृतिक दूत के रूप में विश्व के विविध देशों तथा भारत के प्रायः सभी राज्यों का भ्रमण कर चुके है।

नैनागिरि में विराजे भगवान पार्श्वनाथ से प्रार्थना है कि आप अपनी चतुर्मुखी प्रगति के पथ पर सदैव आगे बढ़ते रहें और आपकी कलम अपने शब्दों से इस तीर्थ पर सतत अभिषेक और शांतिधारा करती रहें।





कहानी

# नई साड़ी

**लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज**

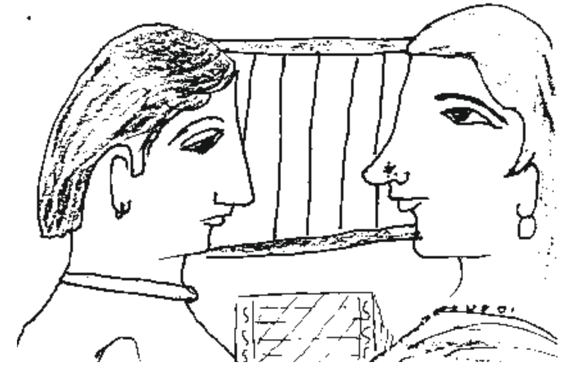

दोपहर के 2 बज रहे थे ठंड के मौसम में सभी लोग अपनी अपनी छतों पर बैठकर गुणगुणें धूप का आनंद ले रहे थे । कई लोग पतंग उड़ाकर संक्राति बीत जाने पर भी पतंग उड़ाने की हर तरफ से कोशिश कर रहे थे । हवा की दिशा और गति पतंग उड़ाने के लिये आवश्यक होती है । धीरे धीरे आसमान भी रंग बिरंगा होता जा रहा था। सोनम को सर्दी देखकर बार-बार मन में चहक उठती थी । सोनम को सर्दी का मौसम बहुत अच्छा लगता था। प्रायः वह अपने गाँव पीहर में ही सर्दी बीताती थी। परंतु बदकिस्मती इस बात की थी बच्चों का स्कूल होने से उसे अपने ससुराल तलोधद जाना ही पड़ता था। ईडर की जन्मी सोनम जन्मजात संस्कार से धार्मिक थी । सोनम अपने यौवनकाल में बहुत शौकिया किस्म की थी । सोनम प्रायः फैशन शो अटेंड जरूर करती थी। फैशन शो अटेंड करने के लिये वह अहमदाबाद के कई फैशन शो देख चुकी थी। सोनम का शुरु से मन पढ़ाई में नहीं लगा । सोनम ने जैसे तैसे नकल वकल करके बैचलर की डिग्री हासिल कर ली थी । पर उसकी किस्मत बहुत अच्छी थी शादी के बाद उसे जो घराना मिला वह भी काफी धनाढ्य और आधुनिक विचारों का था। सोनम के पति अतुल काफी उदारवादी थे। उनका साड़ी का शोरुम गांधीनगर में बहुत प्रसिद्ध था।

सोनम एक दिन रूठी रूठी सी नजर आ रही थी । अतुल ने उसके रूठने का कारण पुछा तो वह मुँह बिचकाकर बोली आप मेरे तरफ ध्यान मत दीजिये, आप तो अपने परिवार के तरफ ही ध्यान देते रहिये। मैं तो आपके लिये एकस्ट्रा प्लेयर हूँ । सोनम की बात सुनकर अतुल बहुत गंभीर हो गया अतुल ने कहा देख सोनम छोटी छोटी बातों पर ऊखडी ऊखडी बातें करना अच्छा नहीं लगता । परिवार अपना है अपने परिवार को निभाना सबसे बड़ी

जिम्मेदारी होती है। रिश्ते बनाना बहुत सरल होता है, परंतु रिश्तों को निभाना सबसे कठिन काम होता है। लोग प्रायः दूसरों की तुलना करके अपने सगे संबंधियों से रिश्ते तोड़ने के लिये तैयार हो जाते है। परंतु वे भूल जाते हैं कि अपनी सुविधा के लिये महत्व देना बहुत सरल काम है किंतु दुसरे की सुविधा की पूर्ति कर देना सबसे बड़ी साधना है। जिसने इस साधना को स्वीकार कर लिया।

उसने अपने परिवार को खुशियाँ देने में सफलता अवश्य ही अर्जित की है। अतुल की पूरी बात सुनकर सोनम बोली आप तो एक दार्शनिक जैसा प्रवचन देने में माहिर है। मुझे ये भाषण प्रवचन ना देना पसंद है या सुनना पसंद है। आप तो मेरे ईच्छाओं पर पानी फेरते जायें और परिवार को निभाते जाईये। 10 साल बाद मेरी इच्छायें जब दफन हो जायेगा और सारे लोग जब तुम्हें अकेला छोड़ देंगे तब याद रखना तुम्हें सोनम की याद आयेगी और सोनम ही काम आयेगी। अतुल ने कहा सोनम ये तुम कटी भुनी बातें करना कब छोड़ोगी ताने मारना तेरी फितरत में है। खैर ये तेरे अकेले का कोई दोष नहीं है अपितु ईर्ष्या से भरी सभी महिलायें ताने मारने में निपुण जरूर हो जाती हैं। यदि काम की बात करना तुम प्रारंभ कर दो और अपनी अप्रिय भाषा शैली बदल दो तो कितना अच्छा होगा। सोनम ने चिढ़ते हुये कहा हर आदमी दूसरे को बदलना चाहता है पर खुद कब बदलेगा यह मेरे समझ में नहीं आता। ठीक है मैं मानती हूँ मैं ईर्ष्यालु हूँ, दूसरों को देखकर जल जाती हैं। पर यह जलनभी कहीं ना कहीं जलती हुई आग से ही शुरु होती है।

अतुल ने सोनम की इच्छाओं और भावनाओं को समझकर सोनम से कहा मैंने एक बात तय की है कि मेरे दुकान में जितनी भी साड़ियों की डिजाईने हैं, उस सारी प्रकार की साड़ी देने का मन बना लिया है। सोनम ने अतुल की बात सुनकर बहुत आश्चर्य किया परंतु विश्वास नहीं। सचमुच में अतुल बहुत उदारवादी सोच का इंसान है। इस बात को सोनम भी नहीं समझ पाई। अतुल ने सोचा अगर हम सब व्हेराईटी की एक एक साड़ी सोनम को दे दें तो सोनम जिंदगीभर मेरे लिये उलाहना नहीं दे पायेगी क्योंकि सोनम साड़ी की दिवानी है। जब रोज रोज नई साड़ी जब सोनम पहनेगी तो हमारी साड़ी की दुकान का प्रचार भी होगा क्योंकि सोनम का ग्रुप भी बहुत बड़ा है कुछ ना कुछ फायदा तो जरूर मिलेगा। अतुल ने अपनी सोच बड़ी बनाने की कोशिश की। अतुल जानता था कि बड़ी सोच का फायदा जरूर मिलेगा। और इसी आधार पर अतुल ने साड़ी देने की योजना भी बना ली।

तीन दिन बीत गये सोनम साड़ियों की प्रतिक्षा करती रही लेकिन साड़ी नहीं आयी, तब सोनम ने मन ही मन सोचते हुये कहा मैंने इनसे उम्मीद लगाई क्योंकि पुरुषवर्ग प्रायः बातें बनाने में माहिर होते है।





सोनम ने आकाश की तरफ देखकर हाथ जोड़कर कहा क्या भगवान आज मेरे ऊपर खुश हो चुका है। यदि सचमुच में भगवान मेरे पर खुश हुआ है तो भगवान ने मेरे स्वामी जी को न जाने कौन सी सद्बुद्धि दे दी है। सोनम का हाथ पकड़कर अतुल खींचने लगा और कह रहा कि तुम्हारा सपना हकीकत में बदल रहा है और अब तुम्हें कभी भी साड़ी की डिमाण्ड नहीं करनी पड़ेगी। सोनम ने कहाँ मैंने कभी आपको इतना उदार होते नहीं देखा परंतु आज तो मैं आपकी जी भरके तारीफ करूंगी। कई सीढ़ियाँ उतरने के बाद सोनम नीचे पहुंच गई उसके साथ अतुल भी नीचे पहुंच गये और ग्राउंड फ्लोअर पर पाँच गठ्ठे रखे थे। सोनम ने पहिला गठ्ठा खिसकाने की कोशिश की पर वह उससे हिला भी नहीं तो अतुल ने कहाँ अगर तुझे साड़ी चाहिये है तो गठ्ठा तुझे खोलना पड़ेगा। अतुल सामने पड़े कुर्सी पर बैठ गया और एक दर्शक की भांति परेशान सोनम को देखता रहाँ अब परेशान सोनम ने अतुल से कहा कि बिना तुम्हारे सहयोग के मैं क्या कर सकती हूँ आओ हाथ बटाओ। गठ्ठे खोलो साडी दिखाओं अतुल काम तुम्हारा है मेरा नहीं। तब परेशान सोनम ने दाँत से गांठ खोलने की कोशिश की। अतुल चिल्लया, अरी पगली गांठ तो नहीं खुलेगी पर दांत जरूर टुट जायेंगे। अतुल ने अपने जेब से कटर निकाला और फेंक कर सोनम को दे दिया और कहा लो इससे काटो और इसलिये गप्पें मारने में और झुठे बादे करने में इन्हें महारथ हासिल होती हैं। कोई बात नहीं मेरा क्या बिगडा अभी तो मैंने थोडा विश्वास कर लिया आगे नहीं करूंगी। जब सूरज अस्ताचल की ओर जा चुका था। सांझ ढल चुकी थी, पक्षियों का कलरव धीरे धीरे शांत हो रहा था, रोड़ पर चहल पहल बहुत बढ़ चुकी थी। सोनम अपने छत पर खड़ी होकर मुख्य मार्ग को निहार रही थी तभी उसके द्वार के सामने एक 406 गाड़ी खड़ी हो गयी। और सोनम ने देखा कि 406 से बंडल के बंडल निकलकर भीतर आ रहे हैं, सोनम सोचने लगी कि इन बंडलों में आखिर आया क्या है? वह बड़ी ही गौरे से मुड़ैर पर पैर रखकर नीचे झाँककर देख रही थी। तभी अतुल ने आकर उसे एक सिर पर चपट लगाई और कहाँ क्या देख रही हो, लटककर कही गिर न जाओ मुझे यह डर लग रहा है। अतुल की बात सुनकर सोनम ने कहा इन गठ्ठरों में क्या आया यह मैं रही हूँ। अतुल ने कहा इन गठ्ठरों में और कुछ नहीं है, तुम्हारे लिये रक्षाबंधन की गिफ्ट है। लगता है तुम मेरे पर बहुत ज्यादा खुश हुये हो, पर रक्षाबंधन पर ऐसी मजाक करने की क्या आवश्यकता पड़ गई। क्या इन गठ्ठरों में रूई के बंडल तो नहीं, क्या कहीं कपास? अतुल ने कहा न कपास है, न रूई है। इन गठ्ठरों में कुछ है तो बस सुंदर सुंदर सब वैरायटी की साड़ियाँ। चलो नीचे देखो और तुम अपने पसंद अनुसार सब साड़ियों को रख लो।

गठ्ठर खोलो। पहिला गठ्ठा खोला तो सोनम को एक से एक सुंदर साड़ियाँ दिखीं।

गठ्ठा खोलने में सफल होने पर सोनम ने देखा कि रेशमी साड़ी, को जीवरम साड़ी, तंजावर साडी, गढवाल साड़ी, ब्रासो साड़ी, टिश्या साड़ी, ऑरगंजा साड़ी, पैठणी, म्हैसुर की साड़ी पेशवाई सिल्क, इटालीयन सिल्क, कॉटन साड़ी, जरदोसी की साड़ी, चिकन की साड़ी, लावण्या सिल्क, लक्ष्मीपती साड़ी, चुनरी की साड़ी, बांधनी प्रिंट साड़ियाँ, ज्युट साड़ियाँ, लाईट वेट साड़ियाँ, पूनम साड़ियाँ, भरजरी शालु, नेट की साड़ियाँ, शहापुरी साड़ियाँ, कलकत्ता साड़ियाँ, टेम्पल प्रिंट साड़ी। इन सभी साड़ियों को देखने पर सोनम एक-एक साड़ी के पैकेट को अपने सीने से लगाकर कहती कि वा ! मजा आ गया। पहिले बंडल की 25 साड़ियाँ देखने के बाद तब सोनम ने दूसरा साड़ी का बंडल भी फटाफट खोल दिया। दूसरे बंडल में यही की यही सब साड़ियाँ पर कलर अलग-अलग। विभिन्न रंगों की साड़ियाँ देख सोनम उछल गई और अतुल के पैर पकड लिये और कहाँ आप के जैसा उदार दिलदार आदमी मैंने कही नहीं देखा। ऐसा तो नहीं कि मुझे सब साडियाँ दिखाकर आप वापस तो नहीं ले जाओगे ? अतुल ने कहा कि यही समस्या है आशंका का कोई जवाब नहीं है। लुकमान वैद्य ने भी चिंता और आशंका की कोई दवाई नहीं बताई। मैं फिर कह रहा हूँ ये सब साड़ियाँ तुम्हारे लिये और हमेशा के लिये और फिर भी तुम्हें शंका हो तो एक स्टॉम्प लेके आओ मैं उस पर लिखकर दस्तखत कर देता हूँ। मैचिंग की दृष्टी से सोनम ने चारा गठ्ठों की साड़ियाँ की थप्पी लगा ली। साड़ियों को बार-बार देखकर सोनम इतनी खुश हो रही थी जैसे किसी को स्वर्ग या मोक्ष मिलने पर खुशी होती है। अब सोनम के लिये दस साल शायद कोई साड़ी मांगनी नहीं पड़ेगी ऐसा सोनम सोच रही थी।

जब साड़ी के पूरे गठ्ठर खुल गये और थप्पीया लग गई, तभी सोनम की सास चित्राबेन ने अपनी दस्तक दे दी। चित्रा ने सारी साड़ियों को देखा तो अतुल से पूछ बैठी। अतुल भाई ये सब साड़ियाँ क्यों आयी हैं। तब अतुल ने कहाँ मम्मजी जी आप पुछ क्यों रही है। आप समझदार हैं , स्वयं समझ सकता हैं। ये सब साड़ी आपकी बहु सोनम के लिये लायी गई हैं और आप भी चाहे तो इतनी साडी आपके लिये भी मैं ला सकता हूँ पर निवेदन है कि सोनम की साड़ियों को देखकर आप किसी भी प्रकार की कोई भी प्रतिक्रिया ना करें। तब चित्रा ने कहा मुझे कोई आपत्ती नहीं है। मेरे पास सब साड़ियाँ हैं, मुझे कोई भी साड़ी नहीं चाहिये तब सोनम ने उदारता का नाटक दिखाते हुये एक थप्पी उठाकर चित्रा के सामने रख दी और कहाँ मम्मी जी आपको इनमें से दो साड़ियाँ तो लेने ही





पड़ेगी। चित्रा ने कहा बेटा सोनम मेरा 50 साड़ी का नियम है। मै इससे अधिक साड़ी नहीं ले सकती। आचार्य विद्यासागर जी का मैं प्रवचन सुन रही थी उन्होंने कहा हर मनुष्य को अपने परिग्रह का प्रमाण अवश्य करना चाहिये। आवश्यकता से अधिक रखने पर हम दूसरों के अधिकार को अवश्य छीनते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि धन का संचय बिना अन्याय और गरीबों के शोषण के संभव नहीं है। हम धनाढ्य हैं हमारे पुण्योदय से सब संपदा है, उस संपदा का हम उपयोग के भोग के लिये भी कर सकते हैं और दूसरे के उपयोग के लिये भी। आचार्य विद्यासागर जी ने यह भी बताया कि समुद्र में पानी नदियों के द्वारा ही आता है और नदियाँ अपने पानी के साथ गंदगी भी लाती हैं वह गंदगी हमें भले ही ऊपर सतह पर ना दिखे किंतु समुद्र तल में तो गंदगी रहती ही है। इसी तरह से परिग्रह भी बिना पाप के कभी एकत्रित नहीं होता है। मैं कभी-कभी सोचती हूँ कि महात्मा गांधी ने एक लंगोटी क्या पहनी जब मैं उनकी पुस्तक सत्य के प्रयोग पढ़ रही थी। तब एक घटना पर बापू का ध्यान केन्द्रित हो गया, एक महिला की गंदी साड़ी पर देखकर बापू ने कहा बहन तुम ये गंदी साड़ी क्यों पहनती हो ? तब उसने कहाँ बापु मेरे पास एक ही साडी है, अगर ये साड़ी मैं धोती हुँ तो उतने समय मुझे बिना साड़ी के रहना पड़ेगा। बापू की आँखों में आंसु आ गये, और उसी समय में बापू लंगोटी और चादर में रहने लगे।

सोनम ने कहाँ मम्मी बापू की बात अलग है और हमारी बात अलग है। हमारी किस्मत और गरीबों में अंतर तो होगा। सब अपने अपने किस्मत का खाते हैं। जब हमें हमारे नसीब का मिल रहा है तो उसका उपभोग करें उसमें गलत क्या है ? चित्रा ने कहा कि सोनम तुम यह बात समझने की कोशिश करो कि धन का संचय हिंसा, झूठ चोरी के बिना संभव नहीं और ये सब पाप है। इन सब पापों के बाद संचित धन का जब हम उपभोग करते हैं तब भी पाप ही होते हैं इसलिये चाणक्य ने अपने संचित धन में से दशांश दान करने का उपदेश दिया है। इसलिये सोनम कितनी भी अच्छी ये साड़ियाँ क्यों न हो लेकिन मैं इसमें से एक भी साड़ी नहीं ले सकती। सोनम ने चित्रा को खूब मनाया परंतु चित्रा न एक भी साड़ी लेने को तैयार नहीं हुई। चित्रा अपनी सास की दृढ़ता देखकर सोनम का मन भी परिवर्तित हो गया, सोनम ने अपने पति अतुल से कह दिया, मैं भी आज से 100 साड़ी से अधिक नहीं रखूंगी। सोनम अपनी साड़ी गिनने के ऊपर गई। एक दो घंटे बाद नीचे गई और अपने साथ एक साड़ी भी ले आयी और कहा मेरे पास 101 साड़ियाँ निकली हैं इसलिये एक नई साड़ी मैं वापस करती हूँ। सोनम के परिवर्तन पर अतुल अवाक् रह गया।

हमारे गौरव

# अमर शहीद कुमारी जयावती संघवी

अहमदाबाद (गुजरात) की कुमारी जयावती संघवी भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की वह दीपशिखा थी जो अपना पूरा प्रकाश अभी दे भी नहीं पायी थी कि जीवन का अवसान हो गया। जयावती का जन्म 1924 में अहमदाबाद में हुआ था। 5 अप्रैल 1943 को अहमद नगर में ब्रिटिश शासन के विरोध में एक विशाल जुलूस निकाला जा रहा था। प्रमुख रूप से यह जुलूस कॉलेज के छात्र -छात्राओं का ही था। इसमें प्रमुख भूमिका जयावती संघवी ही निभा रही थी। जुलूस आगे बढता ही जा रहा था, पर यह क्या ? अचानक पुलिस ने जुलूस को तितर-बितर करने के लिये आँसू गैस के गोले छोड़े।

स्वाभाविक था कि गोले आगे छोड़े गये, अतः नेतृत्व करती जयावती पर इस गैस का इतना अधिक प्रभाव हुआ कि इससे उनकी मृत्यु हो गई। नमन हे ऐसे पीर-वीर भारत माता की वीर वीरांगना को।

कविता

# दीपावली का पर्व विशेष

**✻ संस्कार फीचर्स ✻**

दीपों का त्योहार बांटे यह उपहार
दीपज्ञान अगर जले तो
तम अज्ञान दूर रहे वो
अज्ञान से सब अपराध
पतन नरक का द्वार
व्यसन अंधेरा, दुख का फेरा
मानवता की पहचान मिटाये
शोषण पीड़ा, व्यसन बढ़ाये
लोभ लालसा, मनस बढ़ाये
लालच का, परिणाम व्यसन है
विषय वासना, काम वासना
सभी संग, परिग्रह लाये
महावीर का शुभ उपदेश
दीपावली का पर्व विशेष

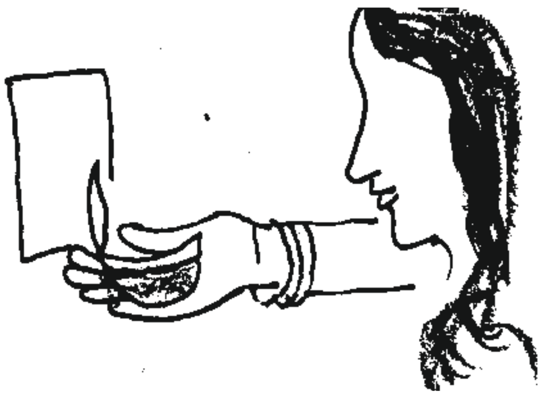





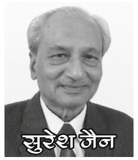

सुरेश जैन

क्रमांक-44 वरिष्ठ नागरिक

# लोकप्रिय बने

बुढ़ापे में छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दें, जिन पर हम ध्यान नहीं देते। जबकि यदि हम इन्हीं छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देकर, उनके सकारात्मक पहलुओं को अपने दैनिक जीवन की आदत बनाएं तो कोई कारण नहीं कि बुढ़ापे में भी आप दूसरों के बीच लोकप्रिय न बनें। उदाहरणार्थ निम्न बातों पर गौर करें।

**1. आभार प्रकट करें:** किसी से भी मुलाकात करने से पहले और बाद में, उसका आभार प्रकट करें कि उसने आपको समय दिया। उससे धन्यवाद जरूर कहें। यह शिष्टाचार ही नहीं, बल्कि एक आत्मीयता भी है। बेशक जिससे मुलाकात की गई हो, वह आपसे पद, उम्र, धन या सामाजिक स्तर पर आप से कम ही क्यों न हो।

**2. अच्छे श्रोता बने:** दूसरों की बात सुनना बहुत बड़ा गुण है। सिर्फ अपनी ही बातें कहना और दूसरों की न सुनना गलत है। हो सकता है, सामने वाला जो कुछ कह रहा हो, उसका आपके लिये कोई महत्त्व न हो। फिर भी उसकी बात को रूचि लेकर सुनें । उस से ऐसे मजेदार ढंग से सवाल पूंछे, जिनका जबाब देने में मजा आये।

**3. दूसरों की तारीफ करने का कोई मौका न गंवाएँ:** दूसरों की प्रशंसा करने का गुण प्रायः लोगों में नहीं होता। लोग दूसरों के कपड़े, पद, सुंदरता, वैभव आदि से कुढ़ते हैं। मौका लगते ही पीठ पीछे निंदा-बुराई करना शुरु कर देते हैं । सोचिये, उससे सामने वाले पर क्या फर्क पड़ता है ? यदि आप उसके सामने उसकी प्रशंसा करते हैं , तो वह खुश होता है प्रशंसा एक कला है। दूसरों की प्रशंसा इस ढंग से करें कि उसे लगे कि वाकई प्रशंसा की जा रही है, झूठी तारीफ नहीं की जा रही। सामने वाले व्यक्ति के कपड़े, पद, चाल-ढाल, व्यक्तित्व, धन आदि की उचित प्रशंसा करें।

**4. निंदा-आलोचन से बचे:** स्वयं आपमें भी तमाम ऐसी कमजोरियां या अवगुण हो सकते है, जिनकी आलोचना-निंदा की जा सकती है। इसलिये जहां तक संभव हो सके किसी के भी सामने अथवा पीठ पीछे भी दूसरों की निंदा-आलोचना से बचें।

**5. उपहारों के आदान-प्रदान को अपने स्वभाव का एक अंग बनाएं:** उपहार दें, यदि आप कीमती उपहार नहीं दे सकते, तो कार्डों से काम चलाएं नववर्ष, तीज-त्यौहार, होली-दीवाली पर अपने मित्रों, परिचितों, ग्राहकों को उपहार जरूर दें। याद रखें, एक मामूली सा कार्ड भी आत्मीयता बढ़ाता हैं सामने वाले को यह महसूस होता है कि आपने उसे याद किया, उसका सम्मान बढ़ाया। उपहार अपने मूल्य से नहीं, देने वाले की भावना से कीमती हो

जाता है।

**6. दूसरों के बच्चों को प्यार करें**: सभी को अपने बच्चे प्यारे होते हैं। यदि आप दूसरों के बच्चों से प्यार से बोलते है या दुलारते हैं तो बच्चों के माता-पिता की नजर में आप ज्यादा आत्मीय हो जाते हैं। विशेष तौर पर छोटे बच्चों से तो ज्यादा आत्मीयता दिखाने की आवश्यकता होती है। दो-एक चुटकुले , छोटी-मोटी कहानी, छोटा-मोटा खिलौना या उपहार देकर आप दूसरों के बच्चों से प्यार बढ़ाएँ।

**7. वातावरण अनुसार व्यवहार**: आपसी बात चीत का मसला चाहे जितना गंभीर हो उसे बहुत हल्के-फुल्के ढंग से, हंसते-मुस्कुराते कहें बताएं। यदि किसी के यहां शोक प्रकट करने जाना हो, तो वातावरण में गंभीरता रखें। वहां स्वयं को मददगार और सहयोगी के रूप में पेश करें।

**8. अपने घर में छोटी-छोटी पार्टियां देते रहें**: स्वयं भी दूसरों के यहां आते जाते रहें । पार्टी देने के बहुत से माध्यम हैं। आपका जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ, बच्चों के जन्मदिन, तीज-त्यौहार, बच्चों के नौकरी व्यवसाय की तरक्की वगैराह। इन सब उपायों का असली मकसद है। मित्रों परिचितों में निरंतर आत्मीयता बनायें रखना।

**त्रुटि होने पर क्षमा मांगे**: अपनी किसी भी भूल, त्रुटि या गलती के लिये क्षमा मांगने में कभी भी शर्मिंदगी महसूस न करें। गलती को स्वीकार न करना और बड़ी गलती है। दूसरों से क्षमा मांगना महानता का ही लक्षण है। इससे व्यक्ति अगली गलती से बचता है और पिछली का परिमार्जन करता है। याद रहे, संसार में ऐसा व्यक्ति कोई नहीं हुआ, जिससे गलतियां न हुई हों।

**सदा मुस्कुराते रहें**: अपने निजी मित्रों, पत्नी या पति के अलावा हर किसी के सामने अपना रोना न रोएं। दुनिया में हर व्यक्ति किसी न किसी समस्या या उलझन में है, आपकी निजी समस्या में किसी की भी कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती। इसलिये अपनी नितांत निजी समस्या को कभी भी सार्वजनिक चर्चा का विषय न बनने दें।

**बेबजह टोका टाकी से बचें**: प्रायः हम अपनों को छोटी छोटी बात पर टोक देते हैं। जबकि कोई दूसरा हमें टोक दे तो बुरा लगता है। आप इन छोटी-छोटी बातों को पहचाने तथा अपनी जीवन चर्या से बेहतर इंसान बने।





# कैल्केरिया फ्लुओटिका तन मन स्वस्थ रखे हर दम

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

इसे फ्लोर स्पार, फलोराईड ऑफ लाईम (CaF2) जो प्रकृति में फ्लोर स्पार खनिज के रूप में पाया जाता हैं इसमें 58.21 कैल्शियम विद्यमान रहता है इसका शरीर में प्रमुख रूप से 12 तत्वों में प्रमुख स्थान है। यह हड्डियों के ऊपरी स्तर अस्थि मात्र (Bonelarty), दन्त मात्र (Teeth Cavity) चमड़ी की ऊपरी परत, लचकदार तन्तु, त्वचा, संयोजक, तन्तुओं धमनी और शिराओं की दीवारों में पायी जाती है।

कार्य- 1. यह शरीर के लचकदार तन्तुओं (Elastic Tissue) की स्वाभाविक गतिविधियों को बनाये रखता हैं जिससे शरीर दुरुस्त लचिला व गतिशील बना रहता है।

2. दातों मसूड़ों का पोषण करता है व दांतों का क्षरण, संवेदन शीलता व मसूड़ों को रोग मुक्त बनाये रखता है।

3. जोड़ों में स्नेह तरह द्रव्य बनाये रखता है जिससे जोड़ों की सूजन, जोड़ों में कड़कड़ाहट की आवाज, चलने में घुटनों के दर्द नहीं होता हैं।

4. त्वचा में दरारें फटना, चमड़ी सख्त व मोटी होने से रोकता है।

5. शिराओं का फैल जाना (वैरिकोज वेन्स) शिराओं की निष्क्रियता, हृदय की अस्वाभाविक रूप बढ़ जाने को रोकता है।

6. हड्डियों में चोट लगने के बाद बना फोड़ा व सख्त गांठदार उभार हड्डी की अतिरिक्त वृद्धि को रोकता है।

**कमी-** 1. इसके परमाणुओं के संतुलन बिगड़ जाने से लचकदार तन्तुओं में शिथिलता आने के कारण उस जगह ठोस निर्यास का शोषण नहीं होने से वहाँ सख्ती आ जाने से जैसे शिराओं का फैल जाना, शिराओं की निष्क्रियता, रसौली ग्रंथियों की सख्ती, हड्डियों में चोट लगने के बाद बना फोडा सख्त गाँठदार उभार, हड्डियों का बढ़ जाना आदि, स्तनों की कड़ी गांठे।

2. चमड़ी के उपरी परत के काषों से किराटिन पदार्थ निकलता है जो सूखकर खुररड़ बन जाने से त्वचा कट जाना, फट जाना, दरार पड़ जाना, त्वचा की परत मोटी हो जाना।

3. मोतियाबिन्द, बच्चें के दांत-देर से निकलना व दांतों की सफेदी खुरदरी, दांतों का हिलना, ढीले पड़ जाना, पायरिया रोग, गर्भाशय का जरायु भ्रंशा, घुटने के जोड़ों का प्रदाह व जोड़ों की स्नेह झिल्ली का प्रदाह व कड़कड़ाहट होना आदि।

**उपचार-** कठोर पत्थर जैसी ग्रंथियाँ, स्तन की कठोर गांठे, हड्डियों में चोट लगने के बाद बना सख्त फोड़ा या गांठ, हड्डी की अतिरिक्त वृद्धि एक्सोस्टोसिस मौजूद हड्डी पर हड्डी की अतिरिक्त वृद्धि की प्रमुख दवा है। पुरुष जल वृषण (Hydrocele) की कठोरता, हड्डियों के कुपोषण के उपचार में शक्तिशाली औषधि है।

2. यह शिराओं के फैलाव तथा शिरावृद्धि (Vericose) वेरीकोज, वाहिकाबूर्दो (Vasculav Tumor) नखव्रश, भगंदर (Fistula) मलद्वार के पास नासूर खूनी व वादी बवासीर।

3. दांतों और मसूड़ों पर अद्‌भुत तरीके से काम करता है, दांतों पर इनेमल की कमी होने व इनेमल चढ़ा देता है, दांतों के दर्द, दांतों में पायरिया रोग, मसूड़ों में सूजन ठीक करता है, दांत ढीले पड़ जाना, दांतों का टेडा मेडा हो जाना।

4. घुटने के जोड़ (Membrance) की पुराना सूजन का प्रदाह (Synovitis) जोड़ों की स्नेह झिल्ली (Synovial) का पुराना प्रदाह, जोड़ों में कड़कड़ाहट होना, बढ़ा यूरिका एसिड।

5. टांसिल बढ़ना, मोतियाबिन्द, गलगण्ड (Gaotre) हड्डी का ट्यूमर, जबडे की हड्डी की सूजन।

6. हृदय का आयतन बढ़ जाना, हृदय कम्पन, हृदय की हृदयवरक झिल्ली (Endocorde 4m) के ऊपर जमें खराब तन्तु हटाकर स्वाभाविक अवस्था प्रदान करता है।

धमनी काठिन्य (Arterio Sclerosis) धमनी अबुर्द, रक्त वहा-नाडी के प्रसारण की अवस्था के उपचार में उपयोगी है।

विशेष- 1. गर्भ काल में इसके सेवन से प्रसव आसानी से होता है जो प्रसव वेदना सुकड़ाव के कारण आती हो।

2. महिलाओं में अधिक रजस्त्राव की अवस्था में जरायू की संकोचन शक्ति बढ़ा देने की बहुत विख्यात औषधि है। बार-बार गर्भपात होने (F12) प्रयोग लाभदायक है।

3. इसका विशेष गुण यह है कि जहाँ कहीं भी सख्ती होना, कड़ापन होना, गांठ बन जाये, हड्डी उभर आये-चाहे मांसपेशी में हो या अन्य कहीं भी हो, उसे आश्चर्य जनक तौर पर घोल कर ठीक कर देती है।

4. जबड़े की हड्डी सड़ जाना, स्त्रियों के स्तनो की कड़ी ग्रंथिया को ठीक कर देती है।

कैल्केरिया फ्लुओरिक तत्व का संतुलन सिर से पैर तक शरीर को संपूर्ण शारीरिक व मानसिक करके हर दम स्वस्थ बनाये रखता है।

## हास्य तरंग

1. पत्नी (पति से) सुनते हो घर पर लड़की जवान हो गई है, पर तुम्हें शादी की चिन्ता नहीं है। पति मुझे तुमसे ज्यादा चिन्ता है पर कोई अच्छा लड़का तो मिले। पत्नी-अगर मेरे पापा भी यही सोचते तो आप भी अभी तक कुंवारे ही रहते।

2. दिपावली की साफ सफाई करने में नौकर से कीमती सामान गिर जाने से टूट गया। मालकिन ने डांटते हुये कहा यदि ऐसी गलती दुबारा की तो मार-मार कर गंजा कर दूंगी। नौकर डरते हुये अचानक से जोर-जोर से हंसने लगा। मालकिन ने पूंछा क्यों हंस रहे हो ? नौकर-मालिक को देखकर समझ गया।

3. कपड़े के बड़े व्यापारी ससुर से नये दामाद ने कहाँ आपकी बेटी में इतनी बुराईयां है कि आपको क्या बताऊँ। ससुर में जानता हूँ पर बेटे तेरे पास तो पीस है, मेरे पास तो पूरा थान है।

4. भावित रोता हुआ घर आया। मां ने पूछा क्या हुआ बेटा ? पापा के साथ बाईक पर आ रहा था कि अचानक बाईक फिसल गई हम नाली में गिर पड़े। तो इसमें रोने की क्या बात है, मैं होती तो हंसती, भावित मैं भी हँसा था।

5. डॉक्टर- बुखार से पीड़ित मरीज की जांच करते हुये कहते हैं लम्बी सांस लो तीन बार सात बोलो। घबड़ाया हुआ मरीज लम्बी सांस लेकर कहता है इक्कीस।

**संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर**

## पाक कला

# जैन पनीर मसाला

सामग्री- तेल 1 चम्मच, इलायची 2, धन्ने पत्ता-10, टमाटर-2, नमक 1/2 चम्मच, मिर्च पावडर 1/2 चम्मच, धनिया पावडर 1/2 चम्मच, काजू 10 नग

बनाने की विधि- ऊपर के सभी पदार्थ 10 मिनिट तक मिक्स करके गरम करना, और हल्के से चम्मच फेरना, कुछ देर उसे थंडा होने दें, उस सबको मिक्सर में डालकर पानी मिलाये और मिक्सर से पीसे।

फिर दो चम्मच घी, सुखी मिर्च आवश्यकतानुसार घी में डाले और थोड़ा गरम कर निकाले, फिर उसी घी में जीरा 1/2 चममच हींग, 1/2 चम्मच मिर्च पावडर आवश्यकतानुसार छोटे भाप पर गरम करें, और उसमें मिक्सर में पिसा हुआ पेस्ट डाले और उसे 5 मिनिट तक गरम करें, और उसमें चम्मच घुमाते रहे फिर उसी कढ़ाई में 1 चम्मच शक्कर डाले और उसे 5 मिनिट तक ढंककर पकाये। फिर 1/2 चम्मच गरम मसाला डाले और 200 ग्राम पनीर डाले और उसमें शिमला मिर्च डाले। पनीर डालने के उपरांत 2 मिनीट तक पकाये और गरम-गरम सर्व करें।

बाल कहानी

# भंडा फोड सजिश का

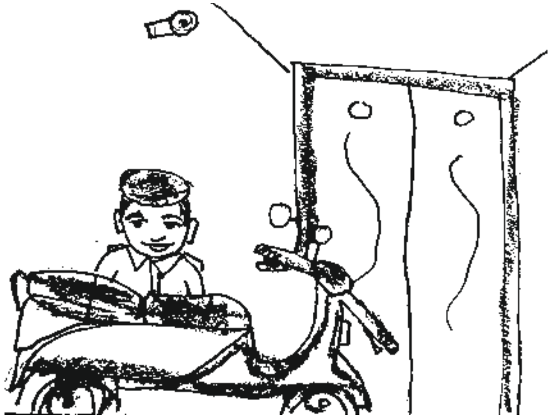

उत्तरप्रदेश के बागपत में आलोक त्यागी नाम का शिक्षक रहता था। उसके पिता जी और दादा जी शिक्षक पद पर अपनी सेवाएँ दे चुके थे। आलोक त्यागी किसी भी परिस्थिति से समझौता नहीं करते थे। उनसे सभी लोग बात करने से डरते थे । आलोक ट्यूसन व कोचिंग की संस्कृति से बहुत नफरत करते थे। अतिरिक्त कक्षा निःशुल्क रूप से आलोक पढ़ाते थे उनके पढ़ाने की कुछ शैली ही ऐसी थी कि बच्चे दौड़-दौड़ कर उनकी कक्षा में पढ़ने आते थे जिससे आलोक की ख्याति पूरे बागपत में बढ़ती जा रही थी।

आलोक के मित्रों ने उसे समझाया था कि आलोक तेरे दुश्मन और ईर्ष्या करने वाले बढ़ते चले जा रहे है। अभी भी मौका है तूँ अपनी अतिरिक्त कक्षा बंद कर दे अन्य था किसी भी दिन तूँ किसी भी साजिश का शिकार हो सकता है। आलोक ने अपने हाथ से अपनी पीठ ठोक ली और कहा शाबास आलोक तेरे अंदर कोई योग्यता अवश्य आ गई है। जब कोई तुम से ईर्ष्या करने लगे तब तुम तय कर लेना कि तेरे अंदर कोई योग्यता गुणवत्ता जरूर पैदा हो चुकी है।

1 अक्टूबर की शाम को आलोक अपने भाषण तैयार करने में व्यस्त था कि तभी किसी ने उसका दरवाजा खटखटाया आलोक जब दरवाजा खोला तो पुलिस को अधिकारी उसके घर आये उनके बैठने के लिये कुर्सी लेने अंदर गया था कि एक पुलिस मेन ने आलोक की बाईक में तमंचा रख दिया और चालाकी से आकर खड़ा हो गया।

पुलिस अधिकारी आलोक के घर तलाशी लेने लगे इधर उधर की तलाशी लेने के बाद वे बाईक का पहुँचे डिग्गी खोली उसमें से तमंचा निकाल लिया आलोक दिखकर कहा आलोक जी आप पर अवैध हथियार रखने का मामला बनता है और आपको गिरफ्तार किया जाता है।

आलोक कहता है यह तो साजिश है उसकी बहिन संगीता त्यागी ने सी.सी.टी.वी कैमरे खंगाला। शुरु किया तो उसने पाया कि पुलिस के आदमी ने ही डिग्गी मे तमंचा रखा संगीता ने मीडिया तक यह तथ्य भेजा तो बागपत के पुलिस विभाग की काली करतूर सबके उजागर हो गई और साजिश भंडा फोड़ हो गया।





संस्कार गीत

# हिम्मत मेरी

हिम्मत मेरी दुआ है तेरी
गुरुवर सदा ही सफलता पायें
शिरपुर पारस की महिमा निराली
दुनिया को प्रभु की गरिमा बतायें

1.
अंतरीक्ष पारस शिरपुर के वासी
अब तो मिटा दो सबकी उदासी
जागें दिगम्बर अतिशय पिछानें
लागे लगन प्रभु तब तीर्थ खासी
खुद भी जगें हम सबको जगाये
तीरर्थ बचाने सब आगे आयें

2.
न चित् चैन पाये निद्रा न आये
ऐसी लगन प्रभु दिल में लगी है
ताला खुले कब प्रभु दर्श पाऊँ
मन की यह आशा हर पल जगी है
विद्यासागर ने हुंकार भर दी
हम एक जुट हों तीरथ बचायें

बाल कविता

# चाहत

सुनो लंगौटी की चाहत में
बने परिग्रही कुछ राहत में

1.
वस्त्र पात का पक्ष बनाया
मोक्षमार्ग का पक्ष भुलाया
सब सुविधाओं की चाहत में

2.
ग्रंथ प्रसंग भुलाये सारे
सत्य अहिंसा के शुभ नारे
धर्म गंवाया नाहक में

3.
हिंसा मूलक मात्र परिग्रह
पापों से होता हैं संग्रह
बाधा हर पल साधक में

## समाचार

### दीक्षायें सम्पन्न

**नागपुर (महाराष्ट्र)-** मुनि श्री आचरण सागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. पुष्पा जी को क्षुल्लिक दीक्षा श्री दिगम्बर जैन मंदिर नागपुर महाराष्ट्र में 10 अक्टूबर 2024 दी गई जिनका नाम क्षुल्लिका आराधनाश्री माताजी रखा गया।

**झांसी-** आचार्य श्री विशदसागर महाराज जी के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन मंदिर झांसी (उ.प्र.) में मुकेश जैन दिल्ली वालों को मुनि दीक्षा 11 अक्टूबर 2024 दी गई जिनका नाम मुनि श्री विलक्ष्यसागर महाराज जी रखा गया।

**पारसोला (महाराष्ट्र)-** आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज जी के करकमलों से श्री प्रेमचंद जी जैन नैनवा जयपुर को 74 वर्ष की उम्र में मुनि दीक्षा 21 अक्टूबर 2024 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर पारसोला महाराष्ट्र में दी गई जिनका नाम मुनि श्री विभर्जितसागर महाराज जी रखा गया।

**किशनगढ़ (राजस्थान)-** आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन मंदिर किशनगढ़ राजस्थान में 13 अक्टूबर 2024 को क्षुल्लक सुकल्पसागर जी महाराज, ब्र. रतनलाल सोनी बिजोलिया, ब्र. पन्नालाल जैन मोजमाबाद (उ.प्र.), ब्र. रजनीकांत भयंदर मुंबई, ब्र. ललिता देवी जयपुर राजस्थान को दीक्षायें दी गई। जिनके नाम क्रमशः एलक श्री शान्तनुसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री सुरतनसागरजी, क्षुल्लक श्री सुपुण्यसागर जी, क्षुल्लक सुकांतसागरजी, क्षुल्लिका अलिप्तमति माताजी नाम रखा गया।

**सम्मेदशिखर जी-** आचार्य श्री विहर्षसागर जी महाराज के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र तेरापंथी कोठी मधुवन सम्मेदशिखर जी जिला गिरिडीह झारखंड में 12 अक्टूबर 2024 दशहरा के दिन क्षुल्लक श्री निर्भीकसागरजी, क्षुल्लक श्री सुतपसागरजी महाराज, ब्र. रितिक भैया भिण्ड, ब्र. संजय भैया बेरसिया, हरीश जी इंदौर, नीतू दीदी बीना, प्रियंका दीदी भिंड, शोभा दीदी गुडगांव, सुनीता दीदी भिंड, ब्र. राहुल भैया ग्वालियर, सुनील सेठी इंदौर, सूरजमल जी भिंड,चंपा देवी शिखरजी, भगवान देवी शिखरजी आदि को दीक्षायें दी गई जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री सुहर्षसागरजी महाराज, ुनि श्री श्रवणहर्षसागरजी महाराज, मुनि श्री सर्वहर्षसागरजी महाराज, मुनि श्री सिद्धहर्षसागरजी महाराज, मुनि श्री शिखरहर्षसागरजी महाराज, आर्यिका विजयहर्ष श्री माताजी, आर्यिका मौलिहर्ष श्री माताजी, आर्यिका निधीहर्ष श्री माताजी, आर्यिका अमृतहर्ष श्री माताजी, एलक श्री नमनहर्षसागर जी महाराज, क्षुल्लक बोधिहर्षसागर जी महाराज, क्षुल्लक कृपाहर्षसागरजी महाराज, क्षुल्लिका बिधुहर्ष श्री माताजी, क्षुल्लिका गोडहर्ष श्री माताजी नाम रखा गया।





**सम्मेदशिखर जी-** गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र तेरापंथी कोठी मधुवन सम्मेदशिखर जी जिला गिरिडीह झारखंड में 12 अक्टूबर 2024 दशहरा के दिन क्षुल्लिका सुईश्वरमति माताजी को आर्यिका दीक्षा दी गई जिनका नाम आर्यिका श्री सिद्धांतमति माताजी नाम रखा गया।

### समाधिमरण

**नागपुर महाराष्ट्र-** मुनि श्री आचरण सागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर नागपुर महाराष्ट्र में 10 अक्टूबर 2024 को क्षुल्लिका आराधनाश्री माताजी समाधिमरण हुआ।

**राजा बाजार दिल्ली-** श्री दिगम्बर जैन मंदिर राजा बाजार दिल्ली में आर्यिका श्री चंद्रमति माताजी का समाधिमरण 18 अक्टूबर 2024 को मुनि श्री जयकीर्तिसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में हुआ।

**जबलपुर-** श्री दिगम्बर जैन मंदिर संगम कॉलोनी जबलपुर में निर्यापक श्रमण मुनि श्री प्रसादसागरजी महाराज, मुनि श्री पद्मसागरजी महाराज, मुनि श्री शीतलसागर महाराज के सान्निध्य में 94 वर्षीय प्रतिमाधारी वैद्यराज ज्ञानचंद जैन का समाधिमरण 25 सितम्बर 2024 को प्रातः 6 बजे णमोकार मंत्र पढ़ते हुये हुआ।

### लघु पंचकल्याणक सम्पन्न

**रहली-** श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पटनागंज रहली में निर्यापक श्रमण मुनि श्री योगसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 14 अक्टूबर से 17 अक्टूबर 2024 को श्री बड़े बाबा श्री महावीर स्वामी तथा अन्य लगभग 80 प्रतिमाओं का लघु पंचकल्याणक ब्र. विनय भैया बण्डा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। दिनांक 18 अक्टूबर से 03 नवम्बर तक महस्तकाभिषेक हुआ। जिसमें 21 अक्टूबर को शांतिधारा एवं महामस्तकाभिषेक करने का सौभाग्य रहली नगर के गौरव बाल ब्र. जिनेश मलैया तथा राजकुमार जैन पुष्प इंदौर को प्राप्त हुआ।

### विद्यासागर द्वार एवं संस्कार सागर द्वार का शिलान्यास

**इन्दौर-** श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इंदौर में मेट्रो टॉवर के बाजू में विद्यासागर द्वार तथा ए-3 के बाजू में संस्कार सागर का शिलान्यास मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज, मुनि श्री निर्वेगसागर जी महाराज, मुनि श्री संधानसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 07 नवम्बर से 17 नवम्बर तक हो रहे सिद्धचक्र महामंडल विधान के बीच में किया जायेगा।

### महामस्काभिषेक

**इंदौर-** श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर के पंचकल्याणक के अवसर पर पार्श्वनाथ वेदी एवं पंचबालयति वेदी महामस्काभिषेक मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज, मुनि श्री निर्वेगसागर जी महाराज, मुनि श्री संधानसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 07 नवम्बर से 17 नवम्बर तक हो रहे सिद्धचक्र महामंडल विधान के बीच में किया जायेगा।

## वर्ग पहेली 301

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | | 3 | ■ | 4 | 5 | | 6 |
| 7 | | ■ | | ■ | 8 | | ■ | |
| | ■ | 9 | | 10 | ■ | 11 | 12 | |
| 13 | 14 | | ■ | 15 | | ■ | | ■ |
| ■ | | ■ | 16 | ■ | 17 | | | ■ |
| 18 | | ■ | 19 | 20 | ■ | ■ | 21 | 22 |
| | ■ | 23 | | | ■ | 24 | ■ | |
| 25 | 26 | | ■ | ■ | 27 | | ■ | |
| ■ | | ■ | 28 | | | | ■ | |

**बाये से दाये**

1. समय सीमा में पाप रहित समतायुक्त धार्मिक क्रिया -4
4. नमूना, सेम्पल -4
7. प्रिय स्त्री, स्त्री, -2
8. आघात चोट -2
9. नीच, गिरा हुआ, पतित -3
11. सर्पणी, -3
13. हारना -3
15. नष्ट हुआ -2
17. स्वेद -3
18. स्वीकार करना, कल्पना करना -2
19. गैल सांड नंदीश्वर -2
21. मनु की पत्नि, रमण का भाव -2
23. ब्रिटेन की राजधानी -3
25. खुशबू युक्त, सुगंध भरा -3
28. श्रमण साधना का अंतिम आवश्यक काया का त्याग -4

**ऊपर से नीचे**

1. उ.प्र. का बौद्ध जैन तीर्थ श्रेयाननाथ की जन्म भूमि -4
2. माँ का भाई -2
3. लेखनी तूलिका -3
4. प्रमाण करण की क्रिया, प्रमाण साधन -2
5. पार होना, पानी के ऊपर रहना -3
6. आँख, नेत्र, चक्षु -3
9. प्राप्त करना हासिल करना -2
10. राक्षस दैत्य दानव -2
12. नेमिनाथ निर्वाण पर्वत -4
14. दया, कृपा -3
16. हर्ष, खुशी -3
20. लाचार -2
22. नर्मदा का वह घाट जहाँ प्रतिभास्थली हो -4
24. विसर्जन का भाव संस्कृत का एक वर्ण -3
26. मुस्लिम धर्म की तीर्थ यात्रा -2
27. वछड़ा गाय का बच्चा -2

## वर्ग पहेली 300 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 क | 2 मं | ड | 3 ल | ■ | 4 का | 5 रा | ■ | 6 दी |
| 7 प | ग | ■ | 8 ह | म | रा | ही | ■ | पा |
| 9 ल | ल | 10 का | र | ■ | गा | ■ | 11 र | व |
| ■ | ■ | कं | ■ | 12 भा | र | 13 त | ■ | ली |
| 14 रा | ज | दी | प | ■ | ■ | 15 रा | 16 म | ■ |
| ज | ■ | ■ | ■ | 17 सः | ■ | 18 व | स | न |
| 19 गृ | ह | 20 प | 21 ति | ■ | 22 ल | ट | ■ | स |
| ही | ■ | 23 ति | ह | 24 मि | ल | ■ | 25 थ | ■ |
| ■ | 26 ख | त | ■ | 27 त | ट | ■ | 28 ली | ख |

.............................................................................................सदस्यता क्र. ..............................

पता : ...................................................................................................................

.......................................................................................................................




समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

पूजन करले पुण्य कमाले

**नियम**

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

**पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें**

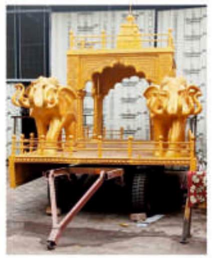

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 28/10/2024, पोस्टिंग दिनांक : 03/11/2024
।।श्री पार्श्वनाथाय नमः।।
इंदौर नगर के इतिहास में प्रथम बार
बीजाक्षर मंडल रचनायुक्त मूल संस्कृत में निबद्ध
108 मंडलीय
सिद्धचक्र
महामंडल विधान एवं
रथावर्तन महोत्सव
7-15 नवंबर 2024
विजय नगर चौराहा, इंदौर
विधानाचार्य : बा. ब्र. अशोक भैया जी, बा. ब्र.अभय भैया जी
गुणायतन का राष्ट्रीय
महाअधिवेशन
शनिवार, 16 नवंबर 2024
भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह
रविवार, 17 नवंबर 2024
अद्भुत होगा नजारा
108 भव्य वेदियों में 108 प्रतिमाओं के सामने
108 विशाल मंडल एवं
108 विशेष आकर्षक रथों
द्वारा रथावर्तन महोत्सव
गुणायतन
आयोजक/निवेदक - धर्म प्रभावना समिति, सकल जैन समाज, इंदौर
99073 81245, 96301 27559, 77393 96148
संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008